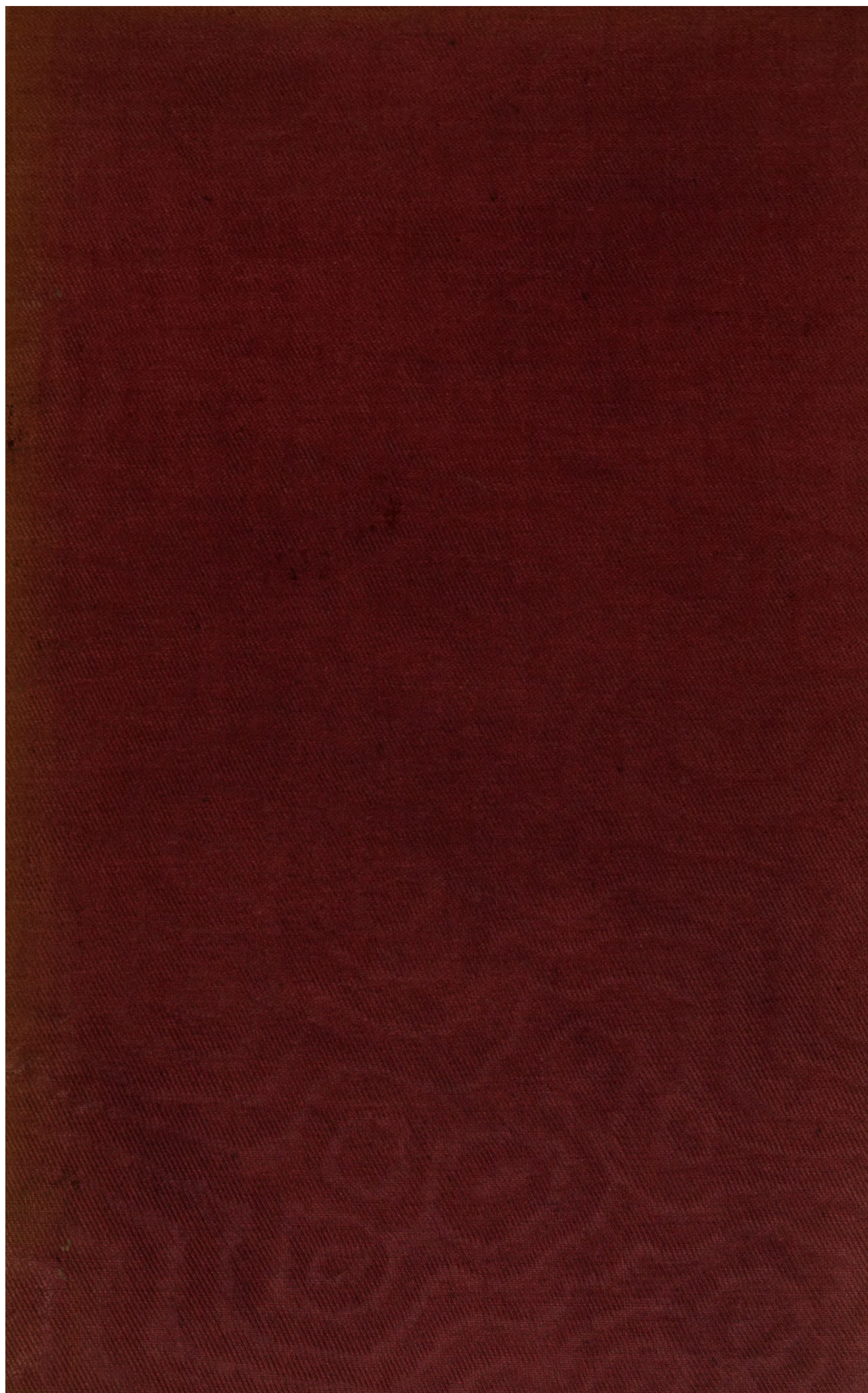
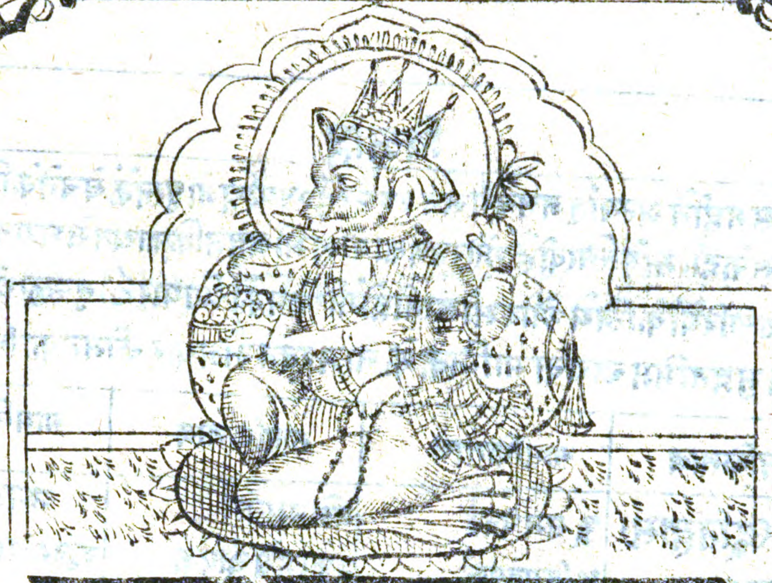


Ananda Raghunandana nāṭaka.



आनन्द रघुनन्दन नाटक

آنند رگھونندن ناٹک

Aunund Rughonundan Notuk

श्रीमन्महाराजाधिराज श्री ५ बांधवेश विश्वनाथ सिंह स्वर्ग बासी कृत

जिसमें

संस्कृत प्राकृत देव नागरी गद्य पद्य इत्यादि अनेक भांतिकी भाषा-ओं में श्री राम चरित्रान्तर्गत मुनि जन शिरोमणि ब्रह्मर्षि विश्वामित्र जी महाराज की मख रक्षा से श्री परब्रह्म परमेश्वर दशरथ कुमार राम चन्द्रजी महाराज के सिंहासन पर विराजमान होने पर्यन्त का वृत्तान्त नट नाट्य कला सहित उत्तमोत्तम ललित नाटक भाषा

सात अङ्कों में वर्णित है

पहली बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापे खाने में छपा

जनवरी सन् १८८१ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् जनवरी सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेज कर कीमत का निर्णय करलें।

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	३ वन पर्व्व	मये तसवीर	काव्य
महा भारत	४ विराट पर्व्व	तथा मये क्षेपक	सूर सागर
१ हिस्सा में आदिपर्व्व,	५ उद्योग पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	कृष्ण सागर
सभा पर्व्व, वन पर्व्व,	६ भीष्म पर्व्व	के सातों काण्ड	विश्राम सागर
२ हिस्सा में विराट पर्व्व,	७ द्रोण पर्व्व	१ बाल काण्ड	प्रेम सागर
उद्योग पर्व्व, भीष्म पर्व्व,	८ कर्ण पर्व्व	२ अयोध्या काण्ड	कृष्ण प्रिया
द्रोण पर्व्व,	९ शल्य पर्व्व-गदा व	३ आरण्य काण्ड	विजय मुक्तावली
३ हिस्सा में कर्ण पर्व्व,	सौप्तिक पर्व्व मये यो-	४ किष्किन्धा काण्ड	अनेकार्थ
शल्य पर्व्व, गदा पर्व्व,	शिक व विशोक व स्त्री	५ सुन्दर काण्ड	छन्दोर्णव पिंगल
सौप्तिक पर्व्व, योशिक प-	पर्व्व	६ लंका काण्ड	कवि कुल कल्पतरु
र्व्व, विशोक पर्व्व, स्त्री प-	१० शांति पर्व्व-राज	७ उत्तर काण्ड	रस राज
र्व्व, शांति पर्व्व में, राज	धर्म्म व आपद्धर्म्म व	रामायण शब्दार्थकोष	सत्सई सटीक
धर्म्म, आपद धर्म्म, मोक्ष	मोक्ष धर्म्म व दान धर्म्म	रामायण का इतिहास	सत्सई
धर्म्म,	११ अश्वमेध आश्रम	रामायण मानस दीपिका	सभा विलास
४ हिस्सा में, शांति पर्व्व,	वासक मुशल पर्व्व	रामायण कवितावली	तुलसी शब्दार्थ
दान धर्म्म-अश्वमेध,	महाप्रस्थान स्वर्गारोहन	रामायण गीतावली	भजनावली
आश्रम वासक पर्व्व व	१२ हरिवंश पर्व्व	रामायण गीतावली स-	प्रेम रत्न
मोसल पर्व्व व महा प्र-	रामायण रास विलास	विनय पत्रिका बा-मो	युगुल विलास
स्थान स्वर्गारोहन पर्व्व,	रामायण तुलसी कृत	विनय पत्रिका बा-शि	चित्र चन्द्रिका
व हरि वंश पर्व्व,	रामायण सटीक मये मा-	पुराण	बारहमासा बलदेव प्र-
महा भारत पर्व्व पर्व्व	नस दीपिका कोश आदि	देवी भागवत	मनोहर लहरी
अलेहदा भी हैं	तथा मये तसवीर सटीक	वेदान्त	गंगा लहरी
१ आदि पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	योग वाशिष्ठ	यमुना लहरी
२ सभा पर्व्व	तथा मोट अक्षरों की-	प्रबोध चंद्रोदय नाटक	जगद् विनोद

श्रीगणेशायनमः ॥

अथआनन्दरघुनन्दनम्नामनाटक ॥

छंद शिखा। अशरणशरणशरणदशमुखमुख दलनदलनदलि दलि है। अकरमकरनकरतधनुशरप्रण उधरतरनचलि चलि है ॥ सदयनसदयसदय सदकरकर जनन जनन पर रति है । जसजगजगतगनतनतगुणगणगणप अहिपपशुपति है ॥ १ ॥ मृदुपदुपदुममदुममहिपनमनअलिअलिरहि रमिरमि है । चपचलचलनिकरतिबरबसबससुबयबयनअमिअमि है ॥ अतिमदमदन मदममरदनसर सरसतरसपतितन है । जयजयजपतबिबुध बुधछनछन ममपतिपतित्रिभुवन है ॥ २ ॥

नांद्यंतेसूत्रधारः । अरे मारिष मोंको राजकुवंर को नाट्य करिबे की आज्ञा भई ऐसे समय जो सहायक तैं मिल्यो तो बड़ो काज भयो ॥

मारिषः । अरे बड़े बड़े नाट्य वाले ह्यां नाट्य करि गये हैं हमारो नाट्य कब काहू को नीको लगि है ॥

सूत्रधारोविस्मितः (क्षण मनुध्याय अकाशे करनं दत्वा) कहा कहियतु है ॥

पुनःप्रहस्य । वाहवा, वाहवा, महाआनन्द महाआनन्द मम प्रसाद आकसमात तोको अनुपम नाटक मिलैगो ऐसी बानी की बानी सुनी परै है ॥

पारिपार्श्वकप्रवेशः । अरे सूत्रधार परम उदार राज कुमार आगे बहु प्रकार बिस्तार करु के कै राजद्वार वार अवतार पुत्र उत्साह मो जो हम तुम करो हुतो ॥

सूत्रधारः । अरे पारिपार्श्वक ऐसो कौन नाट्य है जौन इहां नहीं भई (पारिपार्श्व को बिस्मितः)

सूत्रधारः । येरे कहा मति अकुलानी तेरी तैं नहीं सुनी को मोको

बानी की बानी भई है की ताकों ममप्रसाद आकस्मात अनुपम नाटक मिलैगो ॥ इति प्रस्तावना ।

प्रविश्यभाव: । त्रिकालज्ञादिकवे: पत्रिकेयम् ॥

सूत्रधार: (प्रणम्य गृहीत्वा वाचयति)

भजन बहुबिधिआशिर्षाशिसष्यहमारी ।
हैहुतकुशलकुशलतुवचाहैं हौवैनिरमलबुद्धितिहारी ॥ १ ॥
दिगसिरअघभूभूरि भारभव बदनबिधाता बिनयकराई ।
अवउदार अवतारपरमप्रभु लेहैपुहुमिपरममुददाई ॥ २ ॥
ताकेगुनगनभरितचरितमय काव्यसंस्कृतरचीअगारी ।
नाट्यकरनपरिहैप्रभुआगे पेखतह्वैहैंतिजसुखारी ॥ ३ ॥
श्रीजैसिंहभुवालबिधिपति सुतबिसुनाथसिंहजोहनाऊं ।
सोनाटकआनंदरघुनंदन भाषारचिहैआउपढ़ाऊं ॥ ४ ॥

(अरे भाव) वाहवा, वाहवा ऐसे समय भली चीठी दई ॥

इतिनि:क्रांत: (तत: प्रविशंतिशिष्या:)

शिष्य: । पूजन की तयारी करो देखो नहींता गुरु चले आवें है ॥

कवित्त । केतेशिष्यसाथमें कमंडललियेहैंहाथ दीन्हेंउर्द्धपुंडहै सबिंदु वरमाथमें । सोहत जटाबिशाल कंठकंठी उरमाल पहिरेकोपीन आल धोई गंगपाथमें ॥ तुलसीके भूषनकियेहै कलअंगअंग लालरंग नैनछके प्रेमहरिकेगाथमें । गजगतिआवैं मतिहरिके चरित्रनमें औनवेदपाठमन विस्वनाथनाथमें ॥ १ ॥ प्रविश्यसमित्पाणि ।

सूत्रधार । भो गुरो दंडवत् प्रणाम ॥

गुरु । बत्स चिरंजीव ॥

(सूत्रधार:) गद्य । प्रभुपत्रिकापाई शीसचढ़ाई आपु कृपा महाई । निजभाग्यअधिकाई मेरीमतिपरममुदछाई सुकृतफलधरीअबआई ऐसोजानि प्रभुपददरशकीनो अबहोनहार आनंद रघुनंदननाम नाटक प्रकार पढ़िबेकी मेरीमति त्वराकरैहै ॥

मुनि: । वत्स भली कही पढ़िही लेहु ॥

शिष्य: । आपु प्रसाद अनुपम नाटक मोकों आयो ॥

नेपथ्ये मंगल कोलाहल: ।

छंद । भूपदिगजानपायो पूतभगवानहोजी वाहवाहै ।
मोदवेप्रमानछायो सकलजहानहोजी वाहवाहै ॥
धायधायरंगवोरि देहुनारिअंगहोजी वाहवाहै ।
बिसुनाथदंगसब खेलोएकसंगहोजी वाहवाहै ॥

आदिकवि: सहर्षसंभ्रम । अहोमहोसौहिलौनोरत्रिभुवन पूरनकरे हैकहाईभईआवतारभयो । अबअकथमुदमंडितामुनिमंडली अपराजितानामनगरीजायगोहमहूंचलैं ॥

इतिनि:क्रांता:सर्बे: । बिष्कम्भक: । सचिवप्रवेश: ।

सचिव: गद्य । मारगनसुगंधसलिलासिंचावो गिलिमबिछावो सिंहासन गद्दीधरावो सकलछिति एकछत्र सर्बछितिपति नछत्र नक्षत्रपति से दिगजान महाराज आवे हैं ॥

पुन:श्रवणंदत्वा । अरे सोर सुनो जाय है महाराज दिगजान बार हैं चार कारि द्वार लों आइ मुनि मंडली को सतकार करे हैं ॥

ससंभ्रम समुत्थाय । महाराज सलामत महाराज सलामत
(इतिसोत्साहंमिश्रेप्रति)

छंदभूलना ॥ छत्रचौरनवलितभूषितभूपनललित कलितआनंदआनन सुहायो चोपदारनतोरबाहआतिचहुंओरगानजांगरनरसभरितभायो ॥ सूतमागधबंदिकरहंबंदनवृन्दइन्द्रइवआयआसनबिराज्यौ । पूतउत्साहअपराजितानांहलखुदेतबकसीसबिसुनाथभ्राज्यो ॥ १ ॥

अंजलिंबध्वा । महाराज बार हौं को चार अनूपम सुनि बड़ो सुख भयो गुर धराये चारिउ चिरंजीव लालन के ललित नामते सुनिबे को मति अति उत्कंठा करैहै ॥

नृप:सखितलज्जंलिखति ॥

कंचीसानंदंवाचयति । हितकारी, १ डहडहजगकारी, २ डोलधराधर, ३ डिंभोदर ४ ॥

स्रुत्वासभासद: । वाहवा, वाहवा, भले नाम हैं ॥

कंची । महाराज देखिये भाट, नट, बिदूषक, नरतक, आवेहैं ॥

कबित्त । कईरंगपागलालचंदनललाटलाग अंकुशबंधोहैजामेभालोलिये हाथमें । कम्बरकटारीकंटकटुलाकुकाठधारी याहीभांति कौरो

भाट कैते लियेसाथमें ॥ आशिपसमूहपढ़ैछंदनकेब्यूहबाँधि पावतअनंदलोग रसनकेगाथमें । करतप्रणामबारबारबिस्वनाथ आवैसभातकिधारै दोनोंहाथनिजमाथमें ॥ १ ॥

पद् । मैअसमनहिंबिचाख्योयहतोभट्टहै । कांधेढोलहाथलकुरायहनटहै ॥ यहैबिदूषकनटीबीरतकिहंसतहै । बिस्वनाथयहनरतकभावसीलसत है ॥ (भट्टःकिंचित्समीपमागत्य)

कबित्त । आपुकोसुयशदसदिसनिअनूपछायो सेतदिगपालभयेचीन्हेंनेकोऊनजात । डंकनिकेशबदसशंकिसुनिबंकशत्रु दरकेदिलननेकवदन कढ़ैनबात ॥ परम प्रताप पुंजझारहीसों जारेसारे खलखर बृन्द नाहिं येकऊककहूंदेखात । होतेंजोनविस्वनाथभूपदिगजानदान जलकोसरित सिंधुबांड़वागिसेंसुखात ॥ १ ॥

सोरठा । जोवैचारोलाल जौलौंकीरतिईशकी ॥
निरखतचरितरसाल लहहुसदहिंमुदमह्यिपमनि ॥ १ ॥

स्ववाद्यंटंकार्य्येदेवंप्रणम्यनटः । अरी सुनौ तौ दोनों नटी मोमों नट आयो दिगजान ऐसो भूप पायो पुत्रोत्साह समयो बनि आयो कुलि कल कलनि लखायो चाहिये ॥

आकाशे दृष्ट्वा । अरे नटी पुरहूत दैत्यन को युद्ध द्यूत होत है सूत फेंकि तामे चढ़ि रण रंग मढ़ि आपने देव संग ह्वै होंहूं जंग करन जात हों । भो सभासदो सलाम है, सलाम है, मेरी नटी को विलोके रहियो ॥

सभासदः । देखो सूत गहि चढ़िही गयो आकाश कों । आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

आकाशे कर्णंदत्वा बिस्मिता नटी । अरे गीरवान गदित बानी सुनि परै है नट भट जूझ्यो ॥

अधोविलोक्य । ये दूनों बाहैं गिरीं, पांय गिरे यह सिरगिस्यो, यह धर गिस्यो, मेरे पतिही के हैं ॥

(द्वितीया नटी रोदिति)

नटी । अरी रोवै कहा है होतो बहुत रोज याके संग रही अब सती

होउंगी तोको महाराज पालिवोई करैगे सभासदो सर तैयार कराय देउ हैं। पति संग जरौं ॥

सभासद: । यातो आछें जरी (द्वितीया नटी आंकाशे दृष्ट्वा) अच्चरियं अच्चरियं अइपिये अत्ताम्यगइ ॥

अर्थ । अश्चरियं आश्चरियं, आश्चर्य्य है आश्चर्य है । अइकोमला लापे पिओ अत्ता गम्यइ कहे पीउ ह्यां आवै है ॥

नट: । महाराज सलामत भो सभासद: मेरी नटी कहां है ॥

सभासद: । अरे नट आपनी दूजी नटी ते पूछि ले तेरे अंग लै जरिगई ॥

नट: । अरी नटी तैहूं मिलि गई मेरी नटी तो महाराज के भौन में है हुकुम होइ तो टेरि लेउं ॥

सभासद: । अरे नट यातो बड़ो आश्चर्य कहै है महाराज को हुकुम है टेरि ले ॥

नट: । येनटी येनटी आवे आवे ॥

नेपथ्ये । हांजी हांजी पहुंची पहुंची ॥

पुन:सनटिर्नट: । महाराज सलामत ॥

सभासद: । आश्चर्य कौतुक कियो ॥

द्वितीयानटी । साहु स हु तुमये आदि अपुव्वं को दुअं कअं ॥

अर्थ । साहु साहु कहे स्याबास स्यावास, तुमये कहै तुम, आदि अपुव्वं कहैं दुअं कहै अति अपूर्व कौतुक कअं कहें कीनो ॥

बिदूषक: । अरे नट ऐसे मुहमञ्काय नैनानिनचाय झूलनी झमकाय सबकी उर आनंद भरलाय हों न समझयो तेरी दूजीनटी प्रथम कौन बोली बोली ॥

नट: । एक समय मेरी कलनि बखाननि सुनि कानन सहसाननसिर तनक डोलायो महि बिवर बनायो तेही मग मै तहं जाय कलनि लखाय रिझाय लीन्हो । शेषकह्यो मांगु मांगु मेरोमन येही तकि राग्यो येहीको मांग्योयह धन्या नागकन्या है नाग भाषा भनै है ॥

बिदूषक: । अरे नट तैं नर यह नागिनि कैसे संग भयो ॥

नट: । अरे बिदूषक तैं नहीं जानै है की नारी गंगा है ॥

(प्रहस्यसभासदः) अरेबिदूषक तो दौरि याहि गहि हरगंगा हर गंगा कहन लग्यो ॥

नटः । अरे अरे या कहा करै है ॥

बिदूषकः । अरे बावरे हौंहूं अस्नान करौहौं ॥

नर्तकः (सस्मितंपुष्पांजलिंदत्वा) महाराज ये गतौं संगीत की हैं गुलाल मे मोर मातंग उपटे नजर करिये ॥

(इतिगायति)

पद । नृपदिग्गजानचारसुतजाये गहगहबजतिबधाई । टेक ।
जहंलौं देत भूप धन तहंलौं मंगन मनहु न जाई ॥ १ ॥
याचन चहत इन्द्र ब्रह्मादिहु सकुच न सकत न आई ।
विश्वनाथ यह उत्सव तिहुंपुर रह्यो अनूपम छाई ॥ २ ॥

प्रबंध । दिग्गजान प्रकटित मघटित घटनोतघाटक यशोबितान मनुपमं ॥ (तालझपतारा) संछा दित त्रिभुवनं ॥

तालत्रिपुटा । तिरेरे या तिरेरे या तिरेरे या धधप धधप पगग रे गगप ध सा रेरे स रेरे स सधध प धध सा ॥

ताल रंगजति । तकथुं थुंतक थुंतकृति गदि गदि गदि गथैति गति गदिग दिग ॥

सभासदः । वाह वाह आछो नाच कियो ॥

भूपः । बांछित ते अधिक इनाम इन को देवाय देव अब मेरी मति सुत निरखन की उत्कंठा करै है ॥

मंत्री । बहुत भलो । इति निःक्रांताः सर्वे ।

(सपरि कर देवी प्रवेशः)

देवी सखीं प्रति । आजु महाराज के दरबार में नर्तकन नृति प्रकार सुनो है अनूप भयो ॥

सखी विलोक्य सहर्षम् । महारानी महाराज आये रानी ससंभ्रमं उत्थाय पूजयति ॥

नृपः । ये कुशला तुम यथार्थ नामा हो सौतिन को बुलाय सत कार जातें सब सुतन में सम सनेहकरैं ॥

(कुशला सखी मुख मवलोक्यते) सखी निःक्रांताः ।

ततः ससुत सखी सुहिता काशमीरी प्रवेशः ।
कुशला । सखी पूजन की साजु ल्यावै ॥
नृपः । ये लालन पालन हित ब्राह्मण बैष्णव की सेवा करो जामें सब को कल्याण होय ॥
देव्यः । (शिरसोपदेशं गृहीत्वा) महाराज हमारे सब के यह ललक है कब इन की बधुन कों हम नैनन सों देखिहैं ॥
भूपः । कछू राजकाज के हित मंत्री हमें परिखे हैं ॥
(इतिनिःक्रांतः) (देव्यः परस्परम्)
पद । तबहीं बिचरि गोद जब आवैं सुत कौतुक तकि दृगन अघाहीं ।
अबतो भये किशोरचारिहू सखिहमसबकहुंमुदमितिनाहीं ॥
खेलनजातशिकारभ्रातसब लहहिंयहैसबलोगललोगाईं ।
विश्वनाथनृपभाग्यचारिफल लियहमहूंसबभागबंटाईं ॥
(षंडप्रवेश)
महारानी चारिउ कुंवरन को सवांरि भूप बुलायो है इतिकुमारैः सह निःक्रांतः ॥
रानी । चलो झरोखे लागि सुतन निरखिये ॥ इति निःक्रांतः ।
(ततः प्रविशति समात्यो भूपः)
भूपः । मंत्री षंड को बड़ी बार लगी ॥
(प्रविश्यकुमाराःप्रणमंति)
भूपः । सुतान् दृष्ट्वा सोत्साहं मंत्रिणं प्रति । पुत्र बिवाह योग भये ॥
मंत्री । महाराज हों अरजई करनहार हुतो ॥
द्वारपालप्रवेशः । महाराज गुरु आवे हैं ॥
(राजा ससंभ्रम मुत्थाय चलति)
मंत्रीबिलोक्य सहर्षम् । अहोभाग्य जिनके गृह ऐसे गुरु आवैहैं ॥
कवित्त । शास्त्रऔपुरानलीन्हेकेतेशिष्यसोंहैसाथ तुलसी कीमालभाल तिलक सुधारे हैं । पहिरेकोपीनकरदंडऔकमंडलहैसीसजटा पीठि चर्मचारुभृगवारे हैं ॥ लोचनलखेतें संततताइहोबिलोकी जाति रूपहोतेजानेपरें भूत सुखकारें हैं । करत प्रणाम पानि पंकजअसीसदेत बोलेंप्यारेबोलन पियूषश्रोन ढारेहैं ॥ १ ॥

सूप: (दंडवत्प्रणम्य सभांप्रवेश्य यथोचित पूजनं कृत्वा)
भूप: । सेवक के सदन स्वामी आगवन मंगल मूल है ॥
गुरु: सस्मित: (प्रविश्याबामदेव:) जगद्योनिज श्रवणे ॥
भुवना हित मुनि आवैं हैं अरु येहू काहू काहू के मुख सुन्यो है की मष रक्षन हेत नृप कुमार मांगि हैं ॥
गुरुबिस्मित: । भो भूप तुम्हारे पुरषन को यश बखान जहाम में छायो है तुमहू दान मान में भगवानहीं के सम हौ तऊ गुरु धर्म विचारि हौं यह सीख देत हौं जातें सुयश न मलीन होय सो सावधान करियो ॥
भूप: । मैं तो कछू करन लायक नहीं हौं प्रभु की कृपा जो मोपै है सोई सब करन को समर्थ है ॥

(प्रविश्यद्वारपाल:)

छंद । कायाबिद्युतछटाभासिरसंघनजटा घंघटासी बिराजैं ।
भ्राजैंबाहुप्रलंबैं अगुलि कुसनकीपैंकापीनछाजैं ॥
पीतंयज्ञोपवीतंकलितकृमकरी बल्कलंमुंजगाथं ।
वक्तेतेजस्समूहंबिमलतपसकोध्यानमेंबिश्वनाथं ॥ १॥
ऐसे भुवन हित महामुनि आवैहैं ॥
सूप: । ससंभ्रमं । अरे मुनितोआय गये अर्घ अर्घ पाद्य पाद्य भो मुने दंडवत बड़ो अपराध भयो आगू ते न लेन पायो अपराध क्षमा करिये ॥
मुनि सस्मित: । नृप आपने ऐन आवत कोई आग लेन को कहा परखै हैं ॥
भूप: । यह सिंहासन है ॥
मुनि: । अहो जगज्जोनिज आपहू ह्यां बैठे हैं अलभ्ये लाभ भये बड़े दरशन भये नमस्कार नमस्कार ॥
जगद्योनिज: । नमस्कार आवो मिलि लेऊं ॥
नृप: । आपको आगवन मेरे घड़े सुकृत को फल है आप के मष थल में भारी भय है । अथवा सर्व भूमि दक्षिता जामे ऐसी कौनौयज्ञ मनमे ठैराये मोंको आपनो किंकर मानि आज्ञा दीजै ॥

मुनिः। कवित्त। आपकोप्रतापपुंजपावकपुरारिमानि तीजेचषपलक लगायहोंरहतहैं।पालतपुहुमिपेपिछौरिसिंधुसेषसेअसुचितसुखोंहै हरि सोवतमहतहैं॥ मायदानभूमिदेवदेवलोकचाहैंनाहिं बाहुबलदुवनाछनोकेनिबहतहैं। बिस्वनाथआपकेप्रजानिपुन्यलोकनकोरचतबिरंचरंचकलनालहतहैं॥ १॥

वज्जितोभूपः। आप तो नवीन जगतही रचन लागे हैं जो कांकरीहूको सुमेर कहन लगें तो कहा आश्चर्य है। अब जा हेत आप आये सो सुनिबे की लालसा में बार्ता बिक्षेप करै है॥

मुनिः। जाके बसिष्ठ ऐसो गुरु है सो ब्राह्मणन की बांछा पुरवै तौ कहा आश्चर्य है॥

मुनिघातिका। घातिका नामा राक्षसी समुत बाधाकरै है सो यज्ञ रक्षन के हेत हितकारी डोल धराधर दोऊ कुमार दीजे॥

भूपः। श्रुत्वाबैवर्ण्यं नाट्यति॥

गुरुःभूपंबिलोक्य। ये ज्ञानवान तेज निधान सर्व अस्त्र शस्त्र जाथ मुनिन में प्रधान हैं। आपने प्रभावतें सर्व काज करिबे कोसमर्थ यो हैं। तुह्मारे पुत्रनको कोई बड़ो भाग्य उदयभई जातें माँगिन को आये हैं। तुमऐसो दाता इनऐसो पात्र को संयोग्य दुर्लभहै॥

नृपः। बत्स हितकारी डोलधराधर आवो हृदय लगाय लेउं॥

(शिरस्य आघ्राय सगदगदं)

मुनिये कुमार आपते प्राणअधार आप को सौंपौं हौं॥

मुनिः। नृप अभिष्ट सिद्धि रस्तु (इति सकुमारोनिःक्रांतः)

(नेपथ्ये रोदन कोलाहलः)

पद। योगी लिये जात मेरे बारे। टेक॥
कैसे भूपतिदियेपानिगहि जेप्रानहुंतें परमपियारे॥ १॥ मखमल गिलिमचलतत्रसियतते पदबनपुहुमीकिमिकरि धरिहैं नृप विसुनाथ दुलारेदोऊ किमिकोहो मुनिसेवाकरिहैं॥

जगद्योनिजः। तुम्हारे पुत्र मुनिते रक्षित सुखपूर्वक जात पंथ निवासिन के नैन सुफल करि हैं। अंतहु पुर में रोदन सोर होय है। हमहूं तुमहूं चलि तिन की मातन को समुझाइये॥

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

पथिकप्रवेशः (नेपथ्ये कोलाहलः)

अइसहि अइभइणि अइमाए एक्कोपहि ओसमा अदोतम्मुहा । दोसुनि अंजारिसावम्ह डभंडो अरेण मुनिदातारिसाजउलकुमाराआगम्मंति ॥

(ततः कुमारदर्शनार्थिनीन प्र शः)

कुमारदर्शनार्थि ः । अइ सहिजु इलकुमाराकियं तदूरम्मिहुं वंति अरे दिट्ठा दिट्ठा ।

ततः सुकुमारमुनिप्रवेशः (ततः ग्रामरायः)

पद । कस्सदोणिपुतावंचिऊणमुणिणाणिदा । (याकहे के के दुइ पुत ठगिकै मुनि लैआए हैं) पदसोअमल्ललोहितनणं जासपाइधरे कंटअंकअंपदेहिं तेचलाविदा। धिअधणुव्वाणादोणिभाआरासमाणव आसुछइअमणसामगोरअणो हिदाकवंचिअपेकिवऊणपत्नुअंकुणेइ मणेइविकासइ इमेविस्सणाहराइणोपिआसुदा ॥ इतिनिःक्रांताः

प्राकृतको तिलक । अइसहिअइभइणिअइमायेकहै । येसखिये। भगिनियेमाता । एक्कोपहिवोसमाअदोतम्मुहादोसुणि अंजारिसावंभंड भंडोअरेणमुणिदा । तारिसाजुउलकुमराआगम्मंति । यह कहे एक पथिक आयो ताके मुखते सुन्यो है जैसे ब्रह्मांड भांडोदर में नहीं सुने तैसे युगुल कुमार आवे हैं। अइसहिजुउलकुमारकिअंतदुरम्मिहुं बन्ति ॥

याकहे । ये सखी युगुल कुमार कितेक दूर हैं । अरे दिट्ठा दिट्ठा याकहे के के के दुइ पूत ठगिके मुनि लैआये हैं । पदसोअमल्ललोहिततणं णजासपाइधरेकंटअंकअंपदेहिंतेचलाविदा ॥

अर्थ । जिनके पद की सुकुमारता और ललाई नापाइ कमल कंटकनकों धरे है तिन्हें प्यादहीं चलायो है ॥ धिअधणुव्वाणा दोणिभाअरासमानव आसुछइअमानसामगोरअणेसेहिदा ॥ अर्थ । दोऊ भाई समान वय धनुषबान को धारण किये सुन्दर छबि ते अमित जो शरीर ते ते शोभित हैं । छविचिअपेफविऊणपत्नुअंकुणे इमणोकासइइमेविस्सणाहराइणोपिआसुदा ॥ अर्थ । रूपही को देखिके मनप्रतीति करे है । ये कोई बिस्व को नाथ जो राजा है

ताके प्रिय सुत हैं ॥ (इतस्ततः परिक्रम्य)
हितकारी । गुरु केतो आये ॥
मुनिःगद्य । वत्स षट कोस आये मोको बड़ो अपसोस तुम खेदपाये होउगे अति श्रमित अंग गरम उमंग पतंग तुरंग तरंगिनी पति तरंग अब अस्नान करन चहत हैं । यहि बरतर बास बरतर है ॥
हितकारी । यह जल भल है संध्या करिये ॥
मुनिः । भलीकही ॥
डोलधराधर । शय्या तयार है ॥
मुनिः । ये हितकारी ये तो परन शय्या भली बनावै हैं ॥
हितकारी । ये डोलधराधर मुनि मुख सुनत सुधा सी कथा श्रवण संतोषित नहीं होय ॥
मुनिः । अर्ध रैनि गई सोवो ॥
कुमारौ । दंडप्रणाम ॥

(मुनिः उत्थायप्रातस्मरणंकृत्वा)

पद । उठोकुंवरदोउप्राणपियारे । टेक ।
हिमिकरतुप्रातपायमलिमिटिगे नभसरपसरेपुहुकरतारे ॥
जगवनमहुंनिकस्योहरषितहिय विचरनहेतदिवसमसनियारो ।
बिस्वनाथयहकौतुकनिरखहुरबिमनिदसहुदिसिनिर्दंजियारो ॥ १ ॥
ससंभ्रममुत्थायकुमारौ । भोगुरो दंड प्रणाम दंड प्रणाम बड़ो आलस्य भयो भोर न जागे ॥
मुनिः । चलो अस्नान करो द्वै मंत्र देउं जातें शोक शोक मोह भूख पिआस श्रम आलस्य न होइ । (अस्नात्वा)
सहर्षम् कुमारौ । महाराज मंत्र दीजे ॥
मुनिः । बला अति बला ये दोऊ बिद्या लेउ ॥
कुमारौ । ये मंत्र पाय हमको बड़ो आनंद भयो ॥
मुनिः । पंथचलन की बेर होइ है चलो ॥

(ततः इतस्ततः संचरंति)

हितकारीगद्य । गुरो बिसाल ताल तमाल साल प्रियाल हिंताल आल जाल कलित कराल जहज पहल ब्याल बेताल कुल चहल

पहल कोलाहल तिन ख्यालन हहल हहल हालत लतन बितानन यह कानन अति भयावन है ॥

मुनिः । धर्मनिंदरनि अधर्म बिस्तरनि रुधिर मांस उदर भरनि अति क्रूर अरुनी मुनि गण यक्षमी घातिनी नाम यक्षनी आई रही है ॥

डीलधराधरः । भो भाई चाप चढ़ावो ॥

हितकारी । अबला बध बिधि वेद में नहीं लिखी यह हमारे कुल को नयो कलंक होयगो ॥

मुनिः । वत्स हितकारी ऐसिही पाप कारिनी प्रबला अबला भृगु स्त्री को मुरारि अरु मंथरा को नगारिहू मारि यश लियो है पुनि मम शासन किये तुम को कौन अघ है । कार मुक टंकोर करो से शोर सुनि सो धाय आवैगी ॥

नेपथ्ये कलकलः । भागो भागो भागो आई आई आई । सर्वेसंभिता

मुनिः । अरे यह तो आईही गई ॥

छंद । शारदूलविक्रीड़ित । छूटेकेशलटानिमेघघटनैलीलैसमुद्घाटती । छोटेनैनअंगारज्वाललतिकादिग्गैंदसोपाटती ॥ केतेमानुषदंतअंतरगड़े बैठेलोहूचाटती । धोतीवारनखालमालबोभरीकोहंभनोडाटती १ ॥ वत्स वत्स सजुग होउ सजुग होउ ॥

घातिनी । अरेणिव्वुधेमुणिइमेजुउलकुमारा अम्हाणंपहेचंअप्पाणस्सहा अत्थमारगिदा ॥ अर्थ । अरे निर्बुद्धि मुने ये युगुल कुमार हमरे कलेवा अपने सहाय के अर्थ तैं लै आये है ॥

साट्टहासं । अहो मुणिदं मुणिदं तुज्झ चातुलिअं । जस्से तुम एसव्वोणि मंतिदा अम्ह सक्कारत्थ मिमे ॥ अर्थ । अहो ज्ञानी ज्ञानी तुम्हारी चतुराई यज्ञ में तुमने सब को नेवतो हमारे सतकार के अर्थ येहैं ॥ इतिधावति ।

डीलधराधर । अहोगुरो हों न समुझ्यौं आपकेहुंकारते गिरी या अग्रज के बाण तें ॥

गुरुः प्रहस्य । वत्स हितकारी यह बामी दिगजान ते सीखी या जग योनिज ते ॥

हितकारी । यह राक्षसी आपके प्रतापहीतें आरि रही हुती होतो निमित मात्रही हैं ॥

भुवन हित: । अस्नान करि आवो अब अस्त्र सब सिखाऊं ॥

स्नात्वा कुमारी । हेगुरो अस्त्रसंहार पावें ॥

गुरु: । लेव ॥

हितकारी । गुरो बड़ो आश्चर्य है सकल अस्त्र शरीर धारी देखिपरे हैं ॥

गुरु: । (इन सों कहे हमारे मन में बसो) चलो हमारो आश्रम नियरेहीं है ॥

(इतिइतस्तत: संचरंति)

नेपथ्य कोलाहल: । सहाय मांगन हेत मुनि को अपराजि गवन सुनि घातिनेय काबुल सों चाक भुजकोसहाय लै आयो ॥

मुनि आश्रम न पहुंचे । हाय हाय अब कहा होयगो ॥

आकाशेकोलाहल: । बरायेरफतनेजन्नतचराइस्तई हम.मेहनते जराइतेगमनई नश्वरसानमबेदिरंगीहा । बिगुफ्ततईनीवअखवानाबिजद नाराकिएयारांबजूदीसक्कविसिकस्तानमूदासखतचंगीहा॥ कुमेदअज्जा मुमानेबदजिनेगेबर्कअफसांखुदबखूनेखुसगवारई नापरेधीहोजेमुईय बरा। जिखुरदेपुरहलावतखुयशबेमईजास्तबसदिलकसवएसोका मरामी हावकुसाजेमतंगीहा ॥ अर्थ । स्वर्ग के जान लियें काहे को तुम वृथा श्रम करोहो आपनो खड्ग धार मार्ग ह्वै होहीं आसुहीं पहुंचाई देत हौं यों दुजन प्रति कहि आपने सहायकन सों बोल्यो सुनो बेगिहो स्तम्भ उपारि डारो अरु इन सबन को आपनो कराल कर बालबधि अति स्वाद संयुत जो इनको रुधिर तातें कुंडनि पूरन करि पान करत मृदुल पल इन विप्रन को जो बहु दिवसनि मैं आजु पायो सो आनंदित भक्षन करो ॥

इतिआकर्ण्य भुवनहित: । अरे हम आश्रम को न जान पाये राक्षस बीचहीं आये बड़ो अनर्थ भयो ॥

(इतियोकमुक्त्त:)

कुमारौसक्रोधमुपद्रुत्य । पहुंचे हैं पहुंचे हैं न डरो न डरो अरे क्षुद्रो इत को आवो हम राक्षस कुल अंत धनुर्धर आइ पहुंचे ॥

(इति निःक्रांतौ नेपथ्ये सानंदगानं)

भजन। भुजपुरके भाषामा॥ करमनछौड़ादोइगोटएैलखिनि। चारुभुजैय कातिरैमरलेखिनि॥ घातिनिछोड़ैतुरितउड़ौलखिनि। भुन हितकर जागसहितहम सबलोगबनकरजियरावेंचवलखिनि। नरमआंगविसुनाथबराबर दोउगोटछौड़ावरबलपलखिनि॥ अर्थ। भागनितें दोउठो लरिका आये हैं। चारुभुज को येक तीर ही मारि घातिनी के सुत कों तुरतहीं उड़ाये हैं॥ भुवनहित को जाग सहित हम सबलोगन के जीव बंचाये हैं। जिनके अंग नरम हैं औ बिश्वनाथ कहे महादेकी बरोबर बल पाये हैं॥ (इति जैहोय होय) (उत्थाय भुवनहितः आत्मगतं)

आश्रम में जय सोर होइ रहो है कौन को है॥

प्रकाशं। हाय हितकारी डोलधराधर मोकों मूर्छित छोंडि कहांगये॥

प्रविश्यशिष्यः। भो गुरो राक्षसन कों मारि हितकारी हमारो सब की रक्षा करि अब शोच में हैं गुरु कहांरहिगयेहम को खबरि लेन को पठाये॥

गुरुःसहर्षं। शीघ्रहीं कुंवर कों ल्याई ल्यावो ह्वांतो राक्षसन के रुधिर तें मही मलीनही ह्वै रही होइगी॥

(शिष्योनिःक्रांतः सबंधुहितकारीप्रवेशः)

भुवनहितः। वत्स बड़ोकाम कियो आवो सिर सूंघों मख सिद्धि ह्वै है सिद्धाश्रम अब यथार्थ नाम भयो चलो आश्रम कों॥

इति निःक्रांता॥ (ततःप्रबिशतिसपरिकरोदिगजानः)

दिगजानः। मन्त्री कुमारन कों गये बहुत रोज भये सुधि न पाई।

प्रविश्यशिष्यः आशिषंदत्वा। महाराज मुनि कही है की आपकी कृपातें हितकारी सब राक्षसन को संघार कियो हम निर्बिघ्न यज्ञ करै हैं॥

स महामोद भयः। मंत्री तुम इनको लै गुरुपै सुधिजनावो हों अंतहपुर जातहौं॥ इति निःक्रांताः॥

(ततःप्रविशतिसकुमारोमुनिः)

हितकरी । भोगुरो अब मख में बाधा नहीं है जो हम को सेवकाई सौंपिए सो करैं ॥

मुनिः । मख में हजोतत येक सुता शील केतु पाई है ताके स्वयंबर हित धनुषमख करै हैं धनु काहू नृप को उठायो नहीं उठयो अब फेर स्वयंबररचि हमहूं को नेवत पठायो है हमारे संग तुमहूं चलो ॥

डील घराधर । गुरो कन्या पाषान की है की दारु की है कीप्राचीन धातु की है ॥

गुरुबिरुद्ध । हेवत्स जैसी सिंधु सुता तैसी कन्या है चलो ॥

इति निःक्रांताः ॥ (सर्वे सामागत्यशीलकेतुप्रवेशः)

शीलकेतुः । मंत्री ऐसी ततबीर करो जो या यज्ञ में आवैं अरु जौलों रहैं तौलों अनुदिन छन छन अपूर्व अनूपई सुखन को अनुभव करैं ॥

(चारप्रवेशः चारः दृष्ट्वा स्वगतं)

कवित्त । द्वादशतिलकदीन्हेंतुलसीकीमाललीन्हें धारेहैंकिरीटजामैमार तंडवारजात । चौरचलैं दूनौवोर छत्रकोअजोर जाहिभैारकैमा भयोशीतभानुअतिहीनजात ॥ ज्ञानतोअमानजाकी परशंसाकरै कौनदानसममानएकरसनाकहोनजात ॥ भूपनाथविश्वनाथराजै आजुमेरोनाथलोकदसचारि मध्यजाको शत्रुहै अजात ॥ १ ॥

मंत्री । अरे आश्चर्ययत ऐसो कहाहै ॥

चारः । महाराज सलामत महाराज सलामत ॥

पदमैथिलभाषामा । मुनिकेसंगदुइनैनाऐलछि । सुंदररूपजादूगर छथिसेपथराकीपुतरीकमाउगिवनौलछि ॥ हमपड़ायकहुंएतैऐलहुं सेबिरतांतअहांकेसुनवलछि ॥ अवभूपतिविश्वनाथहोइजैजेकछुकरैक करुमनभवलछि ॥ अर्थ । मुनिकेसंग दुइलरिका आये हैं तिनकर संदर रूप है जादूगर हैं । पथरा की पुतरी का स्त्री बनाइनि है मैं पराइ के इहां आयेउं सो बिरतांत अपना का सुनायउं है विश्व-नाथ भूप तुम्हार जय होय जो कछु करैं का होय सो मन भावाकरी ॥

(श्रुत्वानृपा श्रवणे सामोद सतमोदः)

सतमोदः । हम पितु श्राप दै मम मातु को पत्थर की करी यह

शापोद्धार बतायो हुतो क्री परम पुरुषावतार पाय परसि फेरिनारी होयगी हीं अनुमान करत हौं भू भुवनहित मुनिसाथ तेई आये ॥

सहर्षं नृपः । मुने अवश्य जोहन योग हैं चलिये भुवनहित को आगू ते लै आवैं ॥ इतिनिःक्रांतौ ॥

नेपथ्ये कोलाहलः । आश्चर्यं आश्चर्यं ।

अथ । आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

भजन । लैभगुवानपुरोपतिआवत । टेक ॥

मुनिकेसंगकुंवरलखुअनुपमअपनीसुछविछटांमिछितछावत । अस नहिंदीखसुन्योनहिंकतहूं कहतनवनतमननहिंजसभावत । बिश्व नाथतनपनसयनावत नैननिचैननीरबरसावत ॥ १ ॥

मंत्रीआकार्य । कहा भूप मुनि कों लेवाइ निकट आये ॥

(सकुमारभुवनहितमुनिसहितभूपप्रवेशः)

भूपः सविधिपूजयित्वा । प्रभु को आगमन भूरि भाग्य को फल है आप के संग जे कुमार हैं तिन कों निरखत नैन नहीं अघाय हैं ये कौन के हैं ॥

मुनिः । ये दिगज्ञान भूप के कुमार हैं पुरारि प्रसाद पायो जो तुम्हारो पिनाक है ताको तोलो चहत हैं ॥ (नेपथ्ये)

पद । महिजाहितकारीकोगौरी । टेक ।

बिरचोविधिरतिमारबिपुलरचि सोचिसोचिकैकल्पकरोरी ॥ हर गिरिजापदप्रणवहमसब सकलसुकृतकरफलयहचाहैं । नृपमति फिरहिकिविश्वनाथ धनुमृदुलहोइयेइतोरिबिवाहैं ॥

प्रविश्वसभयंचारः । महाराज सरासुर दिगीसर दोऊ आवे हैं ॥

भूपः । (सविस्मयंआत्मगतं)

भूपः । अहो इंश अबधौं कहा होय ॥

(ततःसरासुरदिगीश्वरसःप्रवेशः) (पर्विस्मितवंदीस्वगतं)

कवित्त । याकेदससीसबीसबांहुडोलशैलमानो याकेएकसीसबाहुदोरघ हजारहैं । दुनौलालचंदनकेदोन्हे हैं त्रिपुण्डभालपहिररुद्राक्ष मालछायेतनछारहैं ॥ दुनौअतिबलीभायेदनोजगजीतिपाये

दूनोभयदेतदेखेतनबिकारारहैं। दूनोधनुतोरैताकोकौनहैउपाय हाय सोकतेंउधारकोअधारकरतारहै॥

सर्वशंकित:। हाय हाय अब कहाहोन चहत है॥

डौलधराधर:। गुरो या कौन कौतुक है॥

मुनि:। बत्स या कौतुक नहीं है यह सहस्रभुजवारो दैत्य है या बीस भुजवारो राक्षस है॥

हितकारी। गुरो इनके रूप देखत सकल सभा अद्‌भुत भयानक रस सागर में डूबी देखी परै है॥

दिक्‌शिरा:छंद। बतायदेहुवेगहीं सुताअनूपहैजहीं। लैजाहुंमैं असीसकै पिनाकटूकबीसकै॥ १॥

सरासुर:। गुरूकोधनुहैनबिचारतहौ दसगालनिगालनिमारतहौ। नसुनोतुमबैननिमारकहै गुनियेमनहींगुरुगर्वगहे॥

(दिक्‌शिरा:तिर्यगवलोक्य)

कवित्त। मेरे भुजदण्डनतेदेखिखंडखंडदंड भाजि ब्रह्माण्डहींते काल कीन्होगौनहै। परमप्रचंडनवखंडमेंअखंडफैलो पेखिकैप्रताप मारतंडडोलैमौनहै॥ देतदेतदंडधननाथोभयेझंडहीनसुनतकौ दंडचंडइन्द्रमानोज्योनहै। बाहुकंडुछत्रदंडसोसुमेरतोलोंजाय खोनमुंडमालीकोकोदंडगर्वकौनहै॥ १॥

सरासुर:। अरे आश्चर्य आश्चर्य है॥

कवित्त। जोईभगवानबरदानदातातीनौलोक तीनपायपृथ्वीलेनबेषबड़ लीनोहै। आयोतातपासचीन्होतापैननिरासकीन्होदीन्होदान लीन्होऊनोमानिरोसभीनोहै॥ भख्योपितुलीजैमोहिंदानोदान द्रव्यतुल्यहोहींपानिदोईपालरेकैतौलिदीनोहै। पर्वसर्बरीश जातेंखर्बजससर्बभाषै रेरतेरोसेसोगर्वझाहूं नाहिंकीनोहै॥ १॥

दिकशिरा:सवैया। येकहोसीसकेओनधरोसिगरोजगयौंसरसोसमसोहै। तौनेहींशेषकोवेसशरीरमें सूक्षमकीन्हे अभूषनजोहै॥ सोशिववासकियेजेहिशैन सोकौजभयोकरयेकहिकोहै। होंनहिंगर्वकरोंकरकोनप्रशंसतजाहिहरोरहतोहै॥ १॥

सक्रोधं सरासुरः । पीनपिनाकपुरारिकोयौं विरच्यो। विधिलै करवज्रको सार है। याको निजाननतैंगहता नहिंसीखमनैगुन्योपूरोगंवारहै ॥ आपनोगर्वगवाँवनकोधनुतोरनकोसठकीन्हेबिचार है। जोबढ़िकैबलतैंबल कैअवलोकतहैसोतोनाउकोयारहै ॥ २ ॥

सक्रोधंदिक्शिरः । छंदपद्धरी । बकनहोहितोबकोहिमान ।

सरासुरः । मुखनाहिंहमारेबेप्रमाण ॥

दिक्शिराः । भुजभारनढेयेहोंभुलान ।

शरासुर । दसशतभुजबलतोतुहीजान ॥

दिक्शिरा । सवैया । तोलिलख्योउतुलाधनमें बलतोरिहौंहोहींजबै फिरिहै ॥

सरासुरः । लायअबंदनयाधनुहै तेहिकमेकुटीटितहूं हरिहै ॥

दिक्शिरः । काहेदुखावतहैबदनै बाकिऐसेकरैंगेकहाकरिहै ॥

सरासुरः । मैंगुरभक्तनहौंतोहिमो करिहौंकरिवेजोइजोतोरिहै ॥

सक्रोधंदिक्शिरः । तुवगर्वहीकेसाथ, तोरौंधनुषधरिहाथ ॥

सरासुरः । दोप्रथमबरनविहाय, जोकहहिभूठनआय ॥

दिक्शिरः । धनुषतोरितेरहूमदतोरिहौं ॥

(इतिपरिकरंबध्वाधावति) (सुबद्धिनामबंदी आत्मगतं)

सवैया । करिजोकरमेंकैलासलियो कसकेअबनाकसकोरतहै । दइ तालमबीसभुजाभहराय भकेधनुकोभकभोरतहै ॥ तिलएक हलैनहलैपुहमी रिसिपोसिकेदांतनतोरतहै । मनमेंयहठीक भयोहमरे मदकाकोमहेशनमोरतहै ॥

(सहस्रकरैः तालिकाः दत्वाप्रहस्य)

सरासुरः । पिनाक तुमको नमस्कार है । इतिनिःक्रांतः ।

(अमित दिक्शिरा उल्लावस्य)

दिक्शिरः । अरे यामें महा जादू ऐसी जानो जाय है वैसहीं कन्या को ले जाउंगो ॥

आकाशे । स्वामी स्वामी तुम्हारी कुंभीनसी कन्या को मधुनामा दैत्य हरे लाये जाय है घनधुनि मखमें है, आप को भाई भयानक जप करन गयो है, घटकर्ण सोवै है ॥

जिष्णुत:संक्षोभंदिक्शिर । अरेदैत्यनकीहियेकीआंखैंफूटगईं ॥

सवैया । अजुसरासुरकोसरसो बिनबाहुंनसीसधरामेंमेवैहौं ॥ बाहुनके बलसोंबलिबांधिकै बंदिमेंबासवसोतकवैहौं ॥ बाजिनसुंममें शुंभनिशुंभको खूबखुंदाइसिवाकोरिझैहौं । पूरिपतालहिश्रोनितसो मधुमैामधुगाि कैपानकैजैहौं ॥

(इतिसत्वरंनि:क्रांत:) (नेपथ्येजयजयतिकोलाहल:)

सुबुद्धिबंदी । यह बड़ो विघ्न विधाता ने नेवारि दियो, धनुष की गरुवाई दिगशिर के उठावत में सबही लषिलीनो अब जाके उर उत्साह होवै सो उठावै ॥

मंत्री । येतो सबसुनिशिर लटकाय लिये अब कहा होयगो ॥

भुवनहित: । वत्स हितकारी धनुष संग सबन की शंका भंजो ॥

हितकारी । गुरु आप की कृपा कटाक्षयों कार्य कारी है ॥

(इति परिकरंबध्वा संचरंति)

सुबुद्धिबंदी । आश्चर्य है आश्चर्य है गहत उठावत तो देख्यो नहीं धनु भंगही को घोर सोर छाइ रह्यो ॥

आकाशेछंद । सोरउठुतमहिहूबलरपटतसब सिंधुसंघटतजलथेलथल छूटिगो । शेषफनफटततलवासहारटत बाराहबलघटतजुगडाढ़सो टूटिगो । दंतचटचटतमहिशैलयुतछटतदिगदंतगनहटतभलकुंभथल कूटिगो । दैत्यलटिलुटतअभिमानछुटत कोदंडकेटुटतब्रह्मांडसो फूटिगो ॥

नृप: । भोगुरो यह काज भुवनहित मुनि के प्रभाव तें भयो जो कछु उचित होइ सो करिये ॥

सतमोद: । आतुरी करो कन्या को लै आवो जयमाल पहिराय देइ ॥

(सखीभिश्च: महिजाप्रवेश)

डीलधराधर: । गुरो यह कान्या जो अग्रज को माल पहिरावै है कहा महिजा येही है ॥

गुरु । ऐसही है

डीलधराधर । याहि देखि या शंका मेरे मन में आवै है हरिसागर मथि श्री निकारी मेदनी काहे नहीं मथी ॥

सखी पद । पहिराइहुजयमालनपानिसंकेलति है ॥ रहीटकटकीलाय पलकनहिंमेलति है ॥ हायकहाय हिभयोरहीहैमन-हुंठगी । बिश्वनाथयहिकुंवरिकुंवरकीडीठिलगी ॥

सतमोद: । कुंवरि को अब अंतह पुर को लैजाउ ॥

(सुतांगृहीत्वा सख्योनि:क्रांता:)

भुवनहिय: । भूप तुम्हारी जय होइ ॥

(इतिसुकुमारो नि:क्रांता:)

नृप: । गुरो आप आसु पत्रिका लिखि अपराजित पति पैं पठाइये मैं मनि मंडफ कीतयारी करावन जातहौं ॥

(इतिनि:क्रांता:) (सपरिकर दिगजान भूपप्रवेश:)

राजासंचिवंप्रति । पद । जबतेंकहिसुधिधिसिधारे । तबतेखबरि सुनीनहिंश्रवणन तलफतप्राणहमारे ॥ बिकलाईतिनकोजननिनकी कैसेंकरिकहिजाई । बिश्वनाथछनजातकल्पसम हगजलसरिसरसाई ॥

मंत्री । महाराज हों जाइ गुरू सों प्रश्न करी हुती तिन ध्यान धरि कह्यो दोऊ कुमार खुसी सों हैं अरु हितकारी को कछु परम हित भयो है ॥

प्रविश्यचार: । महाराज सलामत भूपशीलकेतो पत्रिकेयम् ॥

(भूप:गृहीत्वा अत्मगतंवाचयति)

सभासद: पद । बांचतकहानृपतिसुखछायो । रोमावलीभलीउठिराजति वपुषपनसफलपटतरपायो ॥ मुखनिदरत अम्भोजप्रातको अंबकअंबकदंबबहायो । बिस्वनाथजनुअनंदहियेको उमड़िनैनमगबाहिरआयो ॥ १ ॥

भूप:सर्वान्श्रावयति । अनंत श्रीमहाराज अपराजिताधिराज सकल महाराजानि सिरताज जग लाज को जहाज गरीब नेवाज महि-मंडल महेंद्र सुरेंद्र के उपेंद्र सम करम काज यश जागत जहान केते भान समान प्रतापवान दान मान सनमान सुजान ज्ञान प्रेम निधान दिगजान भूप भूये ते शीलकेतु भूप की जोहार आप अनूप

कुशल स्वरूप हैं इत आपकी कृपाहीं कुशल है भुवनहित मुनि संग अंग अंग आभा उमंग अनंग आभा भंग करन हार आप के युगुल कुमार आये हम लोग लोयन लाहु पाये हितकारी महीपन मदमोरि महेश धनु तोरि मही कीर्ति छाई महिजा पाई सजि बरात आइये ब्याहि लै जाइये ॥

श्रुत्वासोत्साहंदहदहजगकारी । तात पत्रिका मो कों दीजे मातन कों सुनाऊं ॥

इतिपत्रिकांगृहीत्वानिःक्रांतः) नेपथ्ये (मंगलगानकोलाहल)

पद । ललकतरहीकुंवरलखिबेकों सुन्योहोतबरब्याहहो । अबनअमात अनन्दउरकाहू मुनिपरभावअथाहहो ॥नृपदिगजानबीजसुखतरुको बोयोमुक्रतलहायहो । सोईयहिअवसरमहुंअदभुत फलोचहत बिशुनाथहो ॥

नृपःमंत्रिणंप्रति । अब गुरू गृह चलो चाहिये ॥

(ततःजगद्योनिजप्रवेशः)

सविधिपूजयित्वान्टप । हौंतो आपही के पास जातहु तो आप बीचहीं मिले बड़ी भाग्य ॥

गुरुः हौंसुन्यो हितकारी डील धराधर की खबरि आई है यातें आतुर चलो आयो हौं ॥

(भूपः सहर्षं रुबेटत्तांतंकथयति)

जगद्योनिजः । आप से पुन्यवान पुरषन के सकल काज आकस-माद होइय हैं ॥

भूपः । अब बरात चलिबे की सुघरी बताइये ॥

गुरुः । अबहीं आछो है ॥

(भूपः मंत्रिणंपश्यति)

अंजलिंबध्वामंत्री । महाराज आपतो महीमहेंद्र हैं सब तरह की तयारी ही बनी है ॥

भूपःगुरुम्प्रति । आपकी कृपा ते यह सब काज भयो अब बरात लैचलिये ॥ इतिनिःक्रांतः सर्वे ॥

(सपरिकर शीलकेतु भूपप्रवेश:) भूप: मंत्रिणं ति)

अंजलिंबध्वा मंत्री। महाराज अबतो बरात आगन मात्रही बाकीहै॥

प्रविश्यचार:अंजलिंबध्वा । महाराज सलामत दिगजान भूप सुत दरशन लालसा अति आतुर आये, होतों ज्यों त्यों कारियोजननमात्र बरात तें आगे आयी ॥

(अपराजिताधिराजपत्रकेयम्)

सानंदंभूप:गृहीत्वा । अनेक श्री सकल महिमंडल मंडनानंद चंद अनंत चण्ड मार्तण्ड सम प्रताप बन्त उद्दण्ड दोर्द्दण्ड कोदण्ड प्रचण्ड बान नवखण्ड बैरिबरवण्ड बाहुदण्डखण्ड खण्डकरन खण्डन पाखण्डबिज्ञान ज्ञानवान जाहिर जहान बिक्रम महान जङ्ग जयमान श्रुतिनेतु कीर्तिकेतु शीलनिकेतु शीलकेतु भूप जूयेते दिगजान भूप को जोहार, आप पत्रिका आई इतहूंकुशल बनाई । सुघरीआजुहिं पाई हरषि बरातचलाई ॥

पुन: कर्णन्दत्वा ससंभ्रमं मंत्रिणंप्रति । महाराज निपट निकट आये निशानन के नाद सुने परें हैं, चलो चलो आगे तें लीजिये॥

इतिनि:क्रांता:सर्वे ।

(तत: प्रविशति सखीभिय:सहितादेवी)

नेपथ्ये धावो धावो ल्यावो ल्यावो हाथी हाथी घोरे घोरे रथ रथ ॥

आकर्ण्यचकितादेवी । अलीअट्टालिकाचढ़ि देखुतो कहा होय है ॥

(दृष्ट्वासखी)

गद्य । जिन अङ्ग अङ्ग आभा उमङ्ग रङ्ग रङ्ग तुरङ्ग एकसङ्ग गमनत धुनि धारे मतवारे कारे शैल सम भारे संवारे दंतारे कतारेन को गैल गैल ऐल फैल घहरि घहरि चलत बहल सहल सहल न चलत नर महल महल चहल पहल सब शहर टहल खैर भैर है यातें बरात की अवाई आतुर जानी जाय है ॥

देवी । अरी होहूं कौतुक निरखन कों आऊं हौं ॥

अन्यासखी । हे देवी दूनो महाराज को संभ्रम देखि आगेतें सतमोद मुनि द्वार चार के ततबीर कों द्वारपर आये हैं ॥

देवी । छाई लेवाय ल्यावो ॥

(ततःप्रविशतिसतमोदः)

पूजयित्वा देवी । कैसी बरात है कैसे नृप हैं कैसे मिलन भयो ॥

गुरुःगद्य । बिबिधि बरन बैरख ध्वज पताका निशान कुसमित कानन महान निमान आदि बाजन पाधन जांगरादिगानकोकिलादि खग कूजनिग्रमान परसत पटसुबास जलकन युत मृदु सिंधुर निश्वास आठो दिसनि औ आकाश त्रैबिधिबतास को बिलास करत सुखमा प्रकाश युत अतिहीं हुलास ऐसी बसन्त ऋतु बरात जोहत उर सुख न समात अब इत जात भगवानभ्रात का अदभुत संगम भयो ॥

(देवीततस्ततः)

सतमोदः पद । शोभासीबजगतपतिदोऊमिलनकाहिपटतरिये। उनको पटतरयेहैंउनको पटतरउन्हैंबिचारिये ॥
हितकारी औडीलधराधर समअंगसुठिसुकुमारे ।
विश्वनाथनृपसंगऔरहैं सुंदरयुगुलकुमार ॥ शो भा ॥ १ ॥

प्रविश्य द्वारपालिका । महाराज दिगजान तो सूधे भुवन हितुही के निवेसचले गये अरु सुवन मिलन लखितिनको अद्भुत सनेहप्रशंसत महाराज द्वार पर आइ मोसों कह्यौ को गुरू को जनावै अबहीं कुमारनले इतआवैहैं ॥

सतमोदः । होंततबीर को जाउं हों ॥

देवी । होंहूं झरोखनतें लखि नैन सफल करन अट्टालिकाको जाउहों इतिनिःक्रांता: ।

(सकुमार दिगजान शीलकेतुप्रवेशः)

शीलकेतुः । हे महाराज आपनो शाखोच्चार करिये ॥

दिगजानः । हमारे गुरु करैहैं ॥

सस्मितःशीलकेतुः । जाको बंश शुद्ध होयहै सो कहा आपने मुख कहत लज्जित होयहै ? ॥

जगद्योनिजः । महाराजन के पुरोहितई बंशोच्चारकरैहैं ॥

(इति शाखोच्चार करोति श्रुत्वा शीलकेतुरपि)

गुरुः । शीलकेतु बंश कहाई डीलधराधर के अर्थ आपनी कन्यादेउ ॥

भुवनहितः । इनतो बंश कहाई कन्या पाई यह काज सब मेरोकीन्हो

है दर्भकेतु की दूनो कन्या डहडहजगकारी, डिंभी दरकेअर्थदेउ ॥

शीलकेतुः। हमारी बड़ीभागि है जो मांगिके संबंध करायो हितकारी तो भुज बल कन्या पाईहै ॥

सतमोदः। आपजनवास को जाइये सकल चार करिये हमहूंह्यांके चार करैहैं (इतिनिःक्रांततः)

प्रविश्य मंत्री द्वारपालं प्रति। महाराज सों जाहिर करो मोहिं कछू अर्ज करनेहै ॥

(द्वारपालोनिःक्रांतः)

प्रविश्यशीलकेतुः आजु तुम शंकित ऐसे कहाहो ॥

मंत्रीभूपकर्णेजयति। याबिवाह ऐसो भयो जाको सुरनर मुनि सब प्रशंसा करै हैं औ सब बात सुधरिगई अबतौहबस भूप को इतना न राखिये बेगिहीं बिदाकरिये बहुत रोज आयहूं भये ॥

(शङ्कितः नृपःकिंकारणम्)

मंत्री। हों मंगनन मुख खबरि पाई है हरधनु भंग धुनि सुनि रेणुकेय आश्रम तें गवन करनहार हैं जौलों आवैं तौलों अपराजिता नाह अपने नगरको पहुंचि जायं तो भलो बात है औ मोकों बलाय दिगजानहू भूप या फरमायो है हितकारी हलधराधर की मातानिरखन को बहुत उत्कंठित है बेगिहीं बिदाकरायदेउ ॥

उच्चवस्यन्नृपः। बहुत भलो चलो बिदाकरैं ॥ (इतिनिःक्रान्ताःसर्व्वे)

(प्रविश्य सपरिकरो पराजितेशः इतस्ततः संचरति)

दिगजानः। गुरो शीलकेतु सांचे शीलकेतु हैं जिनको दाम सनमान सुभाय हमको तो भूलकहो कहाकरै जिनसो छन भरे की भेंट भई है तिनकोजनमभरि नबिसरै है ॥

जगद्योनिजः। सत्यहै शीलकेतुनृप याही भांतिकेहैं ॥

(शंकितस्त्वरमाणःबंगदेशीयछात्रःप्रविशति)

छात्रं। आमीगौतमेर्शिष्यआमाकेगुरुतगादापठैयेसन। सुने धनुष भांगा अतिरागित रेणुकेयआस्ते छेन येखन ॥ यदपितुम्हार पुत्र हैये मनभयकिछुहावैनतुमाके। बिस्वनाथनृ पखबरि जनायाछेनकरो बेनलजबिजताके ॥

अर्थ । अमी गौतमे शिष्य कहे हम गौतम के शिष्य हैं अमा के गुरु तगादा पठैये सन कहे हमको गुरु शीघ्रहीं पठायो है । सुने धनुष भांगा अति रागित रैणुकेय या छण में आवत हैं । यदपि तुम्हार पुत्र हैं ये मन भय किछु हबैन माके । कहें यद्यपि तुम्हारे पुत्र या भांति के हैं की तुमको कछु भय नहीं है । बिश्वनाथनृप खबरि जनाया छेन करिबेन तजबिज ताके कहें है बिश्वनाथ नृप परंतु तुमको खबरि जनाई है ताको बिचार करियो ॥ इतिनिःक्रांतः ।

(भूपः श्रुत्वा शंकितः विचारयति)

विस्मितःमंत्रीअंगुल्यानिदिंशति । महाराज देखिये देखिये महाउपद्रव पेखो परै है ॥

कवित्त ॥ धरातै उठावतअपारधूरिधुंधकार अंधकारकियेधार।धरनिधवा- यकै । तीरततरुनलैभंकोरनतेशाखवृन्दपूरिइन्द्रलोकहूकोपत्र नउड़ायकै ॥ अमितसमानिलोंसोबधिरकरतकानखेर सेसहर कोन्हेछप्परढहायकै। कासिबीकंपावतसोकुदुरढहावतसोहाय ऐसोपोनकैसोकारि हैधोंआयकै ॥

भूपः ॥ गुरो गुरो या कहा महा उपद्रव होय है ॥

जगद्योनिजः । असगुनी बहुत पेखे परै हैं पै मृग दाहिने ओर चले आवैहैं यातें परिणामे भलोई होयगो ॥

(ततःप्रविशतिरैणुकेयः)

अतिशंकितो मंत्री । जैसे सिंह के ससेट लघु मृगन युथ्य ससेटि जाय ऐसी सिगरी सैन पेखी परै है ॥

छन्दनराच । बिलोकि तेज योप्रचंड मारतंड चंदभे ।
धरै न बेदि बन्हि बायु बारिबेग बंदभे ॥
सुरेश लोक छत्रिबृन्द बंशते निरासभे ।
महीमहेंद्र रुद्रसे मुनिंद्र ते सत्रासभे ॥
दिपै त्रिपुंड भालमें जटा सुशीसमेंछजे ।
कुठारकंध है तुनीर हैकोदंड उसजे ॥
समुंज मेखला मृगाकोचर्म धारनें किये ।

लसैं बिशाल नैनलाल जाहिरै रसैहिये ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

(अलंकाररुद्राक्षकेअंगकीन्हे) करैदाहिनेदंडऔबानलीन्हे ॥
(हृदयमेंमहाअस्त्रकेध्यायराजैं) मिलेसांतरौद्रउइन्हैमाहभ्राजैं ॥
जो गौतम शिष्य कहिगयो तोने रैणुकेय निश्चय ते येई जाने जाइ हैं॥

यानादवतीर्य्यन्नृप: । पाद्य पाद्य अर्घ अर्घ ॥

रैणुकेय: जगयोनिज गुरु धनुष कौन तोरयो ॥

जगद्योनिज: । हितकारी ॥

रैणुकेय: (आत्मगतं) सर्वभूत हितकारी तो नारायण हैं और हर धनु भंगकरन हारदूजो कौन होइ गो ।

प्रकाशम

सवैया । पूरुबहोंइतिहासनमें सुन्योकोपिहरीमृगनारीसंघारी ।
फेरिगुरुगरदाबिकैनील कियोनमिटैवहनीलताभारी ॥
यद्यपिदागभयोहियरें रिसिसांतकरीबितीबातबिसारी ।
तोरिपिनाकनवीनकरो हरिहौसबगर्वजोशिष्यपुरारी ॥ १ ॥
रनपछिपतीसबपच्छनलच्छन बानसपच्छनतेंतोरिहौं ॥
बहुअस्त्रनशस्त्रनसागरमें परपच्छिनतच्छनहौंबोरिहौं ॥
बरबिद्यामहेशजोमोहिंदई दरशायमकुंदमदैमोरिहौं ।
गहिचक्रकोबक्रकैकाटिकौमोद कोटूकपिनाककेहौंजोरिहौं ॥

(तिर्यगवलोक्य)

छंद पद्मावती । यह काको दल भारी है ।

भुवनहित: । यहि पालक हितकारी है ॥

रैणुकेय: । कहुकिनबेगिमुरारी है ॥

शिर:संचाल्यभुवनहित: । जिन घातिनि सरजारी है ॥

रैणुकेय: । तिय मारि पराक्रम कौन कियो ॥

भवनहित: । शरएकतनैतेहिफेंकिदियो ॥

रैणुकेय: । इतनैपरभावसुनामलयो ॥

भुवनहित: । पगछ्वैजेहिपाहननारिभयो ॥

रैणुकेय: । तुमऔरकीऔरबनावतहौ शिशुकोकृतभाषिभेरावतहौ ॥

भवनहित:। तिनकासोपिनाकहुतोरिदिये॥ मुनिहोपरभावमैशंककिये॥
रैणुकेय:। अरे प्रभाव भनि भटाई कहा करै है वह हितकारी कौन है सो बताउ॥
भुवनहित:। येदिग ज्ञान महाराज के चारि पुत्र हैं तिन में अग्रज हैं॥
विस्मितरैणुकेय: आत्मगतं। चंडहू के प्रचंड दोर दंड को दंड करषत श्रम पावत रहे सो बाल बाहु दंडन तें टूट्यो काल गति जानी नहीं जाय॥
प्रकाशम्। कहा वह धनुष तोरनहार हितकरी है॥

(चत्वारोभ्रात: रथादवतीर्य उपसर्पन्ति)

रैणुकेय: आत्मगतं कवित्त। जोपैहोतोकामनामसुनतमहेशजूको धनुकोप्रनामकरिदूरिहीतेभाजतो। होतोजोसिंगारतोश्रकारताकोरसहीहै कैसेकैप्रतंचापानिगहिताभेसाजतो॥ होतोहरिहोतेचारिबाहुधारे शंखआदि वीरनरदेवनमैंऐसोकौनभ्राजतो। भारीछबिधारीहठिमोरी मनहारी यहकोहैहितकारीरूपरोमरोमराजतो॥ १॥

(अंजलिंबध्वा)

उहडहजगकारी। अग्रज ये मुनिहैं कैक्षत्रीहैं निश्चय नहीं होइ॥
हितकारी। दशदिग दुरदरदरद करनकरनघट अग्रजमद हरनहरन हारहजार करन नर्वदा धारधार कुठार सों सोनृप बीरन रनमुनि हैं॥
तत: चत्वारोभ्रातर:मुनिंप्रति। पायंपरियतु है पाय परियतु है॥

(वामकरेण शिरंदत्वा रैणुकेय:)

छंद। अरेमोहिजानैन ?॥
हितकारी। तुम्है कौनजानैन॥
रैणुकेय:। फुटेहियआनैन !॥
हितकारी। कहाआपजानैन॥
रैणुकेय:सवैया।तोरिपिनाकबकैबहुबाकचहै अबआसुहिंनाकसिधारो॥
हितकारी। बालसुभायनखेलनकोंछुयोटूटगोबनायेबनैधोंबिचारो॥
रैणुकेय:। सोबनिहैनबनैयहबात तैपानिदोजगृहपंथसिधारो॥
हितकारी। हाजिरहैंमुनिहाथहजूरमेंस्वामीसोंहैकहादासकेचारो॥१॥

रेणुकेय: । अरे कहा दया करावै है सर्व छत्रानी गर्व अर्भ वसा वासित या कुठार धार है ॥

(इतिश्रुत्वादिगजान:भूमौपतति)

(मूर्छितंपितरमवलोक्यईषदश्रुसितनेत्रप्रांत:)

हितकारी । आपसे मुनिन के बदन ऐसे बचन नहीं खुलै हैं ॥

रेणुकेय: । कुंडलिया ।भटच्चत्रियछितिछत्रपतिधनुधारीवरिवंड । तिनके रुण्डनमुंडसों पूरकियोनवखंड ॥ पूरकियेनवखंडबपुषयकयक कुठारसों । नवविद्यनदियतोषियेकोरुधिरधारसों ॥ जगजो निर्जाहितभुवनभीखिमांगनपटुलैपट । असमुनिमोहिंजनिजानु बालमैमुनिहैंउदभट ॥ १ ॥

(गुरुनिंदांश्रुत्वासक्रोधंडहडहजगकारी)

छंद । सम्हारिबैनभाषिये । मुनीशहूँनमःपिये ॥ गुरुननिंदनौमुनै । क्षमा करोदुजैगुने ॥

सक्रोधंरेणुकेय: । कुटारधारदेखिकै । करालकाललेखिकै ॥ सपच मानभक्षमो । अकच्चजच्चरच्चको ॥

दोहा । बारयकोसनिछत्रचिति कीन्हेंधरेंकुठार । दुजताइहितें मानिवे लायकमैंहैंबार ॥

सक्रोधंडोलधराधर: । यकइसबारनिछत्रिचितिजबकीन्हेंमुनिराजु । हितकारीसमच्चत्रिनहिं रच्योजानिहोआजु ॥ २ ॥

सोत्साहंरेणुरेय: । भलो कह्यो भलो कह्यो ॥

छंदतरंगिनी । हितकारित्रिभुवननाह । गुनिभयोरनउत्साह ॥ पुनिबालकोमलजानि । मनभईबातगलानि ॥ तैंबलजुवरननकीन । रनचैनभयेनवीन ॥ १ ॥

पुन:हितकारिणंप्रति । हितकारिलेधनुहाथ दरसाउसैबलगाथ ॥

(सक्रोधंडिंभोदर:मंत्रिणंप्रति)

सवैया । भाषतहैकरिक्रोधमहाअपराधकहाधनुहौंयकतोरिकै । ब्राह्मण हत्यै हनोनृपहैहय मारिकैगर्बभरयोहियभोरिकै ॥ अग्रजतीनों चलैघरकों गुरश्रीमहराजजसैनबटोरिकै । आवतहोंहूंचलोाई अहो अबहींमुनिकोमदमाटसोफोरिकै ॥

(सक्रोधंरेणुकेयःकुठारमुद्यम्यतंप्रति)

छंदपद्धरी । सुठिकठिनचापबिगनेसदंत । नाहिभयोहुतोरेश्रमअनंत ॥
भैनाहिंत्रिपितिश्रतिछुधितहोउ । सिसुगलश्रोनितश्रबधोउपोउ ॥

(सक्रोधंचयोभ्रातरःशीघ्रंधनुर्हस्ते कुर्वंति)

हितकारीछंदचौपैया ।

सुनियेसबभाई हि नबडाई क्रुद्धबिप्रसोंयुद्धकिये ।
जोगाइमरकहो नाहिंकोउकहो ताहिमारिबोखड्गलिये ॥ मुनिकहं
रिझाइबो जीतिपाइबो इहै नीति श्रुतिमांहकही । अबशीसनवावो
छमाकरावो अस्तुतिकरिकरिपांयगही ॥

(भ्रातृभिःसहप्रणम्य हितकारी)

छंद । प्रभुपालकयेबालकछमाकरी । भूलेहुंहियरोषनकबहुंधरो ॥
कारिरनजर्बाहंकुमारहिजीतिलियो । गौरीसहितमहेशहुरूपाइ
कियो ॥

सस्मितंरेणुकेयः गद्य । निजकुलकुलिदलहितकारी हितकारीबात
तिहारी हारी मन है तदपि बालक छुद्र छुद्र बचन बचन लायक
बोलत नहीं है गुरुअपकार कारमुक भंग भंग अंग बिनु कीन्हें
कैसो सहो जाय ॥

हितकारी । हो सेवक खरो खरोई हों जेहि रिस जाय सजाय सो
करि लीजे ॥

रेणुकेयः । छंद । ममभयक्षत्रियनेभोब्राह्मणनोहिपढ़ायो । भूलिश्रो
कहरनत्रसेनाहितोसोंबनिश्रायो ॥ बिनयकरतहै कहाधनुषधरि
मोहिंरिझावै । कैत्रासुहिंआवतहूंतातसमस्वांगलैश्रावै ॥ १ ॥

(गुरुपित्रोर्निंदांश्रुत्वासक्रोधंहितकारी)

छंदपद्धरी । गुरुनिंदतहौतुमबारबार । दुजगुनडरियतुहमनहिंकुटार ॥
सबशासनकरिबेकहंतयार । सोकरहुकाहियजोकारिबिचार ॥

सक्रोधंरेणुकेयःछंदनाराच । कोदंडभौरमाहबोरितेहुंभूमिइन्द्रको ।
कुठारबीचिमेबहायसैनबृन्दवृन्दको ॥ कुमारचारिजारिदेहुंक्रोधबाड़-
वाग्निमें । जोलिहुंशंभुबैरयोतिासांचयाम्दाग्निमें ॥

छंदतरंगिनी । करिक्षत्रिनयनिरमूल । जगराखिजनअनकूल ॥

(अबक्रोधहेतमिट य) तपसुचितकरिहौंजाय ॥

हितकारी। छंदगीतिका॥ जेबचनपूरुबकहेतिनतेंगुन्योगर्बहिअति है। यहबातमुनिवरभलीभाषीकरनहमकहँसत्ति है॥

सक्रोधंरेणुकेय:। रेबालबढ़िबढ़िकहाबोलतसुनीपुरुषनगतिनहीं। धरु बानधनुरनगुनेजोबलवानक्षत्रियकुलमहीं॥

भुजंगप्रयातछन्द। रनैछोनिबेदीअनीइन्धजारौं। बढ़ेकोपज्वालानृपैहोमिडारौं।कुठारैस्रुवाबालआपुषपधारौं।दोऊबिप्रकोसेवकैमूंड़िडारौं॥

सातिक्रोधंहितकारीछंद। अबलोंबिप्रमानिरिसिरोंकोपुनिपुनिगुरु निंदनैररै। डिंभीदरदेदेधनुमेरोदेखहुंमुनिधोंकहाकरै॥

सक्रोधंरेणुकेय:। वहधनुधरितैयुद्धनलायकयहबरहारिधनुहाथधरै। औसरकरकरिजोरिशरासनऔसरबहिरनकोनिबरै॥

(रेणुकेयहस्ततोधनुराकृष्यआरोप्यचहितकारीटंकरवति)

ततःजगद्योनिजंप्रतिभुवनहित:।

कबित्त। डोलीधराबारबारदिग्गजचिकारकीन्हीं हालिगोहजारसीस कच्छअकुलान्यो है।दैत्यबिकरारभयमयहिअकारभयेपारावार बारिबेलछोड़िछहरान्योहै॥जैजैशब्ददेवदारसहितपुकारकरैं प्रलयसंसारहोतमनअनुमान्यो है।देखौयमदग्निबारकरतेंकुठारै गिरयो सरिसहजारकद्रराजवारजान्यो है॥

हितकारी। छंदतरंगिनी॥ सरजुरयोयहिकोदंड। किनलेहुपरस प्रचंड॥ तबनिजनराखेहुआघु। कतकंपतन्हातसोमाघु॥ अबरनसोमंडियऋष्य। ममगुरुनिकरियेशिष्य॥ जेहिजोर कियोनिछत्र। प्रगटहुसोकरकरिअत्र॥ १॥

(सभयरेणुकेय:)

चौपैया। जेपुरुषपरेसाजासुनिदेसारबिससिउड़गनपवनचलै। सबकेउपकारीजेहितकारीपरमपुरुषजेहिजसअमलै॥ तुमहौंतेचेतनसबहीकेतनहोंकेहिबलतेंयुद्धकरौं। अपराधमहानाभोभगवानाक्षमहुक्षमहुंप्रभुपांयपरौं॥

हितकारी सो०॥ यहअमोघसरमोर हतहुकहाअबभाषये।

(सर्वोपकारिणंहितकारिणंबिचार्य)

रैणुकेयः। देखिदयाढगकोर मोरिस्वर्गगतिमारिये॥

स्वर्गगतिंगतांज्ञात्वा। हों तप करन जात हौं यह रूप तुम्हारो हमारे हिये में बन्यो रहै॥ (इतिप्रणम्यनिक्रांतः)

(ततःजगद्योनिजः भूपमुत्थाप्य वृत्तान्तंश्रावयति)

सहर्षभूपः॥ आपसे जाके गुरु हैं ताको सकल भय नेवारनहो यामें कहा आश्चर्य है अब आशु अपराजिता की सुतर सवारजोड़ी भेजिये औ बरात चलाइये। इतिसर्वेनिःक्रांताः॥

(सभृत्यमंत्रीप्रवेशः)

मंत्री। गलिनगुलाबसिंचावो महल काल कलसन नवल पताक चढ़ावो सकलस सगान सवाद्य कन्यन आगे चलावोबरात निकट आई॥

(नेपथ्येकोलाहलः)

भजन। सहितबरातभूपइतआवैं। टेक।
खैरभैरयुतशहरलसतअति रहसिबिहंसिनरधावैं॥
चलौचलोलोचनफललीजै अबआनंदमितिनाहीं।
ललकतरहोकुंवरलखिबेकों लखबवधुनसंगमाहीं॥
उतरहिंचढ़हिंअटनरतकंठित मातनसुखकिमिकहिये।
विश्वनाथऊपरबरषनहित लाजामोतिनगहिये॥ १॥

ततः। प्रविशंति एकतः नीराजनंगृहित्वा सपरिवारादेवाअन्यतः स बधूकाः शिबिकारूढ़ाः कुमाराश्च।

सखीसखींप्रतिभजन। परछतमैयनमुखअधिकाई। टेक।
आनंदजलउमगतअंबकयुग भूलिभूलिविधिजाई॥
सुतसुतबधुनतकाहिंजनचाहहिं हगमगाहियहिसमाई।
विश्वनाथमुखचूमितोरितृण पुनिपुनिलेहिंबलाई॥

पुरोहितः। सुत सुत वधू देव दरशन कराय सोवावो॥

इतिनिःक्रांताःसर्वेप्रथमोकः॥ १॥

इति श्री मन्महाराज धिराज वांधवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह देवजू कृतआनन्दरघुनन्दन नाम नाटके प्रथमोङ्कः॥

अथ द्वितीयाङ्क प्रारंभः ॥

(शिष्य जगद्योनिजप्रवेशः)

शिष्य । गुरो रबिराक्षस रनरुधिरकोललाई पश्चिम दिशि छाई भाई फेरि मार्त्तंड शरखंड तें खंडखंड करिउड़ाये अस्थिखंडये नभपेखे परैहैं ॥

गुरुसस्मितं । यह ब्रह्म कुंडजा तट हों संध्या करों होंतुमहूं जाइ संध्या करो ॥ (इतिशिष्यःनिःक्रांतः)

(गुरुःसंध्यावन्दनंनाटयति प्रबिश्य ब्रह्मकुंडजा प्रणमति)

गुरुः । पुत्रि हित कारिणि अनुरागिणी भवेत्याशिषंदत्वा । पुत्री दीन मनकाहेहो ॥

ब्रह्मकुंडजा । हों पिता मह पा पूजन गई हुती ताही समय इन्द्रादि सुरजाय शीस नवाइ बिनय करी ॥

जनक । दिगंबर दरन रन कारन सर्व भूत हित हितकारी परम पुरुष अवतरे अबतिय संग संग बिहार हार रचनि रचनि चितकी है, सुनि धाताकह्योहों उपाउ करोहों सुनि मेरी मति अकुलानी ॥

गुरुः । तुमकों तोभूरि भावतेंभूलिशोक भयो है अपराजिता में हित कारीको बिहारनित्यहै अरु क्तिशक्तिहैदोउ बात करेंगे ॥

(सहर्षब्रह्मकुंडजा अंजलिंबध्वाकिंचिद्वक्तु मिच्छति)

जगद्योनिजः । हस्तसंज्ञयावारइत्वा ॥

आकाशेकर्णन्दत्वा । मोकोंबानीकी बानीयौंसुनीपरी, तुमदिगजान पैं जायडहडह जगकारी, डिंभोदरकों काश्मीरको पठवाइयो औ उपायकरि भपसों हितकारी कों युवराजपद दिवावत बन दिवाइबो अरुहित कारिहूकोयाही रुखहैहों कुटिलाकेकंठ बैठि सुरकाज सिद्ध करन जाउं हों पुत्रीअबतुम जाहुहोंहूं मातुआज्ञाकरन जातहों ॥

(इतिनिःक्रांतौ) (प्रविश्यआदिकबिः)

स्वगतं । शिष्य जलफल फूलदल मूल ना लैआयो अरचन कोंआवारभई ॥

(ततःप्रविशतिशिष्यः)

आदिकविः । अरेयेतीबिलम्ब करि अब ठगिऐसो कहारह्यो है ॥

शिष्यः । अंजलिंबध्वा ॥ हौंयाम यामिनी बाकी रहे रवि कलिंदजा संगम अस्नान करनगयो हुतो तहां बड़ो आश्चर्य लख्यो ॥

गुरुः । किंकिम् ॥

शिष्यः । सरूप धारिदोनों सरिसंवाद कारिरहीहुतीं ॥

गुरुः । कथंकथम ॥

शिष्यः । चीरवतीपूंछी तुमको तपिताहीसो पितुपदपूजन गईं हुतीकी और कछु कारण है कलिन्दजा कह्यौ हों पौउपरसतैं तपितहूं यौंहीं शंका करी तिनकह्यो अतिसंताप ब्रह्मकुंडजाधारि दरिद्रीहूं बसतो हुती सो गदगद गर कह्यो काश्मीरी दिगजान सों बरदान मांगि आपने सुत कों राजलियो अरु सबधूबंधु हितकारी को बन दियो मंत्री यान चढ़ाइ त्रिपथगा तीर लों पहुंचाइ पुर आइ सुधि दई सुनि भूपको परमगति भई अपराजिता नेवासिन अतिशोक आसुन सों बढ़ि हों आप कों मिली आइ तासें हों कलिंद कुमारी हौंहूं उष्णता धारन करी है चीरवती बड़े शोक की बात है सुनि हों ठगिसी रही अब बनितन को बिश्वास काहे को कोई करि है ॥

आदिकविः । हा भूप दिगजान हा सुरपति धरम यान हा देनदान महान हा भगवान सम ज्ञान हा मुनिनकारी सन मान हा करन पञ्चनन प्रमान हा यश जाहिर जहान ॥

(इतिनिश्वसततःस्ततः)

शिष्यः । पुनि चीरवती पूछ्यो हितकारी कहां लों आये होयगे कलिंदजा कह्यो भास्कर क्षेत्र में याज्ञबलक्य शिष्य ते सत कारित ह्वै मेरे पार उतरि आये अब नहीं जानो धों कहां हैं यह कहि मोकों जानि दोनों जल में प्रवेश करि गईं ॥

आदिकविः । शोक तो बड़ोई है पै यामें एक हर्षऊ है ॥

शिष्यःसविस्मयं । गुरो शोक में हर्ष हौं न समुझ्यो ॥

गुरुः । वत्स चाहिये तो हितकारी ह्यांऊं आवैं ॥

नेपथ्ये। भजन। पथिकतुमकहहुरहहुकेहिदेश। टेक।
असहमदीखसुन्योनकबहूं कोउनखसिखअनुपमबेष॥ बनकंटकित चलतितुकुमारी प्यादेसंगतुम्हारे। बिश्वनाथसतिमानहुंकांटे गड़त करेज हमारे॥ १॥

(बंधुबधूसहितहितकारिप्रवेश:)

शिष्य: पुरोवलोक्य। गुरो हितकारी तो आइही गये॥
गुरू:। अहो भाग्य महो भाग्यं अर्घपाद्य ल्यावो आतिथ्यकरैं॥
हितकारीमुनंप्रणम्य। बास बताइये॥
आदिकवि:। वत्स तुम्हारो बास तो हमारे हिये में है दूसरो बास ह्यांते दछिन कछु दूरि बिचित्र शिखर गिरिवर है॥
गद्य। होतहीं दरशन सांत रस बरसन मुनिन मन करषन संतत सुख सरसन लतन तरुन कुंजन छबि पुंजन सुदल फल फूलन मृदु मूलन संघन बनन खग कुल वृन्दन मंजु अलि पुंज गुंजन लुंज मन करिन दरिन दरिन झरनम झरन जल कनन दुरदिन करन जगन मृगन गनन संकुल सुधा सरिस सलिल सहित अति ललित कूलन बलित बिकसित बरन बरन अमल कमल कलित कल कारंडव चक्र वाक जाल मराल माल कूजन मुद मूलन तकत त्रैताप उन्मूलन छबि भरितनि सरितनि महा मंडित है॥
हितकरीश्रुत्वासहर्षं। आज्ञादीजे॥
मुनि:। आजु के रोज ह्यांई रहो रूप लखाय हमारे नैन सफल करो॥
हितकारी। बहुत भली है मुने जब तें हैं। आये तबतें अपरा जिता की खबरि नहीं पाई आप त्रिकालज्ञ हैं बुझाय सही करिये॥
मुनि: ध्यानंनाटयित्वा। डहडहजगकरी सबंधु पुर आये हैं और वृत्तांत सब कछु दिन में आय वेई कहैंगे॥
हितकारी। आप सों संबाद करत यामिनी जात न जानि परी प्रात सूचक पच्छि अचो धुनिकरि रहे हैं मानो पंथिन को आतुरी करावै हैं आज्ञा पाऊंतो बिचित्र शिखर जाऊं॥
मुनि:। चलो ह्वांलों हों पहुंचाइ आऊं॥ इतिनि:क्रांता:सर्व्वे।

(सकुटिलाकाश्मीरीप्रवेशः)

काश्मीरी । सखी काज तो सब सुधरयो पै एक अब यही बाकी है डह डह जगकारी को आइबो ॥

कुटिला । परम सुखद खबर कही हौं चार गुरु के ह्यां आयो है ताते होहूं सुनि आई हौं को डह डह जगकारी हालई आवन हारहैं ॥

(डहडहजगकारीप्रवेशः) माई पांय परो हौं ॥

शिरआघ्रायकाश्मीरी । पूत सिगरो काज सवांरि राख्यो हौं ॥

डहडहजगकारीविस्मितः । कौन ॥

काश्मीरी । सर्वं वृत्तान्तं कथयति ॥

(डहडहजगकारीश्रुत्वामुर्छं नाटयति)

काश्मीरी । हे पूत भूप शोचन लायक नहीं है अरु काल सों काहू को कछु बस नहीं है ॥

डहडहजगकारी ।

पद ॥ हितकारीमहंदोषगुनतविधि कैअकाशकीपाटी ।
दियेशून्यसोईयहि उड़गन अवलिनजथयहिआंटी ॥
लखिश्रमखेदखरीधरिदीन्हो सोईससियहभायो ।
बिश्वनाथउनखोजिनपायो तैंपताउकहूंपायो ॥ १ ॥

अरी तेरी खीभि में काटि डारतो माता भई कहा करौं ॥

कुटिला । अरे छोहरा उपकार किये अपकार मानै है तेरे लिये नीतिसार निचारि कै मैं बुद्धि दई है तब यह काज भयो नातरु तेरी राज हान वारो हुतो ॥

डिंभीदरःसक्रोधं । आः पापे तहीं सब अनर्थ को कारण है ॥

इतिकेशानगृह्णाति । (दृष्ट्वा काश्मीरी)

सवैया । महिमाइंकढ़ीलतकेशगहें मुटकाबहुलातनिमारत है ।
कछुहोरनपरिअहैतुम्हरे बहुबारउठाइपछारत है ॥
इतनाहींकलंककोशोचकरी तियनासेननर्कहिहारत है ।
असआसुनसंगकढ़ीईचहैं अबहूंनहिंरोषसम्हारत हो ॥

डिंभीदरः । याको फल दै फिरि तोहूं कों समुझाऊंगो ॥

(इतिश्रुत्वा श्राद्धोरीसभयंनिःक्रांता:)

डहडहजगकारी । नारी बध किये मोकों हितकारी को भय लगे है ॥

(श्रुत्वाडिंभोदरः मुंचति)

डहडहजगकारी । चलो कुशला मा के पास ॥

इत्युभौपरिक्रामतः । (प्रविश्यकुशलरोदिति)

भजन । हितकारीहितकारीछोटा रखतप्रानसमभाइनिकों ।
बधबंधुयुतकाढ़ततेछिनहिं कसक्योंहियोकसाइनिकों ॥
मंत्रीगुरु नृपबैनवानसम नहिंयहि हृदयपषानगड़े ।
बिश्वनाथबिधिकहाकरोंअब चहुंदिशिदुखसागरमड़े ॥

डहडहजगकारी । कुशला माई डर सीस कूटत क्योंई चलीआवे है ॥

इतिउपबृत्यबिलपंतौपादयोर्नियततः । (कुशलारत्थाप्य)

भजन । पूततुम्हैंबिनकियतुदमातायेसोहालहमारो ॥

डहडहजगकारी । छोड़ोसंमतमोरकढ़ौनहिंभोगेहुंनर्कहजारो ।

कुशला । तुमसमकौनहोतजगमाहींअवधीरजउरधारो ॥

डहडहजगकारी । बिश्वनाथहितकारीबिनुकिमिजीहौंमातुबिचारो ॥

प्रविश्यगुरुहितारगदगदं । गुरु कह्यो है धीरजधरि पितु कृत्य करें फिरि जो उचित होइगो सोकरेंगे ॥ इतिसशोकं सर्वेनिःक्रांता: ॥

(ततः प्रविशतिसशिष्यो जगद्योनिजः)

जगद्योनिजः शिष्य प्रति । डहडह जगकारी जबतें पिता को कर्म करि चुके है तबतें मातु कृत कर्म लज्जा तें वदन नहीं दिखावे हैं मेरी आज्ञा सुनाइ तूं लेवाइ आवे ॥

शिष्यस्तथेतिनिष्क्रांतः ।

(प्रविश्यडहडहजगकारीदंडवत्पादयोर्निपत्य)

रोदनंनाटयति)

गुरु: । वत्स धीरजधरो अब तुम्हारे आधार पुर है पितु दई राज्य पालन करो ॥

(इतिश्रुत्वा डहडहजगकारी अधरस्फुरणंनाटयति)

गुरु: । वत्स वत्स दिगज्ञान भूप के पूत हो हितकारी के भाई हो जो कछु कहिये कों होय सो धीर धरि कहो ॥

(व्याघ्राऽम्बरदुकंठं डम्हडम्हजगकारी)

छंद । आमुनिमिसुकढ़िबारिबारिमिथिमिलनकियो । महाजननिक्रत अघमोहिकरिहततेजादियो ॥ लेतहिंलेतउसासबयारिनश्रेपहों । सुमिरतहितकारीसरूपअवकासनहों ॥ शोकआगिमहिअंगजरनो तनअहैबनो । जरीरज्जुकोखाखरहोऐठनहिंमनो ॥ पंचतत्वबिन भयोराजिअबकवनकरै । बिश्वनाथदरशाइयप्रभुपदशोकहरै ॥ १ ॥

पद । हायहौं एकहुंकामनआयो । टेक ।
हितकारिहियुतबंधुबधूमा पद्मकंटकितचलायो ॥
जोहोतोसंगहिबनजातो पीठिपिछाइचलीतो ।
हाहाबिश्वनाथहितकारी हमहूंप छिसिधीतो ॥ १ ॥

(इतिमुर्छांन्नाटयति)

गुरु: । धीर धरो धीर धरो ॥

डम्हडम्हजगकारी । गुरो हितकारी पद दरसाइये याहि में मेरो प्राण रहै गो ॥

गुरु: । भली कही भली कही अब सबकोई ह्यांई चलें जो फिर आवै तो सिगरी बात सुधरि जाय ॥ इतिनिःक्रांता:सर्वें ।

(सबंधुबधुहितकारिप्रवेश:)

हितकारीमहिजांप्रति । यहविचित्रबनमेरेमनको आकर्षणकरैहै ॥

महिजा । याके बिबिधि बिहार स्थल में सुख ही सों काल कटि जाइ गो ॥

(डीलधराधर: कुटींविरचयति)

हितकारी । ये डीलधराधरआछीकुटीबनाई या निपुनाईकहांपाई ॥

डीलधराधर महिजांप्रति । आप यह मारे मृगन को मासु सुखाइये तब ताईं हों और मारि ल्याऊं ॥ इतिनिःक्रांत: ॥

हितकारी । हे शीलकेतु कुमारी तिहारे लिये हों आछे आछे फूलन के हार गूंदत हों ॥ इतिगुंफति ।

(वायसप्रवेश:)

महिजा । पीउ यह कैसो काग है आमिष खाय खायजाय है जो हों हांकों हों तो मोकों चोंच तें चोंथि भजै है ॥

क्रुद्धहितकारी । आः पाप तेरी दुष्टता को फल यह सींक को सर देई गो ॥ इति निःक्षिपति भीति वायसो निःक्रांतः ।

(डीलधराधरप्रवेशः)

मृगान्समर्प्य । अग्रज आखेट खेलत एक मुनि सों भेंट भई ताकी बानी सुनि शंका भई है ॥

हितकारी । किंकिम ॥

डीलधराधर । मुनि मे सों कह्यो अग्रज को एक सींक को शर कोई चलायो है सो वाके पीछे पीछे धावै है वह काक सर्व लोक फिरि आयो कोई नहीं त्राण कियो मुनिहों मन में बिचारयो ऐसो तो मेरे जेठे भाईही को बाण है यातें त्वरा करि आयो ॥

हितकारी । महिमा को हाल नहीं देखो हो ॥

हृष्टडीलधराधरः । आः पाप येतो सर्व भूत हितकारी हैं हों होतो तो याही ठौर तेरो शीस काटि डारतो ॥

प्रविश्यबिकलोवायसः । शरण शरण त्राहि त्राहि पाहि पाहि रक्षा करो रक्षा करो ॥

हितकारीसाभैः । मेरो शर अमोघ है यातें एक नैन दे अयन के जाय ॥

काकःपद । होतुमप्रभुसांचेहितकारी । टेक ।

मेरोअघभारोभुलायकै नाथकृपाकीन्हीअतिभारी ॥ एकआंखजो सरसोलीन्हीजानिहेतुसोलियमनमाहीं । बिश्वनाथजातेंयहभूलिहुं कोनहुंपापकरैपुनिनाहीं ॥

इतिप्रणम्यनिःक्रांतः ॥

डीलधराधरः । बड़ेभाईबनजीव बड़े भय तें ब्याकुल भजे चले आवै हैं धौं कहा कारण है ॥

हितकारी । ऊंचे तरु चढ़ि देखोतो ॥

(तथाकृत्वाडीलधराधरः)

छंद नाराच । उठो उठो को दंड चंड बान लेहु हाथ मैं । मजीहिजातमारतंडधूरिधुंधगाथमैं ॥ तुरंगरंगरंगभेमतंगअंगसैलसे । सुजानबृन्द मेंसुजानबीरइन्द्रसैलसे ॥ सुभांतिभांतिकीपताकपांति

नाकछांवती । पदातिजूहकेकहैंनजोहपारपावती ॥ अहोअनी अपारयद्विंअद्रिबोरआवती । हियेसुधीररंगकीतरंगिनीबढ़ावती ॥

छंद त्रिभंगी । डहडहजगकारीसजिदलभारीछुद्रबिचारीवातहियें । दोभाइनिमारीकरहुसवांरीराजिसुखारीमानुकियें ॥ अबइंधनुधारीबरधरभारीतासुगवारमेटतहौं । प्रभुलहहितकारीत्रिगुसमचारीसैननसारीसेटतहौं ॥

(उत्तीर्य्यधनुरारोप्य)

छंदनराच । समुद्रवाहुदंडयेकोदंडभौंरभायके । महानवानवृन्दरञ्जुरमिं कोउठायके ॥ संग्रामकेरमंगमेंकुबंधुबेजफेरिकै । छुवैगि आयपाय आसुसैनविम्बघेरिकै ॥ १ ॥

आः देखातो कालकी विषमता पनहीं सीस चढ़न लगी ॥

(दंतैरधरंसंपीड्य)

दोहा । डहडहजगकारीमहाकरीढिठाईआय । कोटिकिईरनछनकतौ देहौंसबसमुझाय ॥ १ ॥

पुनिः । धनुसंचाल्य खड्ग मुख मवलोक्यच साट्टहासम् । जान्यो जान्यो जान्यो यह हमारे सुकृत को फल है भूपकृत अनीति याही रीति में मिटन हारी रही है ॥

सवैया । आजुभरोरनरंगनमेंरनअंगनमेंधनुधारिकैधैहौं ॥ क्रोधकेभारमें भूजिसबै दलभस्मअभागिनिकेअंगलैहौं ॥ बंधुदोउमृगबंधु बनाय दिगंबरकैकेदिगंतपठैहौं । दापकोबंदिमेंराखिकैआजु बलोबड़ेभाईकोराजकरैहौं ॥

छंदगीतिका । करिकोटिकायनकालरुद्रहुकोसहायहुकोकरै । यहसैन सर्पिषसायतोममबानबन्हिहिमेंबरै ॥ जिमिलवहिलेत लपेटिलगर कलंककुलके दोउधरों । पुनिकाममीर पसदलछतिमैं कालिकाखप्परभरों ॥

पद । दीजैग्रासनबेगिगोमांई जाइतुरतगहिल्याऊं । ताहीकरकुटिलाकी रसनाकाड़नहनिकटबाऊं ॥ डहडहजगकारीजननीके आंसुनसरित बहाऊं । निजरिसआगेकुशलाहियरेकी आगीआसुबुझाऊं ॥

(इतिप्रलप्यधावन्तमिवालोक्य)

हितकारी । काहेको एती रोष करो हौतुह्मारोसीप्रीति मोपरउनहूंकी है डहडह जगकारी लेवाइबे के हेत आवतहौंइगे ॥

(ततः प्रविशति स गुरु मंत्रिबंधुः डहडह जगकारी)

डहडहजगकारी । पाहि पाहि इति दण्डवत्पादयोः पतति ॥

(समुत्थाप्य हितकारी गुरुपादयोः पतति)

गुरुराशिषंदत्वा । अब तुम जाहु पितु कृत्य करि मातन सों भेंट करि आवौतौजौंहौं याआश्रम मेंआसीन हौं ॥ इति स शोकं सर्वे निःक्रान्ताः ॥

(नेपथ्ये रोदनकोलाहलः)

गुरुःशिष्यम्प्रति । रोदन कोलाहल होयहै यातेजान्यो जायहै को हितकारीपितुकृत्यकरिमातनसों भेंटकरैहैं ॥

(बंधुभिः सह हितकारी प्रविश्य रोदिति)

गुरुः । मृपशोचन योग्य नहींहैं यह अवसर और है धीरधरि सब को धीर धराय डहडह जगकारी जामें डहडह होय सो करो ॥

हितकारीअंजलिंबध्वा । पितुमातु आज्ञाप्रथमहीं बनगवन की है अबजो आप बिचारि कै कहिये सोकरौं ॥

जगद्योनिजः सविचार मधो मुखस्तिष्ठति ॥

(डहडहजगकारीक्षुधासहरोगात्वाअनशनंनाटयति)

हितकारी । धरणा करनो क्षत्री को धर्म नहींहै पाप लग्यो उठो उठो अल छुवोमोकों छुवो ॥

(डहडहजगकारी जलंस्पृष्ट्वा रोदिति)

हितकारी । शोककाहेकरो हो जो बिचारि कै तुमहीं कहो सोहौं करों ॥

डहडहजगकारीभजन । मोसोंअबनकछूकहिजाई । टेक ।
जोयहकहौं करियप्रभुऐसे सेवकरीतिमसाई ॥
जौफिरिचलतनआपएेनको प्राणकढ़तअकुलाई ।
विश्वनाथअवलंबदासहित आपुहिसमुझिबनाईं ॥

हितकारी । ये पादुका लैआउइनसेंहमारो प्राप्त्यतुमकोबनीरहैगी ।

(साष्टांगमभिवन्द्य पादुके शिरसिकृत्वा)

उड्डड्डजगकारी । अवधि बिताय जो आयहैं तौजीवतनहींपायहैं ॥

(गुरुपदौस्पृशीत्वा)

हितकारी । दासजानिमोकों न भुलायबी ॥

आशिषंदत्वागुरुः । पापाहूं की काहूको सुधिभूलैहै ॥

हिंमीदरःपादयोःपतित्वा बाष्पाऽवरुद्धकंठम् । मोकोंतोसंग लेचलिये ॥

हितकारी । डड्डड्डजगकारी कौं पादुका दई है तातें तुमहूं को मेरी प्रागट्य बनोरहेगो मातनकों शोक न होन पावै ॥

(इतिगुत्वानिःक्रांताः)

हितकारी । डील धराधर इहाँ गुरमातु बंधुनकें वियोग भयो है या थल आछो नहीं लगै अब महामुनि अनीर्ष्यापतिके आश्रमचलिये

(इतिनिःक्रांताः)

(अनीर्ष्यासोमजनकप्रवेशः)

अनीर्ष्या । महाराजऐसो सुन्योहैकी हितकारी, महिमा, डीलधराधर, विचित्र शिखरतें इहांको आवैं हैं ॥

सरोमांचगद्गदं सोमजनकः । अहोभाग्यमहोभाग्यम् ॥

(हितकारीप्रवेशः)

महिमा । अनीर्ष्या तो परमवृद्धा है ॥

सवैया । केशसपेतलसैंसिरके मुखमाहवलोकसुकेपलखोलै ।
नाहिनदंतसमातिहैस्वासन ठोढ़ीबढ़ीबदतैसुरडोलै ॥
लंकलचीरससकायकपै लकुटीकरपल्लवहैसुठिलोलै ।
खालभुलैपैदिपैअतितेज छपाकरकीछबिछामनिचोलै ॥

हितकारी । मुनिन को वह शरीर किशोर होय है ॥

सोमजनकः । येतो आइही गये अर्घ पाद्य ल्याओ आतिथ्य करें ॥

सवधूबंधुहितकारी । पायं परियतु है पायंपरियतु है ॥

दंपती । अभीष्ट सिद्धि रस्तु ॥

सोमजनकः । शुभआगमन भयो तुह्मारे दरश की हमारे बहुत रोज तें आकांक्षा रही है सो आजु पूरण भई ॥

हितकारी। दण्डकारण्य की गैल बताइये मोर जाइंगे॥
मुनि:। हां जान्यो जो आप कार्य करन जाइ हैं अग्नेय दिशा ह्वै बानभंग मुनि कों दरश देत चले जाइबो॥
अनीष्यो। पुत्रो ये पट तुम्हारे लियें संचि राखे रहे सों भूषत करो॥
हितकारी। अबसंध्यावंदन को समय है॥
मुनि:। चलो होहूं चलों॥

(इतिनि:क्रांत:सर्वेंद्वितीयोक:)

इति श्रीमन्महाराजाधिराज बान्धवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव कृत रघुनन्दन नाम नाटके द्वितीयोङ्क: ॥ २ ॥

अथ तृतीयाङ्क प्रारम्भ:॥

(मैत्रावरुणि: प्रवेश:)

मैत्रावरुणि:। (आत्मगतं) दरशण को शिष्य नहीं आयो बहुत राज भये कहा कारण है॥

(शिष्य:प्रवेश:)

शिष्य:। दण्डवत प्रणमति॥
गुरु:। अरे कौन कारण ते देर भई तोकों॥
शिष्य: महाराज हितकारी सबंधु बधू मेरे आश्रम में आये तिन के संग संग मुनिन के आश्रम बतावत दशवर्ष फिरो यातें येते दिन बीते॥
गुरु:। अरे मेरे इष्ट केहिं मारग ह्वै तेरे आश्रम आये॥
शिष्य:। जब आप हम एक ठौर रहे तब सोमजनक को शिष्य हो कहिगयो तै की हितकारी सबंधु बधू हमारे आश्रम आये हैं ह्वांते चलि जविसुत को बधकरि बानभंग के आश्रम आये हैं मुनि तिन को रूप निहारत निहारत जोगाग्नि में आपनो शरीर जारि दियो ह्वांते दण्डकारण्य मुनि को संग लिये मेरे आश्रम आये फिरि होहूं संग लग्यो॥

गुरु: । सगद्गदं कहु कहु इहां कब आवैंगे ॥

शिष्य: । आवतई हैं हों आगे ते खबरिही जनावन आयो हौं सो अब जाइ लेवाइ लिये आवो हों ॥ इतिनि:क्रांत: ॥

(सवधूबंधुहितकारी प्रवेश:)

मेघावरुणि: । अर्घल्याल्यावो पाद्य ल्यावो एतो आइही गए ॥

सवधूबंधुहितकारी । मुनि पायं परियतु है ॥

मुनि: । चिरंजीव तुम्हारे दरश लिये हम इहां टिके रहे हैं ॥

हितकारी । अब कहूं हमको बास बताइये जहां बसि बनबास के शेष दिन बितीत करें ॥

मुनि: (पदमरहटीभाषाको) गोदातटबनअहेचांगला ।

दलफलमूलमृगापरिपूरन देनाराजियजीनमांगला ॥

सुन्दरपंचवटतलेपानची कुटीकरयुतकुसुमबिसाला ।

विखनाथमीगोष्ठिसमुभलो अतदेवाचकारियभाला ॥

अर्थ । चांगला कहे सुन्दर, देनारा कहे देवैया, मांगला कहे मांगै, पानची कहे पत्रकी, मो कहे मैं, गोष्ठी कहे बात, अत कहे अब, देवाचे कहे कारिय, भाला कहे देवतन के कार्य भयो। या अछेद्‌धनु या अभेदबखतर ये अक्षय तूनीर लेहु ॥

इत्यर्पयित्वा । वांछित तुम्हारी सिद्ध होइ पच्छिपति सून को दरश देत जाइयो हों अब सुरपति पास जातहों ॥

(इतिनि:क्रांत:सर्वे) **(प्रविश्यसौपर्णि)**

सौपर्णि: (स्वगतं) आजु मोको सगुन बहुत देखे परे हैं मुनि मुख सुनि जिन राज कुमारन दरश हित बहुत बरसन तेहों इत टिके हों ते आवन हार तौनहीं हैं ?

(प्रविश्य हितकारी)

हितकारीपुरोवलोक्य । हे डोलधराधर या शैलसमान पच्छी रूप धरे कोई राक्षस तो नहीं है ॥

श्रुत्वासत्वरंसौपर्णि । अहो भाग्य महो भाग्यं हों तो तुम्हारे पितु को सखा हौं आवो सिर सूंघो जब तुम शिकार को जैहो महिजा को ताके रहिहों ॥

हितकारी । तुम तो हमारे पितु के बरोबर हो काहे न कहौं या निर्जन बन में तुम्हारो मिलन मेको अलभ्यलाभ भयो ॥

सौपर्णि: । ये पंचवट जे देखे परें तहां कुटी करो होहूं निकट टिकन जाउ हौं ॥ (इतिनि:क्रांत:)

हितकारी परिक्रम्य । डौलधराधर कुटी बनावो ॥

डौलधराधर: बिरच्य । महाराज तयार है ॥

हितकारी । छंद शार्दूलविक्रीडिता ।

नीकीपंचवटी महासरितटी फलौंफबैसंसटी ।
बेलींबेनिलटी सुपच्चनिपटी रागैपरागैठटी ॥
तापैनासभटी आनन्दउघटी दृष्टैहगैदुर्घटी ।
कल्पोतुल्यघटी जोइयहिहटी सोहैकुटीस्वर्नटी ॥ १ ॥

(फिरि देखेयह)

गद्यसंस्कृत । नाग, पुन्नाग, साल, ताल, हिंताल, रसाल, तमाल, कृतमाल, बकुल, सरतिल, कामल, ककुटज, लकुच, तक्कोला, ऽकोल, कोल, कंकोल, विकांक, कपित्था, ऽश्वत्थ, कंकत, बिकंकत कदंबो, दुम्बर, कुरब, कमक, बक, कुंद, तिंदु, चंदन, स्यन्दन, चंपक, चांपेय, पनस, बेतस, पाटल, प्रियाल, पलाशादि, वृक्षाच्छादित गुच्छ लच्छ बिचक्षु रनुक्षण मानन्दयाति काननम् ॥

गद्य भाषा । भलनिरमल जल कुसुमित सकल रंग कमल कल अलि कुल बकुल कराकुल कोकाबलि कोलाहल लोनी लतनि कुंज कढ़ित अनिल लहि लहि ललित लहरिनि नबीन पीन पाठीन उछलनि कलनि कलित सुधा रस सर सरस बलित सुखभरित सरित मनहरित बिलसित है ॥

भजन । पश्चिमदिशियहअवनसुहाई । टेक ।

निजपतिरबिआगमनजानिजनु कुमकुमकायलगाई ॥ श्यामकरत संसार सपदिहोंसरस सरवरीआई । हियपरसनरत्कंठितअति जनु रससिंगारछबिछाई ॥ तारागननगगनछबिजनुघनसुमनन सेजबिछाई । किरिनिपरसिसुरपतिकेदिशिजो पेखपरतिउज-राई ॥ आवतमनभायकनिसिनायक पथपांवड़िबिछबाई ।

विश्वनाथअबआइसुधाकर रमिहिंसुधाधरसाई ॥
रैनि भई अब तुम हूं सोवो ॥
डीलधराधरः। बहुत भली पायं परियतु हैं ॥
(इतिपृथक् कुटयां शयनंनाटयति)
हितकारी भजन। जागोभाईप्राणपियारे। टेक।
अवलोकहुआकाशकेसमें मलिनकुसुमयेजिततिततारे ॥
भयेमलगजेचीरचंदकरा प्रसरितपवनस्वासगुरधारे।
विश्वनाथविधुसंगविहरिनिशि गमनतिकरिसुखसारे ॥
डीलधराधरः सत्वरमुत्थाय प्रणम्य। आज्ञा होइ ॥
हितकारी। चलो गोदातट स्नान करें ॥ इतिसर्वे निःक्रांताः।
प्रविश्यशुकःआत्मगतं। हितकारी ह्यां नहीं हैं कुटीतें काहू को वास जानों जाय है कदाचित् हितकारि ही या नित्य कृत्य करन गये होंइ ॥
(सवधूबंधुहितकारिप्रवेशः)
शुकः। पायं परियतु है पायं परियतु है ॥
हितकारी। अरे हिरावन तैं कहां ॥
शुकः। मोको कुशला मातु खबर लेन पठायो है ॥
हितकारी। अपराजिता के सब मोटे हैं?॥
शुकः। ब्रह्मकुंडजा मोटी है ॥
हितकारी। कहा रत घड़ी बरषा भई ॥
शुकः। आपके बिरह तें सबनिके अंसुपाथ प्रवाह पय पारावर ताको धारन कियो है ॥
हितकारी। डहडहजगकारी को का दशा है ॥
शुकः भजन। जबतेअपराजितासिधाये। टेक।
नगरनिकटयकग्रामवासकरि करतसुतवप्रभुध्यानलगाये ॥
शेषदिवसकाढ़िकरतकाजकछु आपपादुकनभूपबनाये।
विश्वनाथअतितेजकायक लटबांधिकेशपीनतापाये ॥
हितकारी। अबतूं बेगहीं जाइ कुशल कहि सबको आनंद दे ॥
शुकः। पांय परियतु है ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

नेपथ्ये भजन । काकेचरनचिन्हसुखदाई । टेक ॥
निरखतमनजमोहुंउपजावत असनहिंसुनीलोनाई ॥
सकलसुरेशसहितअतिमोहत मोहतमनबरियाई ॥
विश्वनाथमानुषकैसेपद चलिदेखहुंकोभाई ॥

(दीर्घनखीप्रवेशः)

महिला । पीउ यह सुंदरी नारी भली चली आवै है ॥

हितकारी । या निरजन बन में नारीकहां या कोई राचसी सुवेष धारि आई होइगी ॥

दीर्घनखी । न तुमसो सुंदर न मोहिसी सुंदरी भलो योग विधि बनायो है ॥

हितकारी साक्षतम् । हमारे पास तो नारी देखत हो है छोटे भाई के पास जाउ ॥

तथगत्वादीर्घनखी । मेरो ग्रहणकरि भ्राता सरिस तुमहूं सुखी होउ ॥

डोलधराधरःसस्मितम् । सेवक को सुख कहां औ तुमहीं विचारि देखो उनको रूपदेखि देखि मैं कब नीको लगिहौं तातें उनहीं को रिझाइ बुझाइ मनोरथ सफल करो ॥

दीर्घनखी पुनरावृत्या । भलो सेवक पास पठावत हो मोकों त्रिभुवन में को न चाहै तुम अपनो भाग्योदय जानो ॥

हितकारी । हैं।तो अपनो भाग्योदय तिहारे आगमन हीं ते जान्यो पै तुम्हारो इनको कब चलैगो ॥

निजरूपंधृत्वा दीर्घनखी । हो काम रूपिनी हों तुम्हारी कुरूपा बधू अरु निर्बुद्धि बंधु को खाइ छाँई निरंतर बिहार करौंगी ॥

महिला सभयं भजन । पियरहिपेखिमोहिंभयलागै । टेक ।
भूरेकेशकानछापरसे आंखिअंगारभौंहयुगतागै ॥
दर्दुरनाककोहमोमुखनख सूपपयोधरलौकीएमै ।
सूखताससमउदरदोहरद बिश्वनाथतनशैलहिजैसे ॥

(डोलधराधर इतिश्रुत्वा)

हितकारिणमवलोक्य सक्रोधं दीर्घनखी नासांकर्णौच छिनत्ति ॥

दीर्घनखी । आहि आहि इतिमहाशब्दं कुर्वती सत्वरं निःक्रांता ॥

हितकारी। अब शेष दिनहैं चलो गोदातट मन रंजनकरें ॥
(इति निःक्रांताःसर्वे) (रासभप्रवेशः)
रासभः। ये राकसी मख कोई न करन पावै जाते भागि मेह दारिन दुरदेखिदुरबल ह्वै आसुहीं गतासु होइ दिगशिर महाराज की ऐसी आज्ञा है ॥
(प्रविश्य दीर्घनखी रुदित्वा पादयोःपतति)
रासभः।
कवित्त। काकेदुइमाथकौन मीचुकोबोलायोहाथ काकेपरपंचमाथखोली तीजीआंखिहै। काकेपरकाललैकैकरमेंकरालदण्डभूतनकेसाथ मुखफारिधायोमाखिहै॥ ऐसोटघाकोनीजौनबेगहीबताउताहि मेरोक्रुद्धचित्तरच्योयुद्धअभिलाषिहै। ह्वै हैं रुद्र बिष्णुहूतोरनमें प्रचारिबांधौं छोड़ौंहालऐसोकैदिगाननकोसाखिहै ॥ १ ॥
दीर्घनखीगद्य। याही बन बसेहैं नृप कुमार अति सुकुमार पै बलके अगारबड़े धनुधारी तिनकेसंगसुंदरी नारी दिग शिरहित हों हरन बिचारीगहि किय ऐसी दसा हमारी ॥
रासभः। धनु धनु धनु ॥
नेपथ्ये। जान जान बान बानचाप चाप तुरंग तुरंग मातंगमातंग ल्याउ ल्याउ—आयो आयो—बखतर दे बखतर दे लेउ लेउ ॥
(ततः प्रविशति सेना)
रासभः रथमारुह्य। आजु त्रिवर्णा पृथ्वी करि हों सूत शीघ्रहीं रथ हांकु ॥ इति निःक्रांतः सर्वे।
(सबंधुबधहितकारि प्रवेशः)
हितकारी। डीलधराधर महा संग्राम सूचक उत्पात पेखे परैहैं परंतु दाहिनी भुजफरकै है जय हमारिही होयगी युद्ध अवश्य होइगो तुम ह्यांते महिजा को डारि शिखर कंदर तेजाय निशंक देखो॥
डीलधराधरः स खेदं। महाराज स्वामी की आज्ञा पाय फेर कछु करिबो सेवक को धर्म नहीं है तऊ आपनो दुलार देखि ढिठाई करि यक अरज करौ हौं आप लरैं हौं देखौं यह कहा उचित होइ है ॥

हितकारी । यद्यपि जीतन को तुमहीं समर्थ हो पै यह युद्ध करिबे को मेरोई मन है ॥

शीलधराधरः खिन्नमना महिजासहित स्तथेतिनिःक्रांतः ।

आकाशे । येमहा प्रबल चौदह सहस राक्षस हितकारी अकेले कैसेमारेंगे॥

नेपथ्येछंद । करालदण्डपानिक्रुद्धकालजीतिजोलियो ।
सोराजपुत्रकेलियेकहासुसैनसज्जियो ॥
सुनोसुनोयेराक्षसेंद्रयेककौतुकेलिये ।
चल्योहैआशुगाजिरालिबखयुद्धकोकिये ॥ १ ॥

(ससैन्यराक्षसप्रवेशः)

राक्षसः । अहो यह राजकुमार तो त्रिभुवन में एक सुंदर है मारन योग नहीं है गहि दिगशिर पास पठौनो पठाय दीजिये देखि वोऊ अति हरषित होइंगे ॥

(हितकारीपरिकरंबध्वाधनुःअज्जीकरोति)

(राक्षसःदृष्ट्वा अलंकनामानंमंत्रिणंप्रति)

सवैया । नखतेंसिखलोंसुठिसुंदररूपहरेहमरोमनकोहठिलेत है ।
सुजटानिकेमंडलफूलनमंडलमंडितगलेमेंलोनाईनिकेत है ॥
सजिसज्य करै धनुकोकरलैयहबालसुभायनामानेसकेत है ।
सबस्नाहिंवारहिंधायधरोद्रुतनातरुबानघनेतजेदेत है ॥

नेपथ्ये । यह भलो ऊंचो गिरि है सिगरो युद्ध को कौतुक आंखिन के तरेहीं देखो परे है देखिये महिजा अग्रज को कैसे धाइ राकस घेरि लिये हैं जैसे मार्तंड को निहार ॥

महिजा । हाय कहा होन चहत है ॥

शीलधराधरः गद्य । देखिये हितकारी के क्षुर, क्षुरप्र, नालीक, नाराच, वत्सदन्त, दन्तवक्र, नतपर्वा, वाराहकर्ण, कर्ण, विकर्ण, वैतस्तिक, अर्धचन्द्र, शर, शरासन तें एक कालेइ बंकहत हैं शिर, उर, ऊरु; भुजन, पदन, बिनु राक्षसन करत हैं देखिये कैसे येरनमत लरत हैं गिरत उठत पुनि पुनि कुपित डरत निज जय रटत अंग अंग कटत न हटत गरबन घटत लटपटत बढ़त जात मरन सटत राक्षस छन छन छटत पुहुमी पटत जाति है ॥

छंद । अनेकबानलेतनूननेसुचापजोरते । नजानिजातजानिजातबानगात फोरते ॥ भयोकोदण्डकुण्डज्वालजालअग्निस्सरैं । गजेंद्रसुण्ड मुण्डमुण्डखण्डखण्डआहुतीदरैं ॥

रासभःसुतंप्रति । एक यह मेरो महा सैन संघार करो राजकुमार बेष महाकाल है की रुद्र है अब मोकों महा उत्साह भयो है हांकु मेरो रथ याके सनमुख ॥

कलंकः । मेरोयुद्ध देखि लीजिये छनमें रणमें राजपुत्र कों गहे लेतहों जो काल होय तौ बहुत भली भई याहि बिनु प्रान करि विघ्नबाधा मेटेदेत हौं (तिष्ठतिष्ठेति जल्पन्धावति)

हितकारीसोत्साहं । भलो आयो आजु निःकलंक भूतल ह्वै है

(इतिबाणंनिःक्षिप्रति)

दुसुण्डः । हे स्वामी कलंक तो आपनी काय राजकुमार शर धार में बहाय नाम हमारे कुल में लगायो अब मैं शर सों याको कंठा काटि रुधिर सों सो धोवत हौं ॥ इतिधावति ॥

हितकारी । आवोआवो तिहारे कंठ काटि सिरन सितकंठ कंठ को कठुला करों ॥

रासभः (स्वगतं) अरे यह तीनिहुखसों तीनिभुवन भक्षनकरनवारो जैसे हरशरतें त्रिपुर तैसे बालसर ज्वालमें जरि गयो आश्चर्य है ॥

पुनःदंतान्पीड्यित्वासक्रोधं(प्रकाशं)ये धनुर्वेदअज्ञ राक्षस मारि गर्व न करो अब त्रैलोक्य विजयी सो कामपरत्रो आपनो धनुर्विद्या देखावो ॥

(इतिसक्रोधंधावति)

आकाशे । देखो देखो हितकारी औरासभ के बान आकाश को अनवकाश करैंगे ॥

छंदतरंगिनी । दोउलरतअतिबरिबण्ड । शरतजतधनुयमदण्ड ॥
बहुअस्त्रहनतप्रचण्ड । बरषतअनलनवखण्ड ॥

महिजा । अरे यह नीच स्वामी को सनाह शसर शरासन काटि डारयो हाय हाय अब कहा होय गो ॥

डीलधराधरः । धीर धरो हितकारी को जीतनवारो जगत में जाय मान नहीं है अब क्रुद्ध होइ मारे डारे हैं ॥

रासभः । अरे राजकुमार अब नहीं बचै है जाको सुमिरन होइ ताको सुमिर ले ॥

द्वितीयंधनुःसज्जीकृत्यहितकारी । श्याबास बीर श्याबास आछो पराक्रम कियौ अब धनुष तें ये जे बान कढ़े हैं तिनको पराक्रमदेखु ॥

नेपथ्ये । देखिये स्वामिनी पंच बान लिये स्वामी पंचबानहीं से पेखे परै हैं अब देखिये देखिये चारि बान तें चारि बाजि गिराये एक तें शिर काटि दियो ॥

रासभः । रथान्निपुत्य वृक्षमुत्पाट्य आसुरास्त्रेण अभिमंत्र्य, राजकुमार यह अस्त्र तें तुम्हारो संहार करों हों ॥ इतिनिक्षिपति ॥

(वज्रास्त्रेणतन्निवार्य)

हितकारी । रेरे दुष्ट मुनिन को मारिमारि जेहि लोक पठाये हैं तेहिलोक तहूं जात है ॥

सक्रोधंरासभः । अरे राजन सों ऐसो कोऊ नहीं कहै है जैसो तैं कहै है जिन जिन राक्षसन को तू मारयो है तिनकी नारिन के आंसू आशु या गदा ते पोंछो हों । इतिनिःक्षिपति ॥

(तांशरेणचूर्णीकृत्य)

हितकारी दोहा । जाके बलवलगे बहुत सोहु रेनु समान ।
मिथ्यावादी बैनसम कोनोगगनपयान ॥

(मुष्टिकाबध्वा रासभः सक्रोध मभिमुखं धावति)

आकाशे दोहा । हितकारीकेबानने इमिजारिभोयहछार ।
जिमिइननामउचारतै पातकपरमपहार ॥

(जयजयतिपुष्पवृष्टिः)

प्रविश्य मैत्रावरुणः । छंदमधुमती ।

जयजयतिहरे । रणउमगभरे ॥ शरधनुषधरे । मुनिअभयकरे ॥

गद्य । पूर्णावतार तारण संसार सार बिज्ञान जनन मन करन करन कूरता हरन अशरन शरन शरन खलन संघरन घरन घरन तिहुलोक कीर्तिविस्तारत तरत तरतौ जो करत प्रनाम नामररस रत रूप प्रकाशी काशी सदाशिव सदाशिव देत हैं ते आप आपनो मृदुहास प्रकाश प्रकाशवान मम मन करो ॥

नेपथ्ये छंद । यहिसमैमहिजाकछिनजातिनिहारिलेछबिपीयकोधनु । अभिरफेरतसरसुनतअस्तुतिमनोमुनीयकी ॥ तनसुभगसोहतरुधिरकन अनुराजराप्रमुनीयकी । अतिमुदित ललित तमालबैठीलसतिरंजनि ओयकी ॥ १ ॥ चलो अब समीप होतें शोभा निरखें ॥

(प्रविश्य महिजा डोलधराधरौ स प्रमोदं प्रणमतः)

मैत्रावारुणिः । अब सब मुनि अभय भये तुम्हारी जय होइ हों अब आश्रम को जाउ हों ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

हितकारी । डोलधराधर चलो स्नान करें ॥ इतिनिःक्रांतःसर्बे ॥

(सामात्यदिक्शिरः प्रवेशः)

दिक्शिरः । हेमंत्री जगत जैसो अवकाश भयो अब मेरे मनमें ऐसो आवै है की उदधि उलीचि गगन गंगा ल्याइ मीठो जल भरि दीजिये औ समर संताप शमित करत यह मयंक बड़ो सेवाकरी याहू को निःकलंक कीजिये अरु इष्टपद पूजन जायबे को दूर परैहै ताते कैलाश ह्यांई उठाय ल्यावो अरु आभरन अरपि प्रसन्न करन हित शेषऊ को ल्यावो अघट कान तें कहो पृथ्वीपट वोढ़िसोवै जाय ॥

मंत्री । महाराज आप सब करन को समर्थ हैं यह कौन बड़ी बात है भलो मंत्र विचारयो ॥

(प्रविश्य दीर्घनखीपादयोः पतित्वा उच्चैरोदिति)

दिक्शिराःउत्थाप्यसक्रोधं । अरी ऐसी दशा तेरी करि कौन न मीचु को चुनौती दई ॥

(दीर्घनखी वाष्पावरुद्धकंठं)

छंदपद्धरी । अनुपमआयेद्वैनृपकुमार । रासभपुरढिगबनकियअगार ॥ तिनसंगसुंदरीछबिअपार । तुवहेतुहरनमैंकियबिचार ॥ तिनहाल कियोऐसोहमार । हौंरासभपह्वंकीनीपुकार तिनसरसोउभोयुतसैन छार । जोकरनहोयकरियेप्रकार ॥

दिक्शिराः । (आत्मगतं) काल दिगपाल ऐसो हाल हमारी भगिनी कों न करैंगे विशालबल हमारे भुजन को जानै हैं ॥

विचार्य (स्वगतं) जान्यो जान्यो चक्र चलाय चक्रपानि मेरे काय

की कठिनता जानि नरनारायण रूपतें श्रीसंग वानप्रस्थ धर्म ठानि जय हेत बन निकेत किये हैं ॥

प्रकाशं छंद । ल्याउल्याउजान । सैनलैमहान ॥ मैंकरौंपयान । मेटि देहुंसान ॥ १ ॥

प्रविश्यदीर्घजठर: । महाराज आतुरी न कीजै उनकोबल प्रभाउ सुनि लीजै जहांजहां राक्षस भागिभागि गये तहांतहां उनकेबान तिनको हेरि मार डारे, हों भागि भूरि भागि तें प्रभु को भवन देख्यो ॥

छंदगीतिका । चाहैंशरनसोंविश्वजारैंचहैंफिरिसिरजैंनयो । पालैंसरहि सोंदेहिंसुखजोकबहुंकाहु हिनाहिंभयो ॥ त्रैलोक्यबिजयीराक्षभेछनमाहि युतसैनाहयो । सनदुखकरैजोजंगयोधानाहिंजगतीतलजयो ॥

दिक्शिरा:आत्मगतं । रासभ मो सम बली अगार तासु संहार करन हार बिन परमईश कौन होइ जो भक्ति पंथ चलौं तौ दुरगम दिरंग वारी है ताते उनके शरगम मुक्ति सकुल हालई लेउं ॥

इतिनिश्चित्यप्रकाशं । अरे उहां तें भाजि के मोको डेरवावे है

दीर्घजठर: । महाराज हों मंत्री धर्म बिचारि कहौं हौं जो वै सिद्ध व्याधि जाय तौ औषधि में श्रम काहे कीजै ॥

दिक्शिरा: । अरे यह शत्रु बिन युद्ध कैसे मरै गो ॥

दीर्घजठर: । महाराज प्रानहूं ते पियारी बाकी नारी है ताको महामायावी घातिनी सुत को संग लै हरिल्याइये बिरह ते आपुही मरिजायगो ॥

दिक्शिरा: । भली कही भली कही ॥ इतिनिःक्रांत:सर्वे ।

(तत: प्रविशति घातिनेय:)

घातिनेय: । आह आह बड़े बड़े असगुन देखे परै हैं धौं कहा होइ गो राक्षस कुल को कल्यान होय कल्यान होय ॥

(दिक्शिराप्रवेश:)

प्रणम्यघातिनेय: । पाद्य लीजै अर्घ लीजै स्वामी को आगमन सेवक के सदन बड़ो भाग्य को फल है ॥

दिक्शिरा: दोहा । शीसजटामृगचर्मधर पहिरेबलकलचीर ।
कबतेंलियमुनिवेषयह कहैकरंमतिधीर ॥

घातिनेयः। कछु दिन भये हम तीन राक्षस मृग बेष बनाये मुनिन भक्षन हित दण्डकारण्य गये रहैं तहां मुनिबेष बनाय कै राजकुमार आये देखि भक्ष लेखि हम धरनधाये उनमें एक हम सबको परेखि सर हनि द्वै को आसुहीं असुइयो मोको धौं बचाय दियो तबतें देह अनित्य मानि तप ठानि इहां आनि बैठो हों आप को आगमन जेहिहेतु भयो होइ सो आज्ञा दीजै माथे धरि करौं॥

दिक्शिराः। मुनि बेष बनाये राजकुमार एकै बन आये बिन अपराध मेरी भगिनी को कान नाक काटि ससैन्य राक्षस को मारिडारयो चाहिये वेई होंइ बैर लेन हित तैं मृग रूप धारि उतहीं सिधारु उनको आश्रम ते ल्यावै निकारि तब मैं ताकी प्रान प्यारी नारि हरि लेउंगो आपही मरि जायगो॥

घातिनेयःसवैया। अप्रियपथ्यनकहैंसनैमंत्रहैंबलहुंप्रीतदुर्लभएमे।
जानतहींनाहंकालकीपास रोगरमेकियकामअनैसे॥
कालिकाराकससकेकुलकोमहिजागृहआनिकेबाचिहोंकैसे।
पूछिकैबातबिचारिकरोतिहुंलोकनमंत्री यानकजैसे॥ १॥

दिक्शिराः। तोसों सीख नहीं पूछों हों सासन देउं सो करु॥

घातिनेयः। मोको तौ अब हरी दूब दुति देखत डर लगै है उनके सन्मुख कौन जाय॥

दिक्शिराः। रे मूढ़ ह्वां मारि जाइ धौं न मारि जाइ न गये इहां तौ मेरी कृपाण तें अबहीं मरै है॥

घातिनेयः आत्मगतं। याके कर मरे कहा है उन्हईं के कर तीर तीर्थ तीर तन त्यागौं॥

प्रकाशं। भुवन भट्टारक बहुत भली आप की आज्ञा कौन न करै॥

दिक्शिराः। अब तुम अपनी प्रकृति मैं आये चलो॥

इतिनिःक्रांतौ   (सबंधु बधूहितकारिप्रवेशः)

डीलधराधरः। हों आखेट को जाउं हों॥ इतिनिःक्रांतः

हितकरी। महिजा छाया महिजा इत सखि दिगशिर बधांत अग्नि मैं रहो॥ महिजातथेति निःक्रांता।

ततःप्रविश्य विचित्रमृगप्रवेशः

(इतस्ततश्चरतिप्रविश्य (छाया महिजा)

पद । कहंअतिअदभुतमृगयहस्वामी । टेक ।

राजहिंरजतबिंदुसुबरनतन मणिखुरशृङ्गसुगामी ॥ चरतहरिततृन इतउतबिचरत लागतअधिकसुहाये । ॥ विश्वनाथयुतयतनआसुगहि ल्यावहुमोहिंअतिभाये ॥

(ततःप्रविशतिडीलधराधरः)

हितकारी । भैया भले आये तुम श्रमित हो महिजा को ताके रहियो मैं या मृग के पीछू जाउं हों ॥ इतिनिःक्रांतः ॥

नेपथ्ये । हा डीलधराधर हा डीलधराधर ॥

छायामहिजाआकर्ण्यसोद्वेगं । हे डीलधराधर पीतम को बड़ो कष्ट परो तब तुम को हा कहि टेरो है तुम जाउ जाउ ॥

डीलधराधरः । हितकारी काहू के जीतिबे लायक नहीं हैं यह कोई राक्षस छल करि बोल्यो है ॥

छायामहिजा । जात नहींहो प्रति उत्तर देतहो येही अभिलाष किये रहे हो ॥

डीलधराधरःसखेदं कर्णौपिधाय । आः आः अरी मोंको अति श्रवण कटुबानी कहै है तूं महा चंडी है ॥

(इतिधनुः कोटयातत्परितोभिमंत्ररेखा मंडलंकृत्वा निःक्रांतः)

प्रविश्यचिदंडिबेषोदिकशिराः।माता भिक्षां देहिमाताभिक्षां देहि॥

छायामहिजा । तौलों फल लेउ खाउ जौलों स्वामी आइ विशेषि आतिथ्य करैंगे ॥

दिकशिराः । बांधी भिक्षा हों नहीं लेउ हौं ॥

(महिजानिःक्रम्यलेउदिकशिराःनिजरूप माश्थायरथंमत्वा)

हों दिकशिर हों जाके भयतें इन्द्रादिक देवता कपै हैं तुम को लैके त्रिलोक की रानी करौंगा ॥

छायामहिजा । आःपापभागुभागु अबहींपीउ आवतहै नाशकैदेइगे ॥

दिकशिरा: (आत्मगतं) जैसें बुध रोहिणी कों लेचलै ऐसे महिजा को लै चलौं ॥

(इतियानमारोप्यपरिक्रामति)

छायामहिजा। हाय हाय नाथ सहाय होहु खल हरे लीन्हे जात है॥

नेपथ्ये पुचिमाभै:माभै:। हौंपहुंच्यो पहुंच्यो नीच नहीं जाय सकै॥ प्रविश्य सोपर्णि:॥

चामरछंद। तिष्ठतिष्ठदुष्टरिष्टपुष्टखूबखायकै। मुंचमुंचराजपुत्रिप्राप्र भोमैआयकै॥ मोरयाकठोरठोघोरकालदंडते। नाहिंतैंवचैगोभाजिजा हिब्रह्मअंडते॥

दिक्शिरा: दृष्ट्वा स्वगतं। यह कहा मे नाक है॥

प्रकाशंसाट्टहासं। जान्यो जान्यो वृद्ध गृद्ध है मम कर तीर्थराज में तन त्यागी चहै है॥

सौपर्णि:। सावधान हो अब क्रुद्ध गिद्ध सों युद्धपरयो आइ॥

(इति चंचुचरणै: युद्धं नाटयति)

आकाशे। जिनते यह हर गिरि उठाय लीनो ते बाम कर ठोर ते कर्तरि डारे अब बरबल जामें हैं। श्याबास बीर श्याबास तेरी जीवि होइ चुकी॥

(दिक्शिरा:। अमोघखड्गेन पक्षौ छित्वा सत्वरंनिक्रांत:)

(तत:प्रविशतिहितकारी)

हितकारी। अहो मेरो ऐसो बिकल बैन राक्षस बोल्यो धौं कहा होय॥ इतिसत्वरंपरिक्रामत।

(तत: प्रविशति डीलधराधर:)

हितकारी। अरे भाई महिजा को अकेलिहीं जाड़ि आयो या बड़ो अनर्थ कियो॥

डीलधराधर: वाष्पावरुद्धकंठं। महाराज मायावी राक्षसकी हा डीलधराधर यह बानी सुनि मेरी समुझायो न मानि महिजा मोकों प्रान नाथहू तें असह्य अति अनुचित बानी कही॥

हितकारी। तुम नारी के बैन कान करि आये आछी नहीं करी अब महिजा बड़ी भाग्य तें मिलैगी बेगि चलो बेगि चलो॥

(इति उभौ परिक्रामतः)

हितकारी । आश्रम में ये केश कुसुम परे हैं कोई लैगयो कै हाँसी कै छपीहो ? अहो तुम सर्व सहा की सुता हो हौंतो दिगजन की सुत हों जिनके प्रान धन विरह होतहीं गये अस विचारि बेगि प्रगटहु प्रगटहु ॥

(इतस्ततोन्वेषयंतौ परिक्रामतः)

हितकारी । अरे यह युद्ध जान पारिखर सूतशिर कटे परे हैं यातें जानै है कोई राक्षस रन कियो है अरे सौपर्णि कका काहे बिकल परो है ॥

(इति रत्वसुपसृज्य जटाभिस्तदंगमुन्मार्ज्य)

पद । कछुदिनतातताततुखदेहू । टेक ।

भूलिगयोवनबासप्रियादुख अतिदुखतकतदयातुवयेहू ॥

केहिखलकियहहालतुम्हारो कोलैगयोभूमिकीजाई ।

विश्वम्भरधरिधीरकहहुकछुयहिऔसरमोहिधीरधराई ॥

सौपर्णिः दीर्घ मुच्छ्वस्य । दिगशिर हमारी हाल ऐसो करि महिजा को बिंदु मुहूर्त में लैगयो जो वह महूरत में चोरी करै है सो प्राण सहित वस्तु देइ है ॥

हितकारी । तात दिगशिर कौन है कहांवास है ॥

सौपर्णिः । निधिपति को बंधु है राक्षसपुरी बास है

(इतिप्रत्याणंनाटयति)

हितकारी । देखो डोलधराधर साधु परउपकारी तिरयग योनिहूं में होय हैं ऐसिहू अवस्था में ऐसो युद्ध करि महिजा मिलन को महूर्त शोधि शरीर छोड़ गो ॥

(आःआःइतिरोदति)

आकाशे । बड़ो आश्चर्य है बड़ो आश्चर्यहै देखो गृद्ध को कृत्य करि हितकारी पिता को गति दीन्ही ॥

हितकारी । आश्रम मृग रोवत दक्षिण दिशि चले जात हैं यातें जानै हैं याही बेर लैगयो है चलो चलें ॥

(इतिपरिक्रामतः)

हितकारी। (चकोरंदृष्ट्वा)

पद। कहैतूचकोरचतुरमोकहंसमुझाई। टेक।

तोकोंकतमित्रमानि शीतलकरिदेतअनलकाहेममबिरहआगिदेत हैबढ़ाई॥ जान्योयहरजनीचरयातेहितचरचिचितलीन्होंकारिनिपटरजनिचरनसोंमिताई। विश्वनाथविधुआमिकरनाहकहोंनाम धरयोलिखियगरलभरयोसोइबरबतझरिलाई॥

(सकोपंचंद्रंप्रति)

पद। रेरेचडुलचोरकेभाई विरहिनगनदुखकारी। टेक।

सकलभुवनसमभारकरततुवतेजफैलिदिसिचारी॥ तहूंकलंकितमृग सहायवत सार्वभौमनिमिचारी। बिश्वनाथतियबेगिबताबहि यहबर वाननिहारी॥

सरितमवलोक्य। हे सुभग सरिता तेहूं क्रषकाय अरु माहिजा है जो कहूं देखी होय तो बताय देहु॥

(अशोकमवलोक्य)

छंद। माहिजादेयबतायलोकमुददायकहै। होनरसायकतहूंतरनमेंनायकहै॥ नवपल्लवतबहियोसुरंगहिसेमधरे। मेरेहियनिरधमाबिरहअंगारभरे॥ तेरेसुमनसिलीमुखआवतभावतहैं। मेरेमनहिंमनोजसिलीमुखधावतहैं॥ समताईसबभांतिभेदयकहोतयहै। ताहिबिधिकोन अशोकमोहिंदियशोकमहै॥

डीलधराधरः। स्वामी धीर धरो धीर धरो शोक सरि तरिवे को धीरजही तरनी है॥

हितकारीदोहा। यहिछनधीरजतेकठिन शोकजोनेकसिराय। तऊ
तोयअपहरनकी हायलाजाकोमिजाय॥

(डीलधराधरः)

जलेनतंमुखं प्रक्षाल्य। सावधान होउ चाहिये तो ह्यां माहिजा होय यह अटवी अति घन देखी परे है॥

गद्य। गो गौर गवय भुजंग मातंग शार्दूल कोल बोल कोलाहल भूत बेताल समताल कर कपाल गल मुण्डमाल हलत कराल ब्याल

ताल तमाल हिंताल पियाल रसाल आल थाल गजमद परिपूरण फूलन धूरन धवल परिमल परिमलित ललित छबिकलित नभ लखियतु है त्यां ढूंढ़िये ॥

(इतिनिःक्रांतो) (तपस्वनी किरातीप्रवेश:)

(इतस्तत: संचरंती तपस्विनी गायति)

बिरहा। कबदेखिहोंइननैननभाईमोरेरेहितकारीकोरूप।नखसिखआनंदमयसबभांतिनमुनिबरबदतअनूप ॥ जटामुकुटसिरकरधनुसरउरफूलनमालसुहाय । परसतपायपखानोपघिलततबततितांकिभुकिजाय॥ जाकोनिरखतरिपुराकसउनैहिरइतरनमांभ।सुमिरतजाहिहोतशंकरहियसमसावनकीसांभ ॥ बिचरतइतकबआइकढ़ंगे होलधराधरसाथ । बिश्वनाथममनाथधरेंगेतीनतापहरहाथ ॥

(कुंजरसुनेगोपः प्रविश्यगायति)

चंदैनी। जैसेहोतचंदैमोहिरपततकिघनश्याम। ऐसेहैंअबहूंहैआवतसुखमाधाम ॥ ढूंढतप्राणप्रिया डोलधराधरसंग । बिश्वनाथमैंनिरख्योंनखसिखशोभअंग ॥ १ ॥

तपस्वनीसहर्षं । कहु कहु श्रवणामृत बानी कहांतें आये ॥

गोपः। वरण कोतारि जब इत को चले तब मैं पहिलेहीं तो कों खबरि देन आयो हों ॥

हितकारिप्रवेश:। (पादयो:पतित्वा तपस्वनी)

त्रिभंगी। जयजयहितकारीमहदुखहारीसुरउपकारीबानिचहै ॥ करसरधनुधारीअधमउधारीबनडरकारीप्रेमसहै ॥ मोंपावरिनारीगृहपगुधारीरीतिपसारीदीनहि॰ । कामिसकेउचारीजोहमारीकीर्तितुम्हारीसखअमित ॥

महाराज जिन वृक्षन के मीठे फल मैं चाखे हैं तिनहीं के फल आपके हेत संचि राखे हैं ते लीजे ॥

हितकारी भक्षत्वा। अरी ऐसो स्वाद मोकों कुशलाउ के कराये कलेउ में नहीं मिल्यो त बड़ी तपस्विनी है मोकों राजकुमारी को बताउ ॥

तपस्विनी। महाराज थोरी दूरि में गिरि पर सुमन कोश है ताहूको

नारी भाई हरि लई है वामों मिलिये वा मद्दिजा की खोज कराइ है आप तो सबके आत्मन के आत्मा हैं कहा नहीं जानत हैं कुंजर मुनि जब ब्रह्मलोक कों जान लगे तब मोकों कह्यो तैं यांई टिकी रहु हितकारी इहां आवैगे तिनको दरश पाय मुक्त ह्वै जायगी आप क्षण खरे रहिये मैं शरीर त्यागों ॥

(इतिप्रणम्ययोगाग्निनादेहदहनं नाटयति)

हितकारी । चलो डीलधराधर वा गिरी कों चलिये जा गिरि में सुगल कों अनुरागिनी बतायो है ॥

इति निःक्रांताः सर्वे चितीयोंकः ॥ ३ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज बान्धवेश महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव कृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके तृतीयोङ्कः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थाङ्क प्रारम्भः ॥

(ततः प्रविशति समंत्री सुगलः)

सुगलः । हे चिरंजीव ऋच्छराज हमारे दुःख को अन्त कबहूं होयगो तुम ज्योतिष जान हो यातें पूंछियतु है ॥

ऋच्छपतिः । आछी सुघरी में प्रश्न करो है देखो तुम्हारे पूंछत हीं सेतफनो फनपर वह खंजरीट नचै है तातें अब तुम्हारे दुख को अन्त आयो ॥

(सुगलः सत्वरमुत्थाय दूरतोवलोक्य)

(सांगुलिनिर्देशंसभ्रितञ्च)

सुगलः । भो भो दस्त्रनंदनौ दूरिदीठि करि देखौ सगुन तौ पेखोई परै है पैबे द्वै बीर शस्त्रधारी निःशंक चले आवत हैं मेरजान अग्रज मेरे मारन को इनकों पठायो है भागो भागो ॥ इति निःक्रांताः सर्वे ।

(हितकारीप्रवेशः)

हितकारी । देखो तो डीलधराधर यह शैल की शोभा ॥

छंदनराच । अनेकधातुरंगरंगअंगचंदनैंदिये ।
झिरैंझिरनप्रमोदआंसुभक्तिभासतीहिये ॥
सुश्रृंगसोसमैंलताजटानमण्डलैंकिये ।
लसैंविहंगमालमाजशैलसंतखेलिये ॥

नेपथ्ये । स्वामी थम्हिये थम्हिये पहिचान कै भाजिये, चेतामल्ल तुम प्रवीन हौ जाय परखि आवो ॥

प्रविश्य बटुबेष चेतामल्लः । आपको क्षत्री मुनि बेष बिलोकि मोंको संदेह होय है बुझाइ कहिये ॥

डीलधराधरः । (सर्वंवृत्तान्तकथयित्वा)

डीलधराधरः । तुम आपनी कथा कहौ ॥

(चेतामल्लः पादयोः पतित्वा)

पद । जान्यो तुम्हैं नाथहितकारी । टेक ।
अहोप्रभोबनबसिनियरेहौं दईदासकीसुरतबिसारी ॥
चलियेनिजनृपसुगलमिलाऊं हरिगईताहूकीनारी ।
विश्वनाथप्रभुदीनबंधुतुम अहमिताईजोगतिहारी ॥ १ ॥

इति हितकारी डीलधराधरौ स्कंधयो रारोप्य चेतामल्लो निःक्रांतः ॥

प्रविश्यसुगलः । अरे याती दूनो को कंध किये ल्याई लिये आवै है धौं कहा कारण है ॥

प्रविश्यचेतामल्लः । आवो आवो स्वामी परम पराक्रमी लैआयो हौं ॥

(सुगलः अग्नि साक्षिकं मैत्र्यं कृत्वा रोदिति)

हितकारी । न शोक करो तुम्हारे तिय हारी को एक ही शर तें मारों गो ॥

सुगलः । स्वामी एक बड़ो आश्चर्य देख्यो है ॥

हितकारी । किंकिम् ॥

सुगलः । एक समय शैल शिखर पर मंत्रिन सहित मैं बैठो रहौं आकाश में ऐसे शब्द सुनो परो हा हा हितकारी मोको राक्षस हरे लिये जाय है फिर एक बसन में बंधे भूषण गिरे हौं दरी में धराय राख्यो ॥

(हितकारी दृष्ट्वा सशोक मथरस्फुरणं नाटयति)

सुगलः । मित्र शोक काहे करी हौ॥

(डीलधराधरः सर्वदृत्तांतंकथयति)

सुगलः । बाप की सोंह आपकी प्रिया कों आसुरी खोज लगाय देउंगो औ आप के संग आपके तिय हारी कों मारौगो ॥

हितकारी । चलो चलो तुम्हारे शत्रु को मारौं ॥

सुगलः मद । बिन जाने बल प्रबल शत्रु सों किमि प्रियमीत लराऊं ।

हितकारी । कहु देखराऊं कौन पराक्रम पुनि तोहि भूप बनाऊं ॥

सुगलः । अग्र जु फेंकोहै दुंदुभि शिर ताको आप उठैये ।
बिश्वनाथ तरु सात डोलावे तिन सर छेदि देखैये ॥

हितकारी । बहुत भली ॥ इति परिक्रम्य तथा करोति ॥

सुगलः । सहर्षं लांगूलं चुंबित्योत्प्लुत्य । आश्चर्य है आश्चर्य है देह बल जैसो बान बल तैसो ॥

हितकारी । अब चलो दुंदुभि रिपु पहं ॥ इति निःक्रांताः सर्वे ॥

(ततःप्रविशति समंत्रीबासविः) तालनाम मंत्री केयं)

बासविः बाचयति । स्वस्तिः श्री महाराजाधिराज श्री कपिराज श्री मित्र बासविः इतै श्री राक्षसेंद्र श्री महा महेंद्र श्री महेंद्र जयमान श्री विश्व बिजयी श्री दिगशिर की आशिष हमारी तुम्हारी अकुशल ब्रह्मा लिखिबोई नहीं कियो है एकै राजकुमार बलवानन मारन मन धरि तुम्हारे निकट के बन पयान करि सदल रासभ के प्रान हरि लीन्हें हैं पकरि मेरेपास पठायदीजिबो॥

मंत्री । महाराज आपकी शक्र शत्रु को मित्रता कैसे भई ॥

बासविः । एक समय हौं पूरब समुद्र संध्या करन गयो हुतो तहां जगत जय करि मोहूंको जीतन हेत पीछू तें पकरन को पहुंच्यो हों वाकों जानि कांख दाबि फिरि तीनौ समुद्र संध्या करि आय बाग में छांड़ि दीन्हयो तबतें बलवान मानि मित्र बनाय गयो है॥

मंत्री । महाराज आप कहा जानि मित्र मान्यो॥

बासविः । वासों अस्त्र शस्त्र में जीतनवारो त्रिभुवन में कोई नहीं है॥

हितकारिप्रवेश: । मंत्री प्रत्यं ॥ देखिये देखिये स्वामी रविनन्दन हे राजनन्दन सहाय लै आयो है ॥

बासवि: । अरे इनके तन बलवान ऐसे लगे हैं दुंदुभि शिर फेंकन हार चाहिये तो येई होंय ॥

हितकारी । देखो डोल धराधर ॥

कवित्त । कीन्हेंनभंगोमथाहितड़ितकूपीनमांहिं परतादिगतगिरि संगन कोगाथहै । गिरतहींगाजगाहिलेत कूदिबीचहीं मेंन्हाततजिरत भेजा बारिनिधिपाथहै ॥ जासुबेगबिहदबखानिओंचासोबायु जासुबलमाथ अजमायोदिगमाथहै । मेरुसोशरीर रनधीर मखबज्रबीर सगल कोजेठो बीरबैठोकीशनाथहै ॥ १ ॥ याहि मोको बनाय देहु ॥

(डोलधराधर: तथेति बासवि मुपसर्पति)

बासवि: । छंदतरंगिनी ॥ तुम कौनहो देउभाय ।

डोलधराधर: । हमशत्रुहैं कपिराय ॥

बासवि: । तक्रतैसो जानियजाय । सबिशेषहेहुशुभाय ॥

डोलधराधर: छंद । येंदिनजामसुवन हितकारीकोरतजेहेंघतिछांई ॥

बासवि: हितकारिणअवलोक्य । अतिसुन्दर मृदुअंगपरम बलरास भइहतिजयपाई ॥

हितकारी । तुमहमको बिग्रहको बिरवमें । बांधवैर जिनलीन्यो ॥

बासवि: । तुमये केवलवान जगत में रेनुतेय मद छीन्यो ॥ १ ॥ जोतुम सों जयपाऊं । तोजग बलवान कहाऊं ॥

हितकारी । होंतो धनु सरवन्त खड़ोहैं हों तुमहूं हथियार लेहु ॥

बासवि: । कपिके आयुध दंत नख तरु पखान हीं हैं ॥

(इति लोलला गुलेन शैलमुत्पाट्य हंतुमिच्छति)

चेतामल्ल: । सुगल देखो देखो हितकारीके बान को पराक्रम आश्चर्य है जाके बेगको सुर्पन हूं बांछा करै हैं सो बासवि जोलों उछलि घात करन की इच्छा करै तौलों शर बिद्धु छोन्निहीं को घात कियो ॥

बासवि: । पद ॥ हितकारी सबके हितकारी परम पुरुष अवतारी । प्रभुथ री लारन सरभारी मारीकुत्तहमारी ॥

सुतप्यारो मोसमबलवारो सौंपोशस्त्र तिहारो ।
इषुकाढ़ीमोकों मुदबाढ़ो जाउं पुरीसुखवारो ॥
(हितकारी शरंनिःसारयति)
(बासविः तनुत्यागं नाटयति । नेपथ्य रोदनधुनिः)

हितकारी । सुगल तुम जाय मारिन को आश्वासन करि भुज भूषन के कर बासवि की मार लौकिकी क्रिया कराय के आवो डीलधराधर तुमहूं जाउ जब कृत्य करि चुकौ तब सुगल को राज तिलक करि भुज भूषन कों युवराज करि लेवाये लिये आइयो ॥

(तौ तथेतिनिःक्रांतौ । नेपथ्ये)

रडिंडिमघल्लं । मुलुक सुगल को हुकुम भुजभूषन को ।

(ततःप्रविशतिससुगलभुजभूषनोडीलधराधरः)

हितकारी । सूर्यनु बहुत दिवस दुसह दुख भोग्यौ है मेरी आज्ञा मानि जाय अब सुख करो जौलौं बर्षा है हौहूं डील धराधर साथ या परवत बसि दिन काटो हों बिन शरद आगमन महिजा मिलन को यतन अब अशक्य है ॥

(सुगल भुजभूषणौ: तथेति निःक्रांतौ)

(हितकारी डीलधराधरौ परिक्रामतः)

हितकारी । डीलधराधर या परवत बास करिये लायक है ॥

छंदगीतका । झरनाझरैं मदधारशोभ अनेकधातुसिंगार है ।
झलिलित पल्लवलालझापी झूलचखसुखसार है ॥
बहुघंटघंटीमुखर खगगनदंतदुति बकपाँत है ।
परबतनहीं यह बिहदवारन लखहुबिलसतमाति है ॥

(इत्यारुह्यावासंनाटयति) हितकारी ।

पद । घूमिघूमि घनउमड़ि घुमड़िकै घहरत दशदिशिघेरै । घुमिछनछनमन घनसौधमकांतिबिपुइषु बूंदघनेरे ॥ चहुंकितचमकिचमकि यहचपला हियरलकलगावै । बिश्वनाथकों हायी यामुख शशियादि समयदेखावै ॥

डीलधराधरः । धीरधरियेधीर धरिये शरद के चिन्ह अब पेखियत है ॥
पद । जिमिशशिसहित अमलभो नभ निर्मलपुलति प्रभूहिय हूं है ।

बिलसहिं बिगसित बारिज तिमि मुख सुखमामहिंजाएहै ।
इनहंसनसद्रिसैगतिगहिंयति उत्कंठितडिगजैहै ।
बिश्वनाथइनखंजनसेदृगि दैखिअमितमुदपैहै ॥

(नेपथ्ये गानवाद्यधुनिः)

हितकारी कर्णदत्वा डोल धराधर या सुगल कबहुं हमारो सुधि भुलाय के राग सुनै है ॥
डोलधराधरः सक्रोधं । मैं जाउ हों बासबिको दशा याहू की करौंगो ॥
हितकारी । ऐसा क्रोध न करो जाउ समुझाय के लेवाय ल्यावो हौंहूं तौलों परवत में सिद्धाश्रम न जाय चित बिश्राम करों हों ॥
((इतनिःक्रांतौलप्रवेशः) (सदारसुगलप्रवेशः)
मदाघूर्णितनेत्रः सुगलः । भभभभभर्णापिये घुघुघुघूर्ण मेदनी ॥
तारका । भभभ्रमतिभास्करोडपिनकेवलामेदिनी ॥
सुगल । प्रहाहसिकिंप्रियेववचाकर्ममानया ।
तारका । ससास्तिगगवाचके ॥
सुगलः । गगवाचमेवानया ॥

(प्रविश्य चेतामल्लः)

छंद । जोसबकाजसवारनीतुरतहितेहितलायकपराय ।
करिमदपानरहोमतवारेरेजरहैकोजाय ॥
। हमसचिवनकहंयोचहोतहैसमुझिनीतिहारीनाथ ।
बिश्वनाथसुमिचिनयकरहुतोइजातिरहैबिलास ॥ १ ॥
इतिश्रुत्वाविगतमदःसुगलःसभयं । बेगि बानरन को पठाइ सप्त दीप सैनलैयो ॥ चेतामल्लः तथेति निःक्रांतः ।
प्रविश्य भुजभूषणः । क्रुद्ध डोल धराधर आय द्वार पर खड़े हैं ॥
ससंभ्रमं सुगल । हुमनाथ चेता मल्ल को संग लै उनकी प्रीति कराय लेवाय ल्यावो ॥ भुज भूषणः तथेतिनिः क्रांतः ।
सुगलः । सुषेन सुता हुमहूं अंतह पुर के द्वार लों जाय प्रनाम कराय लै आवों ॥ सुषेन सुता तथेति परिक्रामति ।

(ततःप्रविशतिचेतामल्लभुजभूषणाभ्यसहितोडीलधराधरः)

(सुषेनतनयापुरोवलोक्य)

करनाटकी भाषा में पद । मेदन मंगल आगलि निनग ।
याकसिट्टमाडिदिइवतनन्नगण्डक्यलसइतग ॥
माडयानकोतिकलसिकोट्टाननीनुनडीवलग ।
विश्वनाथसिट्टविडूअडूनीनुगतीनिनग ॥

तिलक । मेदन कहे देवर , मंगल कहे कल्याण, आगलि कहे होइ, निनग कहे तुम्हार ॥

दूसरतुक । या कहे काहे, सिट्ट कहेक्रोध, माडिदि कहे कीन्हा है, इवत कहे आजु, नन्नकहे हमार, गंड कहे पति, क्यलस कहे काज, इतग कहे इसका ॥

तीसरतुक । माड यान कहे करते हैं, कोति कहे कोश, कलसि कहे भेजि, कोट्टान कहे दिया है, नीनु कहे तुम, नडी कहे चलो, वलग कहे भीतर ॥

चौथतुक । सिट्ट कहे क्रोध, विडू कहे त्यागो, अडू कहे सब, नीनु कहे तुम्हार, गती कहे गति, निनग कहे हमकाहै ॥

(डील धराधरः अंतह पुर प्रवेशं नाटयति)

सुगलःसदारःपर्यंकात्स संभ्रमसुत्थाय। अर्घ अर्घ पाद्य पाद्य ॥

डीलधराधरः सक्रोधं । अरे वह शर भुलाय सुरापान करि सुंदरिन संग विहार करे है ॥

(सुगलः कंपते)

चेता मल्लः । आपको काज सुगल नहीं भुलायो युत्थपन बोलावन सब दिशन बानरन पठाये हैं ॥

सर्वतोवलोक्य सहर्षम् । यह देखिये मार्तंड मंडल को रज समूह पान ऐसो किये लेय है प्रलय पौन कैसो शोर होय है यातें मैं गुनो हौं की बानरी सेना आवे है क्रोध काहे करियतु है सुगल हितकारी कों आपतें अधिक पिआरे हैं ॥

डीलधराधरःसस्मितं। सुगल हितकारी के पास चलो ॥

(इतिनिःक्रांताःसर्वे) (प्रविश्यहितकारी)

पद । पवनपरसिमहिजाअंगमेरो अंगअपरसे । छनयहतापमिटायरया करिनतुतन भरसे ॥ रबितुममकुलजेठकहहुकहं तियअपहारी । कैतेहिमाथनिमालकरहुं विगुनाथसुखारी ॥

(ततः प्रविशति ससुगलो डीलधराधरः)

प्रणम्यसुगलः । यह सेना देखिये ॥

पद्धरीछंद । अर्बनखर्बनआवतकपीन । आकाशहोतअवकाशहीन ॥
वपुसमसुमेरुयुत्थपअनेक । जेकालहुकोनहिंडरतनेक ॥
जवओरहुजिनसहश्रैसुपर्ग । हैंबिबिधिदेशकेबिबिधिवर्ग ॥
निजतनअर्पीदलसहितनाथ । मोकरोंकहियजोविश्वनाथ ॥

हितकारीसहर्षं । तुम सो मित्र पाय मैं अब शोक समुद्र पार होन चहत हौंइनको महिजा को खबरि लेन पठवो कहां है शरीर त्यागि दियो की जीवति है ॥

सुगलःअंजलिंबध्वा । बहुत भलो बानरान्प्रति, तुम सब दिशि बिदिशि जाय महिजा की खबरि लै आवो औ भुज भूषन त्रेता मल्लादिकन को संग लै दछिन दिशा तुमहीं जाउ जो कोई मास भरे में खबरि न लै आवैगो सो मोरहो करतें बद्ध होयगो ॥

हितकारी । त्रेतामल्ल यह मुंदरी सहिदानी लिये जाउ ॥

(तथेति निःक्रांता बानराः)

सुगलः । महाराज जब मोकों अग्रज निकारि दियो तब मैं ताको महा अमर्षी जानि भयतें भाजत सकल महि मंडल अवलोकि आयो तहां तहां के गुप्त प्रगटस्थल मैं सब बताय दिये हैं खबरि लई आवैंगे तब मैं महासैन्य संग लै शत्रु संहार महिजा को लै आऊंगो ॥

हितकारीउत्थायआलिंग्य । क्यों न कहो तुम सब करन को समर्थ हो ॥

ततःप्रविशंति । द्वीप द्वीप देश देश चिन्हानि गृहीत्वा बानराः ॥

सुगलसचिंतंस्वगतं । दछिण वीर तें भुजभूषन न आये मास बितीत ह्वै गयोधौं कहा है ॥

(प्रविश्य स्वप्रकाशिनीतापसी) द्राविड़ीबोलीमें ।

पद । अनकवरिकंनमलिपंडिरजैजैहितकारी ।

एल्लागुनपरंदडमउडमनूडबिडवियं नल्लकैयलविल्लुपिडिचिररोंवलिचुकारी॥एल्लालोकनादनखलकूटतकुन्नीरनीरमूनलोकदंडीकिवरनल्लवेलपारू । संगरादिध्यानयशमीनल्लसुखतअडंदालनल्लअडंघ्रिविश्वनाथसज्जनन्तकारू ॥ १ ॥

(इतिप्रणम्य निःक्रांता:)

तिलक । अनकवरिकं कहे सबप्रानीको, नमलि कहे सुख, पंडिर कहे करवैयाहौ, एल्लागुनपरंदडम कहे सब गुणनिधान हौ, उड मनूडबिडबियं कहे शरीर संताप नाशकहै, नल्लकैयलविल्लुपिडिचिर कहे सुन्दर हाथमें धनुष धारण कियेहौ, रोंवलिचुकारी कहे बहुत प्रकाशकारीहौ, एल्लालोकनादन कहे सब लोकनाथहौ, खलकूटतकुन्नीरनी रकहे दुष्टसमूहकेमरैयाहौ, मूनलोक कहे तीनलोकके, दंडीकिवर कहे शिक्षा करैयाहै, नल्लवेलपारू कहे शतकर्म्म करो, संगरादि ध्यामयशमी कहे शिवादि ध्यान करिके, नल्लसुखतअडंदाल कहे सुन्दर सुख पावतेहैं, नल्लअडंघ्रिविश्वनाथ कहे सुन्दर रूपसे हेविश्वनाथ, सज्जनंतकारू कहे सज्जनन की पालनाकरो ॥

(हितकारी सुगलमवलोक्यते)

सुगल: । महाराज द्रविड़ देश के परबत में एक गुहा है तहां या स्वप्रकाशिनी तप करत हुती मेरे जान तहाँ गए कोश तिनसों आपकी खबरि पाय आय दरशन करि सुख छाय स्तुति करि शिरनाइ कृतकृत्य भई गई ॥

(तत: प्रविशति गृद्ध:)

गृद्ध: प्रणम्य । महाराज मोकों आपके कृपापात्र बानर मिले तिनको दरश पाय पक्ष सहित ह्वै होंहूं प्रभु पद पदुम परसन आयो मेरी बड़ी भाग्य जगी जो मेरे भाई की काय आप के काज में लगी ॥

हितकारी । कहो सब कोश कुशल हैं महिजा की खबरि पाईकी नहीं ॥

गृद्ध: । महाराज तिनको मैं संदेहित देखि राक्षसपुरी में महिजा को

बतायो सब मेरे बचन सुनि सिंधु पार जायबेमें असक्य देखे परे तब ध्यानस्थित चेतामल्ल पास ऋच्छपति जाय बृतांत जनाइ महाबल सुधि देवाई चेतामल्ल उर उत्साह भरि दीह देह धारि लंगूर महि मारि कह्यो पुकारि ॥

कवित्त । कहौतौउठायदीपिबोरौंबीचबारिधमें कहोदिगसीससीसरोसि नोचिडारहूं । कहोमुष्टिकूटिकूटिरैनुकैत्रिकूटआजुगगनउड़ाय कैतमासोसोपसारहूं ॥ कहोक्रोधभारभूंजिभूंजिभूरिराच्छसानि सोईंखाखधारिदेहरुद्ररूपधारहूं । कहौतौलपेटिलूमल्याऊंकुलिबाकोकुल आगेहितकारिहाकैमीजिमीजिमारहूं ॥ १ ॥

ऋच्छराज कह्यो तुम सब करन लायक हो अबै जो आज्ञा भई है सोई करौ या सुनि उछलि पारही परौ, आज्ञा होइ तो अब परिवार देखौं ॥ इति प्रणाम्य निःक्रांतः ।

हितकारी । चलो संध्या बंदन करैं ॥

(इतिनिःक्रांताः सर्वे चतुर्थाङ्कः)

इति श्री मन्महाराजाधिराज बान्धवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंहजूदेव कृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके चतुर्थाङ्कः॥ ४ ॥

———oo———

अथ पंचमाङ्क प्रारम्भः ॥

(समंची दिक्शिरःप्रवेशः)

दिकशिराः मंचिणंप्रति । आजु हो रैनिशेष सपनो देख्यो की एक मरकट खबरि लेन आइ जा सिंसुपा तर महिजा है तामें छप्यो बैठरो है सो जागि मैं महिजा के पास जाय बहुत भय दई ताके विलाप की बातें मेरे मन में अब लैां गड़ी हैं ॥

मंची । तो जागि रातिहीं दुख देन काहे गये ॥

दिक्शिराः । जाते वाकी दशा देखि दूत खबरि दै हितकारी कों आसुहीं ल्यावै ॥

प्रविश्यराक्षसी। महाराज मोको ब्रह्मा को बरदान रह्यो है जब लों कोई तेरो तिरस्कार न करैगो तौलों राक्षस पुरी को भय न छोड़गो सो काल्हि की रैनि में एक छोटो सो बानर आयो ताको मैं द्वार में रोक्यो मोको वा मुठिका मारयो मुरछित ह्वै गई जागि अस्तुति करि पूंछी तुम को हो कहां ते आये सो कह्यो हों हितकारी को दूत हों महिजा की खबरि हेत आयो हों महिजा जहां रहो सो थल भय सों बताय दियो औ तुमसों कहो हों हितकारी परम पुरुष हैं जो जीवन चाहो तौ महिजा को लै शरण जाउ॥

(इति निःक्रांता:)

प्रविश्य बाटिकापाल:। यक कपि महा प्रबल आय बाग बिध्वंसि पालकन मारि डारयो हों भागितें भागि खबरि देन आयो॥

दिकशिरा: मंत्रिणंप्रात। सपनो सत्य भयो चलो पकरन की ततबीर करैं इतिनिःक्रांतौ॥

(प्रविश्यचेतामल्ल:। इतस्ततःसंचरति)

नेपथ्ये कोलाहल:। रथ रथ हाथी हाथी घोरे घोरे धनु धनु ल्याव ल्याव धाउ धाउ॥

(ततः प्रविशति स सैन्यो नयनकुमार:)

नयनकुमार: छन्दनराच। सबै सुभट्टधाइ धाइ घेरिलेहु कीश को॥
महान्रज्जुबांधियाहि देहु दिग्ग सीसको॥

सुभटा:। सबैहंथ्यारकैप्रहार अंधकार कीजिये।
झपट्टिअंगअंगमेंलपट्टिबांधिलीजिये॥

(गृह्यतां गृह्यतामिति धावन्ति)

नयनकुमार:। अरे सूत यह तो बड़ो बलवान बंदर है बाग के प्रसाद को खंभ उपारि सब दल दलि डारयो हांकु मेरो रथ॥

(इति शरान्निःक्षिपति)

चेतामल्ल:आत्मगतं। अरे यह तो बड़ो धनुर्द्धर है याके शरन सों हों सावकाश नहीं पावों हों॥

इत्युत्पत्यनिपत्यचरणंचूर्णयति।नयनकुमारःमल्लयुद्धंनाटयति॥

(चेतामल्लः पादयोर्गृहीत्वा भूमौताड़यति)

नेपथ्ये । महाराज नयनकुमार ता समर शयन कियो, वत्स वत्स इन्द्रमद मो रन काल है कि रुद्र है जो नयनकुमारई को मारि डारयो और कैसे जीतै गो ताते तुहीं जाइ बांधि ल्याउ ॥

चेतामल्लः आकर्ण्यस्वगतम् । रथन को घहरन गज घंटन को घन घन बाजि पैजनियन को झनझन भूषनन को खन खन एक ह्वै महा शोर सुन्यो परै है कोई बड़ो बीर आवै है ॥

(ततः प्रविशति घनध्वनिःससैन्यंच)

चेतामल्लः सोत्साहं छंद तोटक ।

युगसर्पसदर्प्पलगरथमें । पसरैमनि पुंजप्रभापथमें ॥
फहरात चकाशपताकमहै । उतसाह भरो अति सूतचहै ॥ १ ॥

परम प्रतापी पुरहूत विजयीआवै हैवाहवा वाहवा आछो युद्ध होयगो॥

(इति सिंहनादंकृत्वा उत्प्लुत्य भुजमास्फोटयति)

(ततः सर्वतः सेनाप्रहरति)

घनध्वनिः सूतंप्रति । अरे याको पराक्रम देखै तौ बारन उठाइ बारनन पैं डारि रथन सों रथन संहारि भटन गहि भटन को मारि इत उत दौरिदौरि सिर भुज तोरि तोरि करोरिन को निपात करि दियो हांकु तो याके सन्मुख मेरोरथ॥ इति शरजालं मुंचति ॥

(चेतामल्लः बाणान्वंचयित्वा पर्वतैः प्रहरति)

घनध्वनिः । देखै तो सूत याके पवारे परबत आकाश अनवकाश करत प्रलय पयोदही से पेखे परै हैं ॥

(इति शरैः पर्वतान्निवार्य्य आचम्य अस्त्राणिमुंचति)

चेतामल्लः स्वगतं । देखों तो याको पराक्रम कैसो है ॥

(इति निःचलस्सन्मुखं तिष्ठति)

घनध्वनिः । अरे सूत आश्चर्य है जे हमारे अस्त्र शस्त्र कालहू को बिथित करत रहे ते याके तन तनकउ नहीं असर करै हैं अब देखैं अमोघ ब्रह्मास्त्र तें बांधौं हौं ॥

(इति आचम्य निःक्षिपति)

चेतामल्लः आत्मगतम्। अब मैं ब्रह्मास्त्रकी मर्यादा राखि दिगशिरकों देखौं॥

(इति ब्रह्मास्त्र बद्धः पृथिव्यां पतति)

राक्षसाः सहर्षं रज्जुभिर्बध्वा स घनध्वन्यो निःक्रांताः।

(ततः प्रविशति सपरिकरो दिक्शिराः)

दिक्शिरः। अरे द्वार में गलबल काहे को सुन्यो परे है॥

प्रविश्य द्वारपालः। महाराज घनध्वनि वा बंदरकों बांधि लै आयो हैं ताको सब पुरवासी हराषत ह्वै मारिमारि तारी दे दे सोरकरे हैं॥

दिक्शिराः। अरे उन पैं कहे जाइ मारैं मति वाको ह्याँइं लै आवैं॥ द्वारपालस्तथेतिनिःक्रांतः।

(प्रविशति करगृहीत रज्जुबद्ध चेतामल्लो घनध्वनिः)

चेतामल्लः आत्मगतम्। अहो याके बदनन में महा प्रकाश है सूर्य्यशिष्य जो मैं ताहू के नैन निरखत में मंदि आवै हैं॥

नेपथ्ये क्रन्दनराच। कृशानु जाइ पाक भौनबेगि पाककों करैं।
बहारि आउ वायु बाट फेरि मन्द संचरैं॥
जलेस ल्याउ गंगपाथ दिग्गशीस न्हानकों।
धनेश धाइ ढोइल्याउ निद्दिनित्य दानकों॥

चेतामल्लः श्रुत्वा सविस्मयं स्वगतम्। आश्चर्य है ऐसो आज्ञा ईश हू की नहीं सुनी॥ दिक्शिरसोऽभिप्रायंज्ञात्वा॥

मंत्री। रेरे बंदर कालरुद्र विष्णु पठायो आयो होइ तो सांच कहि जाय तोको छोंड़ि ताही को देखि लेइंगे॥

चेतामल्लः दिक्शिर संप्रति। मोको तिहारे बंधुसुगल ने पठायो है या कह्यो है हमको हित चाहे हैं जो कोई अनीति करै है ताको बिनाश बेगिहीं होइ है तुम हितकारी की नारी हरी है सो दै राखो तुम्हारे तो बेद शास्त्र सब जाने है बहुत समुझन वारे सों बहुत कहे तें का है॥

दिगशिराः। हम तो हितकारी की नारि हरि लयाये है उन को यामें कहा परी है॥

चेतामल्ल: दोहा। बिष्णु स्वयंभू शंभुहू तीनि तीनि तनधारि।
ओरचहि हितकारिरिपु सकै न मीचु नेवारि॥

दिक्शिरा: सक्रोधम्। कौश कटुभाषी को मारि नहीं डारत हौ सुनत कहा हौ॥

भयानक: दिक्शिरसंप्रणम्य। महाराज दूत अवध्य है मेरे मन में एक मंत्र आछो आयो है सो सुनि लीजै॥

दिक्शिरा:। कहिजाइ॥

भयानक:। बानर को लंगूर परम पियारी होइ है सो लाय छोड़ि दीजिये जो उनके पराक्रम होयगो तो याको हाल देखवेई आवैंगे तिनहीं पै प्रहार करैंगे॥

दिक्शिरा:। आछी कही॥

पुनश्च राक्षसान्प्रति। भो राक्षसौ याको लैजाइ लंगूर पट लपटाइ आगि लगाइ बाजन बजवाइ राक्षसपुरी के चारों ओर फिराइ छोड़ि देउ॥

राक्षसास्तथेति चेतामल्लं गृहीत्वा निःक्रांत:॥

(नेपथ्ये महान कोलाहल:)

छंदनराच। अलातचक्रकै शभेसवैअनाथसेजरैं।
तचीमहासुबर्णभूप्रसादपर्णघिलैंढरैं॥
चानकोबिधानननाहिंप्रानआसुनिस्सरैं।
भभांतभौनभांइभांइहायहायकाकरैं॥ १॥

आकाशे। अरे अरे राक्षसपुरी की लपटैं तो स्वर्गहू लों आईं चलो चलो ब्रह्म लोक कों॥

दिक्शिरा: ससंभ्रमं। देखो तो देखोतो कहा होइ है॥

द्वारपाल:। महाराज वा बंदर ने ऐसी लंगूर पसारी की पुर भरे में पट घृत तेल न रह्यो जो लेस्यो सो छोटो होइ पास ते छूटि बड़ो शरीर धारि रक्षा करन वारे राक्षसन को संहारि पुर जारि डार्‌यो॥

दिक्शिरा: ससंभ्रमं सर्वैर्मुखै:। अरे धावो धावो कुल सहित सकल दल पुष्पक चढ़ावो सागर पहुंचावो होहूं घटकान को उठाय आय पहुंचत हों॥ इतिनिःक्रांता: सर्वे॥

(ततः प्रविशति महिजाराक्षसश्च)

महिजा । बड़ो कोलाहल सुनो परै है कहा है ॥

सुनोपैशाचीबोली में पद । जेवनलेघनलवेनबंधिए ।
 सेदिगलजालियलंगूलेलरबुलूयंधलितुनंमुंचिए ॥ इदोतदोधावन्ते
 जालइपुलंलस्कसीचंपइलुंचइ ॥
 ताहइमेहुंमहाकलकलेविस्सनाहपियतमेंसुमिज्जइ ॥

टीका । जेवन लेकहे जो बानर, घनलवेन कहे घननाद करिकै, बंधिये कहे बांधिगा, से कहे सो, दिगल कहे दिगश्वास करिकै, जालिय लंगूलेकहेजराई गैलांगूलजाहि करि,लरबुलूयंधलितुनंमुंचिएकहे लघु-रूप धारन करिकै छूट, इदोतदो धावंते कहे इहां उहां धावत, जालइ पुलं कहे पुरको लावत है,लस्कसीचंपइलुंचइ कहे राक्षसिन आइ चावत है नोचत है,ताहइमें कहे तेकर, याहुं कहे निश्चय करिकै, महाकलकले कहे महा कलकल शब्द, विस्सना-हपियतमें, कहे हेविश्वनाथ पियतमें, सुमिज्जइ कहे सूनोपरत है॥

(महिजासशोकं)

दोहा। हायहायकरतारअब जोकछुप्रकृतिहमारि ।
 तातेकपिकररोमऊपावकसकैनजारि ॥

प्रविश्यचेतामल्लः प्रणम्य । अम्ब बृत्तांत सब सुनिबोई कियो होइगो आप के प्रभाव तें पावकहू पाथहो सो लग्यो पयोधिमें पूंछि बुझाइ पद पंकज परसन आयो आज्ञा पाऊं तो हितकारी पास जाऊं॥

मजि सहर्षं । यहचूड़ामनि सहिदानी लेउ तिहारो मारग सिद्धि होइ ॥ चेतामल्लः प्रणम्य निःक्रांताः ।

महिजाराक्षसींप्रति । यहां राक्षस पुरी के खाख तें कछु देख्यो नहीं परै है चलो तड़ाग में चित्त बिश्राम करैं ॥

इतिनिः क्रांताः । (ततः प्रविशति ससैन्यो भुजभूषणः)

भुजभूषणः चिरंजीवी कच्छराजंप्रति । चेतामल्ल को बिलंब बड़ो भई धों कहा भयो होइ ॥

कच्छराजः । सगुन बड़े बड़े होय हैं चाहिये चेता मल्ल खबरि लिये

कुशल आवते होंय देखो देखो या दक्षिण ओर तें आंधी आवै है औ किलकिला शब्द सुनी परै है ॥

(ततः प्रविशति चेतामल्लः)

भुजभूषणः सहर्षं उत्थाय लांगूलं चुम्बित्वा । अरे चेतामल्ल तो आयहूं गये ॥

सभुजभूषणःसर्वेःबानराः सहर्षं चेतामल्लमालिङ्गति ।

चेतामल्लः सर्वैं यथोचितं मिलित्वा सर्ववृत्तांतं कथयति ।

भुजभूषणः । जो खबरि पाय बिन बिन लिये गये तो सब की शूरता को ओर होइगयो यातें चलो दिक्शिर को मारि महिजा को लिये चलिये ॥

रिक्षराजः । तुम बासवि के तो पुत्र हो काहेनकहो पैहितकारी की आज्ञा खबरि ही लेन को रही है तातें चलो सो सुनाय फिरि उनहीं के साथ आय पराक्रम करियो ॥

भुजभूषणः । बहुत भली ॥ इति सर्वे निःक्रांतः ।

(ततःप्रविशति स सुगल डीलधराधरो हितकारी)

सुगलः । चेतामल्ल अकेले राक्षस पुरी को गयो वहां शत्रु बड़े बरिबण्ड हैं धौं काहा भयो होय ॥

डीलधराधरः । प्रभु प्रताप तें सब आछो होइगो ॥

प्रविश्यदधिबदनः । भो महाराज तिहारो रखायो रह्यो जो माधिक कानन ताके फल भुजभूषन सब बानरन को खबाइ दये औ तोरि तोरि महि डारन लगे तब मैं चलि अधिक रोक्यो सो मधुमत्त मो- कों प्रहार कीन्हो भाजि आइ आप को जनायो ॥

सुगलः सहर्षं । महाराज महिजा की खबरि आई जो खबरि न लैआवते तौ माधिक्र बन के फल न खाते ॥

(प्रविश्य सर्वेबानराः प्रणमति)

भुजभूषणः सर्ववृत्तांतं कथयति ।

हितकारीसहर्षं । चेतामल्ल महिजा को वृत्तांत आपने मुख तुमहू कहिजाउ ॥

पद । चेतमल्लपरमहितकीनो । टेक ।

दुस्तर उदधि उलंघित्व्य यलुधि सोकसमुद्रसुतरैकारिदीनो ॥
ताहि देवैलायकत्रिभुवनमें हेरत होतिमे रिमतिहीनो ।
विश्वनाथसमहिंहमा हंप्रिय सदाहिरहहिममरसमतिभीनो ॥

चेतामल्लः । जल धतो आपकी कृपा जहाजही पार कीनो औ राच्छस पुरी तो महिजा की महा शोकाग्निहीं ते जारिगई महाराज मैं कहाकरन लायक हुतो ॥

हितकारीसवाष्पावरुद्धकंठम् । महिजा शरीर रहन को कारण कहि जाउ ॥

चेतामल्लः । महाराज दिगशिर पुरमें काल की गति नहीं है महिजाऊ यह चूड़ामनि सहिजानी दई है औ कही है की इन्द्र सूनु काक की बेरि जो कृपा मेरे पर करी सो कहां गई ॥

गृहीत्वा हितकारी । यह चूड़ामनि देखे मोकों महाराज दिग जान औशील कनु की सुधि आइ गई ॥

इत्यधरम् फुरणं नाटयत्वा धैर्य्यमभिनीय । रिपुको रूप पराक्रम कहि जाउ ॥

चेतामल्लः कवित्त । लागेहैं अकासद शशीसशैलशृंगऐसे बीसभुजबिपुल अहीशनमभायेहैं । विष्णु चक्रबज्रवासौवारनकेदन्तनके दीरघहि में कोघ यह उछिछायेहैं ॥ यकबलवानऔसुजानबेदशास्त्रन में सारेअस्त्र सस्त्रजा । शिवहीपढ़ायेहैं । लोकनकेनायककेलायकरहेतोवाही पापीजानिअजइन्द्र आदिकबनायेहैं ॥

जुगलः । महाराज अब धीर्य को अवसर है महूर्त करिये चलिये

हितकारी विचार्य । विजय मूहूर्त अबहीं है ॥

इति चेतामल्ल मारुह्य डोलधराधरः भुजमूपयामारुह्य सबैं व्यूह बध्वा परिक्रांति ।

आकाशे गद्य । जुगल दल अति अविरल दल भूरिभार छिति तल हहल हहलत पल पल शैल उसलत जलधिजल खल भलत बेल थलतजत कहलि कहलि कोलकच्छ कलमलात अकुलात चटपटात गात पिसे से जात दरित रदन दरद दिगदुरदन चीतकार अपार धूरिधार धुंधकार दिन भरतार नाल खाटते अरमित उड़ात

प्लवंगनपानि लांगूल लीला इन्मूलित उच्छालित श्रृंग समूल वृक्ष वृन्द इन्द्र पेखो पेखो रिपु पर प्रभु पयान कीन करि सुरन सुरन आनंद दिन चाहत हैं ॥

सुगल: । प्रभु पेखिये तीर तरुन तरुन तरुन तति । सरित पतिको अवनिकाशो शोभित होइ है ॥

हितकारी । राक्षस पुरी समीप है यातें सावधान डेरा करो ॥

आकाशेपद । सबलेकसरन्याहितकारी । टेक ।

अतिदयाल समरथसवभांतिन शरनशरन मैंशरन तिहारी ॥

बंधुबिचारिदिनहितमहिमा दिगंशरकोंहठिमंत्रहिदीनो ।

कोपिलातमारयोमोहिंमैंतबचलिविश्वनाथचरणचितकीनो ॥

पर्वतानुत्पाटयप्रहर्तु सन्नद्धान्वानरान्दृष्ट्वा हितकारीहुंकारेण वारयति (सर्वे वानरास्तथैवतिष्ठति)

समंचीसुगल: । महाराज राक्षस बड़े छली होइहैं आइभेदकरिवेई प्रहार करेंगे ॥

चेतामल्ल: । महाराज तेरीमत तो ऐसो है जो कपट कलित होय है सो ऐसी सरल वाणी नहीं कहै है ॥

हितकारी पद । शरनागतपालकममबानो । टेक ।

मित्रभावकरिकोऊआवै तजहुंनकबहूं असहुमजानो ॥

नखतेंकोटिसकौंखलदलसब राक्षसकाकरिसकतहमारो ।

विश्वनाथजोहोइदिगंशिरहू तऊलयावोकछुनबिचारो १ ॥

सुगल: । महाराज जो वाणी मैंकही सो आपकी शरणागत वानिप्रकट करन के हेत अबयाको मेरो समकरि दीजिये इति न:क्रांत: ।

(प्रविश्यससुगलोभयानक:चत्वारो मंत्रिणश्चप्रणमति)

भयानक: हितकारी पादयो: पतित्वा । हेसर्व भूत के शरण्य पाहि पाहि शरण शरण ॥

हितकारीउत्थाप्य । तुम तो हमारे अब बंधु समहो हम तुम को अभयदई सुगल जलनिधि जल ल्यावो इनको राक्षसपुरीको तिलक याही क्षणकरो ॥ सुगलस्तथाकरोति ॥

हितकारीअभिषिच्य । पारावार पारजानको विचार करो ॥

भयानकः। आप के शरै सेतु करन शोषण समर्थ हैं पै आप के पु· रषन की बनायो है यातें विनय करि मानराखिये वाही सों यतन पूंछिये ॥ हितकारी तथाकारोति ॥

डींलधराधरः। तीन दिन आप कों विनय करत भये यह आपनी जड़ताइही जाहिर करै है ॥

हितकारीधनुर्गृहीत्वा। जोनहीं प्रकट होइ है तौ या शरतें शोषे लेउंहों ॥ नेपथ्ये पाहि पाहीत महान् शब्दः ॥

(ततः प्रविशतिसाभार्यःसागरः)

सागरःसभयं। महाराज मोकों आपही जड़ बनायो है मेरीकहाचूक है आपके सैन्यमें बिश्वकर्मा को सुत है तासों सेतुबंधाइ लीजिये मैं धारण करोंगो ॥ इति निःक्रांतः ॥

सुगलः। हे वैश्वकर्म चलो वेगि सेतुबिरचो हम सब शैल लै आवैहैं इति सर्वे बानराःनिःक्रांताः।

आकाशे। छप्पै ॥ बृन्दबृन्दकपिइन्द्रलियेअनिलाहिद्रवआवत।
शैलसमूहहुसहितगगनभूतलसमभावत ॥
पटतजलधिखलभलतहलतअहिपतिनिश्केतहै।
अमितअंबुउच्छलतछहरिछितिछायलेतहै ॥
तजितजिदहार द्रुतमीनगन भभरिभभरि भागतअहैं ॥
असकौतुकभारीदीखनहिं जसहितकारीकरतहैं ॥

प्रविश्यसुगलः। महाराज सेतुतयारहै॥

(हितकारीवालुकामयंशिवलिंगंस्थापयित्वा)

सहर्षं। चलो पारावार पारकों ॥

इतिनिःक्रांताःसर्वेपंचमोंकः ॥ ५ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज बांधवेश श्री महाराज विश्वनाथ सिंह जू देवकृत आनन्दरघुनन्दन नाम नाटके पंचमोंकः ॥

— o —

अथ षष्ठमोङ्कः प्रारम्भः ॥

(ततः प्रविशति सपरिकरो दिक्शिराः)

दिक्शिराः बिहस्य । सुनियतु है बानर बहुत समिटे हैं औ सागर तजि मो सो रन करन बिचार करै हैं सो कौन आश्चर्य है पतंग प्रदीप में जरन कहा नहीं आवैं है कीर द्रुत तें जाइ खबरि लै आवै ॥

कीरः । महा राज बहुत भलो ॥ इति निःक्रांतः ।

(नेपथ्ये महा कलकलः)

दिक्शिराः मंत्रिणंप्रति । सोर बड़ो सुनो परै है कहा बानर उतरि आये ॥

प्रविश्य कीरः । महाराज बानरी सैन सेतु करि उतरी आवै है ॥

दिक्शिराः सत्वरं । चलो तो ऊंचे चढ़ि देखैं ॥

(इतिपरिक्रामति)

कीरः । महा राज यह देखिये दूजो उदधि ऐसो कपि दल देखो परै है ॥

दिक्शिराः । संख्या तो कहु ॥

कीरः । छंद तरंगिनी ॥ राक्षसपुरीचहुवोर । कपिनार्हिनर्हिंअसठोर ॥
चाकले कोसचालीस । मतचारिलामनतीस ॥ कपिबांधिसंघसमेत ।
कोउतकेउत्तरननेत ॥ आकाशहूदशकोस । कपिभीरभरो हरीस ॥

दोहा । भूपभूपयहसैनको निबलजीतनहार ।
शेषतसंख्याकरिसकैंगनैनोबर्षहजार ॥

दिकशिराः । अरे यातो बड़ो कौतुक लख्यो ॥

कीरः । महाराज पहिले हितकारी के उतरत बड़ो कौतुक भयो ॥

गद्य । आहव आल्हाद बदन बिलसत बिलसत एक एक के आगे बिहंसि बहुत हंसि बहुत बिनोद किल किला कोला हल करत कर तरु गिरि गहेन अटत गिरि परत गिरिपरत जलधि जलहलहलत हलहल तहां

के शब्द दिशन भरत भरत खंड मैं कछु सुनि न परत भयो ॥

छंद । बिबिधिजातितरुफलभोजनहितउसलतमबजलजीवभये । हित
कारीसरूपताकिछकिछकिछू जड़इवतहंसकलगये ॥ तिनचढ़िचढ़िबहु
क पटलउतरगोमोकौतुकप्रभुकहंलोकहौं । सुमिरिसुमिरिबहुअघटित
घटनाअबहूंलोंमैंठगिमोरहौं ॥

दिक्शिरा: । अरे लखाउ हितकारी कौन है ॥

कीर: । महाराज जाको काय में कोटि मरकत मनि क्रांति पेखी
परे है सोई त्रिभुवन में एक धनु धारी हितकारी है ॥

दिक्शिरा: सक्रोधं । अरे मो को डरवावै है भागु दुष्ट ह्यांते ॥

(कीर:सत्वरं सभयं नि:क्रांत:)

दिक्शिरा: आत्मगतं । अब नृत्य निरखन को समैं है ॥
इति निः क्रांतः (तत:प्रबिशतिससैन्योहितकारी)

हितकारी । सुगल संध्या भई यह सुबेल पैं डेरा करिये भोर देख
लेंइगे ॥

नृत्य पविशंति । (सेनना:)

पद लेहुसकलकपलाचनकोफल आजुसुछबिअतिभारी । कोसनाहके
गोदशीस धरि पौढ़ेहैं हितकारी ॥ भुजभूषनअनिलजपददाबत दहिने
डोलधराधर । बिश्वनाथबांएकछुभाषत मंत्रभयानकजयकर ॥ १ ॥

हितकारी चंद्रमवलोक्य । याके मध्य श्यामता नहीं है हौं या
अनुमान करी हौं पूवहीं श्यामा सर्बरी बियोगते पंचबान के बान
याहू को हियो फोरि गये हैं तिनके छिद्र हैं ॥

(डोलधराधर:)

पद । यकोकिरिनिपरमिकीउबिरहीकेउरअनलजगायो ।
किरनहिंकिरनधाइआगोयहि टरकोइलोचनायो ॥

सुगल: । ऊपरस्वच्छमलिनताभीतर मोइदरशीतांहयेहै ॥

चंतामल्ल: । बिश्वनाथप्रभुदुखहिदुखितर्भायहालाहलछिपिहै

(नेपथ्ये ध्वनि:)

हितकारी । हेभयानक दच्छिणवीर कहा मंद मंद मेघगरजैहै ॥

भयानकः । महाराज मेघ नहीं है दिग्गज नाच देखे है तहां की मृदंगध्वनि है ॥

(हितकारी मनुरागेण सर्वं निश्चिपति)

सुगलः । प्रभु प्राची दिशि तिमिरारि कैसे उदित होत आवै है जैसे अज्ञान को नाश करत साधक के हृदय में ज्ञान ॥

हितकारी । व्यूह बांधि चलो ॥ इति सर्वे निःक्रांताः ।

(ततः प्रविशति सपरिकरो दिक्शिराः)

दिकशिराः मंत्रिणंप्रति । अरे बड़ो आश्चर्य है मेरो छत्र चमर सब अंगनि के आभरन राति नट सार में आकस्मात् ई कटि गिरिपरे

सर्वकर्ममंत्री । महाराज या कछू अशगुन सो सूचित होइ है कपि दलो सुबेल उतरि आयो ॥

दिक्शिराः विहस्य । अरे तिर्यगयोनि में मरकट महा पशु होइ है आपनो मरिबोऊ जानै है पै मूठो ते मटरो नहीं छोड़ै है फंदि जाइ हैं ॥

प्रविश्यचारः। महाराज राक्षस पुरी चारौ वोर ते घेर गई या की-शन को शब्द आपहू सुनत होइगे जेहि ते समस्त पारावार धरा डोलै है ।

दिक्शिराः । यह सैन शब्द सुनि मोको कैसे सुख होइ है जैसे नवीन नायका को नूपुर ध्वनिसुनि ॥

नेपथ्ये । हाय हाय अबधौं कहा हो एक कीश पुनि पुर पैठि आयो ॥

प्रविश्यद्वारपालः। महाराज द्वार पैं एक बंदर खड़ो है कहै है मैं सुगल को पठायो आयो हों ॥

दिक्शिराः नेत्रसंज्ञया तमाकारयति ।

(द्वारपालो निःक्रांतः)

ततःप्रविशतिभुजभूषणः । (भुजभूषणः इतस्ततोविलोक्य)

छंद । तिय चोर कहाँ है ॥

दिक्शिराः । भुजशांखिनहींहै ॥

भुजभूषणः । निरलज्जनहींहै ॥

दिक्शिरः कटुभाषनहींहै ॥

भुजभूषण: । हौंतो यथार्थई कह्यो है पै प्रियहू सुने प्रभु भयानक को राक्षस पुरेश कियो सो कलंक तें डेराय प्रभु मों विनय करि अबहूं दूत पठाये जो विरोध छांड़ि महिजा को दे राखै तो राक्षसेश वही बनो रहै सो सुमि प्रभु की रुख पाय सुगल कहा या काज मोहिं पठायो है की तुम हमारे बंधु को मित्र हो यातें सीख दीजियतु है दशन तृन गहि प्रभु शरन आवो नातो तुम्हारे नामते प्रभु शर सप्तमी बहुव्रीहि समास करेंगे ॥

दिक्शिरा: छंद । असमोमेंकोऊकह्योनकबहूंजैसीसीखसुनावै ।
अहोमहाअचरजडेरवावैबैनरबंदरजगरावै ॥
काकोमुततैंकहैवेगिहौंयाकोहिकहापरीहै ।
भूखोहैइमंगाइदेउंफलदेननारिहरीहै ॥ १ ॥

भुजभूषण: छंद तोमर ।

कियमीतहै जगजीति । तेहितनयमेंप्रियरीति ॥
दिक्शिरा: । कहु कहु कुशल मम अंग ॥
भुजभूषण: ॥ भोवानवन्हि पतंग ॥
दिक्शिरा: । कहु कौन मारन हार ॥
भुजभूषण: । किय राम भहि जेहि छार ॥
दिक्शिरा: । पितु बैर तें नहिं लीन ॥
भुजभूषण: । प्रभु दीन तेहि फल कीन ॥
दिक्शिरा: । धिक धिक अरे बाप के वैरी प्रभु कहै है ॥
भुजभूषण: छंद । सुनु शठ सबके प्रभु हितकारी । शंभु धनुष जिन भंग किन्हो ॥
दिक्शिरा: । रेमतिमंद हरहु युत इरगिरि मैंकरिनिज करकौंल लियो ॥
भुजभूषण: । जो तोहि बांधिजानि दुज छोंड़यो तेहिनृप बिनजिय करि जोदियो । तेहिमुनि मदमोरन हितकारी बीसनयन सूझत न हियो ॥

(दिक्शिरा: सक्रोधं)

दोहा । दिगशिर जेहै समर महि तब ह्वैहै बल ख्यात ॥
भुजभूषण: । छुटै बरन दैअरध विधु उतरु गनु निजबात ॥ १ ॥
दिक्शिरा: साट्टहासं । अरे मरकट भटाई करै है जान्यौ जान्यो

तेरे बाप को मारडारयो है यातें तेरे जान लेई बलवान है ॥

छंदनराच । कराल काल दंडबिष्णु चक्रधार बक्रहू ।
लई बिचारि कायकी कठोर तासोअंग कू ॥
सुरेश लेइ बांदि मोर जोर खूब जान तो ।
अयानतैं प्रशंसि राजपुत्र मोन मानतो ॥

(भुजभूषणः सक्रोधं)

दोहा । हितकारी सों रन नहीं परो न कछुं खलराय ।
जीतिबिचारेसुरअसुरबैठेभयनब ताय ॥

दिक्‌शिराः छंद । परबलबलवाने । ममभ्रातितनमाने ॥

भुजभूषणः सक्रोधम् । यहहैपरमाने । अबहींखलजानै ॥

सवैया । अपनोपगमैंमहिरोपतहों सबभटतिलोभर टारहिंजो ।
तइंजोजाकहीहमसत्यगनैं अवलैतिनकोगनुहारहिंजो ॥

दिक्‌शिराः भटान्प्रति । तुमबैठे कहाकरौबोरसबै यह बंटरटाढो प्रचारहिजो । दिगनायकआजुहिमैंकरिहौंयहिकोगर्भहपायपछारहिजो॥

भुजभूषणः आत्मगतं । एकहीं बार ये हजारन सुभट मेरो पग टरावें हैं पै तिलो भरि नहीं डोलै सो हितकारी की कृपा है ॥

(दिक्‌शिराः सक्रोधं सिंहासनादुत्थाय)

रेरेकीशहों पाइ गहि सागर में फेकों हों अब बल करि रोप आपनो पग ॥

भुजभूषणः । अरे मेरे पाइ गहे कहा है हितकारी के पाइ गहै जातें विनाश न होइ ॥

(दिक्‌शिराः सलज्जंसिंहासने उपविश्यसक्रोधम्)

दिक्‌शिराः बांधो बांधो कीश कटुभाषी जान न पावै ॥

भुजभूषणः । अरे शठ सीख नहीं मानै है अब हितकारी के भूंखे बान तेरे कंठ श्रोणित पान करि अघाइंगे ॥

(इतिश्रागत्य हतबलअसुरोराजसान्हत्वा निःक्रांतः)

दिकशिराः । ये बानर बहुत ढीठ होय गये चलो अब इनके शिकार खेलन की तदबीर करें ॥ इतिसपरिकरोनिःक्रांतः ॥

(ततः प्रविशति हितकारीसैन्यञ्च)

हितकारीभयानकंप्रति । अब कहा कियो चाहिये ॥

भयानकः । हां ऐसी खबरि पाई है की दिगशिर अपने सेनानी कों पूर्व द्वार में टिकायो है तहां श्याम सेनानी को पठाइये दक्षिण द्वार में कुलिशरद कों राख्यो है तहां भुज भूषण को पठाइये, पश्चिम द्वार में कुनयन कों राख्यो है तिनकी सहाय में घनध्वनि कों टिकायो है तहां चेतामल्लकों पठाइये उत्तर द्वार में दिक्शिर आपई है यातें हम सुगल आप ह्यांई टिके रहैं ॥

(हितकारी नेत्रसंज्ञया ज्ञापयति प्रणम्यते निःक्रांता:)

नेपथ्ये । आसक कपि प्रबल आइ लूम पुर लाय लाय कीन विकल भल अब कपिन दल कोलाहल हहल हहल हालत महल हाय हाय कहा होय ॥

पुनर्नेपथ्ये । माइ रुख दग्गल चढ़ि चढ़ि वहल जहल पहल तन अति बल राक्षस नदल कढ़त धूरि धुंधकार मार्तण्ड मढ़त बाजिन बढ़त देखो कैसो युद्ध होइ है ॥

प्रविश्य चयो वानरा: । महाराज कुनयन औ अचल कों चेता मल्ल कुलिशरद कों भुजभूषण औ दिगशिर के सेनानी कों आपको सेनानी संयमनीपुरी निवासी करि दियो ॥

सुगल: सहर्षं । कहि दीजियो जो निकसै ताकों याही भांति मारिडारैंगे ॥

(नेपथ्ये महाहलहला शब्दः)

(ततः प्रविशंति श्याम भुजभूषणचेतामल्लः)

सुगल: । कौन कारण तुम आये ॥

त्रयोभटा: । उत्तर द्वार ह्वै दिगशिर कढ़े है यातें अपने अपने द्वार में भारी सेना टिकाय हम आये हैं ॥

(ततःप्रविशतिदिक् शिरा: सैन्यञ्च)

हितकारी । हे भयानक यह दल के महा भटन को चिन्हावो ॥

भयानकः छंद । रसवीरनोमुखलाल । करिकंधपरसमकाल ॥
घनसजलसरमशरीर । दुजोअचलयहवीर ॥
प्रलयागिसमजेहिदेह । मातंगजेहिसमनेह ॥
बलअहिसमपुरहूत । नक्राचरासभपूत ॥

करशूलकरसुरशूल । सुरकालनामअतूल ॥
जोचढ़ोबारनवीर । अतिउदरयहरणधीर ॥
करशूल वृषअसवार । जयपुरइदिगशिरबार ॥
अहिलिखोध्वजबलवान । बड़अभैसुतघटकान ॥
करशक्तिद्वयसमनट्ट । यहमानवांतकभट्ट ॥
करपरिघबलसमशुंभ । हैनिघटसुतअतिकुंभ ॥
गिरितीनसमहिशरीर । अतिबलधरेधनुतीर ॥
बाढ़तरहतसबयाम । अतिडीलयाकोनाम ॥
केहरीअंकपताक । याकीचहूंकितसाक ॥
जेहिजोरजगतसभीत । घनध्वनिअहैसुरजीत ॥
नभलगेजेहिरथमाथ । धनुबानबीसहुहाथ ॥
बहुभूतरथचहुंओर । हैयहैदिगशिरघोर ॥

हितकारी सस्मितम् । याको जैसो सुनत रहे तैसोई है सहस्र सहस्र कर सम प्रकाश सों याके आनन नकी भांति निहारे नहीं जाइ है जैसो यह निशिचर परिवार पालन हार बल पारावार है ऐसो दूजो संसार में बिचार में नहीं आवै है अधरम अगार जो न होतो तौ याको संहार करन हार कौन हुतो ॥

दोहा । बहुतकियेश्रमडीठिपथ परयोआजुदिगशीश ।
बीसबिसेंसुदहेतमोहि धरिधनुशरभुजबीश ॥

दिगशिरा: । अरे महा सुभटौ सुनो जानि जो बानर किलामें पैठि जाई तो न बनै यातें तुम सबलौटि जाव मैं अकेलहीं मारि लेंउगो ॥

सर्वे तथेति निःक्रांता:

(दिक्शिरा: सक्रोधं धावति)

सुगल:स्वगतं । पद । आजुबखतरअभुफूलेनसमातुहैं । देखिदेखि दिगशिरफेरतस्वकरशरधनुपकप इवारबारमुसुक्यातहैं ॥ रोमरोममेंद छायेदेवनक्षोभलभाये छनछनसुछबिछटनअधिकातहैं । बिश्वनाथ मनयाहिऔसरमेंदेखौपरेआपैंआमुखलसोंलराईलेनजातहैं ॥
सोअबहमहींआगेहोंय ॥

(इतिगिरितरुकर सैन्यसहितो धावति)

हितकारी। डीलधराधर देखो बानरन के चलाये गिरितरु समूहनतें दिग्गिर कैसो मुंदिगयो जेसे वर्षा कालके मेघन तें महा महीधर। फिरि बानन तें गिरितरुकाटिकैसे निकसि आयो जैसे सूर्य नीहारतें॥

डीलधराधरः। देखिये महाराज सुगल को तो एकही बान तें मूर्छित करि दियो आज्ञा होइ तौ मैं जाउं॥

हितकारी। यह त्रैलोक्य विजयी है सावधान युद्ध करियो॥

भयानकः श्यामंप्रति। श्याम जीलो डीलधराधर प्रभु को प्रदक्षिणा दे प्रणाम करि चलो चहै तौलौं चेतामल्ल दिग्गिर के ग्रेर बचाइ देखो नियरेहीं खड़ो भयो जाइ॥

चेतामल्लः। तोको बड़ो बलवान सुन्यो है सो मेरे उरमें एक मुठका लगाउतो मैं देखौं केतो बल है॥

दिक्गिराः पवन को बल तो मेरो तोलोहै तोहू को बलवान सुनो है यातें तेंहीं मेरे उर में मुटका लगाइ ले फिरितो प्रेतपति पासहीं पहुंचैगो॥

चेतामल्लः। अरे नयनकुमार को खबरि करै॥

दिक्गिराः। सक्रोधं मुष्टिनांप्रहरति चेतामल्लः घूर्णतन्नाटयति॥

(पुनःधर्य्यमास्थाय तत्प्रहारंकरोति)

दिकगिराः सकंपस्॥ श्याबास बीर श्याबास आछो बल है तेरो॥

चेतामल्लः। धिक्कारि मोको है जोतूं मेरे मुठका तें न निःप्राण भयो अबतूं प्रहार करि ले फेरि जो बचैगो तो सराहिलेइगो॥

दिक्गिराः सक्रोधं सर्वाभि मुष्टिकाभिः प्रहरति।

(चेतामल्लःमूर्छांनाटयति)

दिक्गिराः। सूत मेरी रथ सेनानी हंताके सन्मुख करै॥

(इतिश्यामं बाणैराछदयति)

हितकारी। पद॥ तबहु भयानककंपितनभूधर।
बानवचाइघात करिघूमत कहुंधुजकहुं भुजकहुंशिरऊपर॥
बीसहुभुजमेंगाइननपावत सोनितमयतनकियोंकिशबर।
कपिकल्यानबिगुनाश्रईइअब रोषितखल अनजास्वलियोकर॥

दिक्शिरा: । ध्यामूं भगिभजि बच्यो है जो या भान ते बचै तो तोको वीर कहों ॥

(इतिशरं निक्षिपतिश्यामःमूर्छांनाटयति)

ततो वलोक्य डौलधराधर: धावति

दिक्शिरा: बाणधारामुंचति ॥

आकाशे । गद्य ॥ दोनों बरिबंड दोर दंड धरि कोदंड करि मंडलाकार परम प्रचंड कालदंड सम मानन सौं मारतंड मंडल मढ़मढ़ी नवखण्ड पूरत हैं देखोदेखो डौलधराधर तो या शर सों दिगशिर को मूर्छित करिदियो ॥

(दिक्शिरा: उत्थाय शक्तिं मातोल्य सातिक्रोधं)

डौलधराधर । सावधानहोउ यह वज्रदत्तशक्तिसों तुमको धराडोलधर करत हों ॥ इतिमुंचति ।

आकाशे । आश्चर्य है आश्चर्य है यह परम अमोघ महा ज्वलित शक्ति चेता मल्ल बीचही में गहि समुद्र में डारि दियो । नारद मेरी दई शक्ति निःफल देखि क्रुद्ध दिक्शिर मरहीं पर न आवै यातें तुम जाइ चेतामल्ल को बोलाइ रणबाहेर ल्याइ बातन लगाइ राखो मैं सूक्ष्म रूप बनाइ दिगशिर पास जाइ उत्साह बढ़ाइ फेरि शक्ति चलवाइ देउंगो ॥

बहुतभलो । दिक्शिरा: सोत्साहंशक्तिंमुंचति ॥

(डौलधराधर: मुर्छान्नाटयति)

(दिक्शिरा: रथादुत्तीर्य्य डौलधराधर मुत्थापयति)

सूत:स्वगतं । अरे जौन कैलाश उठायो ताको उठायो नरतनु नहीं उठै अहो महा आश्चर्य है ॥

चेतामल्ल आगत्य । अरे जोलों मैं मुनि सों बात करों तो लों बड़ो अनर्थ होइ गयो ॥

(इति सातिक्रोधंमुष्टिकयादिक्शिरसोवक्षसि प्रहरति)

सूत:आत्मगतं । छंदनराच । महारबज्रवज्रकोत्विचानलोहितोभई । सोएकमुष्टिकेलगेगिरयोरथैबिसंज्ञई ॥ अहोमहाअचर्ज्जोदिग्गशीसतोलि हारिगो । उठाइताहिनाथपाशकोशिकोखधारिगो ॥

दिग्विजयः उत्थाय । हांकु हांकु मेरो रथ निर्वानसी उर्वी करि देउं ॥
चेतामल्लः । महाराज जैसे विष्णु गरुड़ की पीठ चढ़ि दैत्यन को संहार करै हैं तैसे मेरी पीठि चढ़ि आप खल को संहार करिये ॥
(हितकारी तथाकृत्वा धावति)
भयानकः सुगलंप्रति । अरे चेतामल्ल तो दिग्विजय के समीप पहुंचगो॥
सुगलः । देखो देखो हितकारी की हस्तलाघवी आश्चर्य है आश्चर्य है ॥
पद । छनमेंदिग्विजयकेधनुध्वजरथ हयसारथिधुजबखतर ।
छत्रचमरसबमुकुटकाटिदिय अतनरमरडरपर ॥
अथखलविकलजुनेकचढ़ाढ़ो जिमिपविहतपरगिरिवर ।
विश्वनाथजेजेहितकारी बिलसतरनधरिधनुशर ॥
हितकारी । आछो पुरवारथ कियो अब जाउ सैन साजि फेरि आइयो ॥
दिग्विजयः सलज्जं निक्रांतः ।
(हितकारीडोलधराधरसुत्य धारिंग्य बाष्पावरुद्धकंठं)
पद । रहेहुहमारेप्रानहिभाई । टेक ।
तुअयहइआजियतमैंकाहे यहअचरजअधिकाई ॥
देहौंकहाजननिकोउतर अवपुछिहैअकुलाई ।
विश्वनाथइहहइजगकारी तिनकोहोइसहाई ॥
चेतामल्लः सगर्वम् पद । नाथनेकुजोआसनपाऊं ।
नागसुरनरजीतिअमृतले डोलधराधरज्याऊं ॥
मृत्युपासकोतोरिगुरतसव जगतेअभैबनाऊं ।
होइजोवंतुकालउदरहूतो फारिकाढ़िलेआऊं ॥
दिग्विजयसोसनतोरितोरिगृहि डारहराहिपहिराऊं ।
राकसपुरीसपरिजनरजकरि वारिधबीचवहाऊं ॥
छलकरिविविधदीनोमोहिंधोखो तिनहूंकहंसमभाऊं ।
विश्वनाथपदसपथफेरिफल समरक्षांडहिखाऊं ॥
हितकारी । ये पराक्रमनतें तो विश्व को उपकार ई है ॥
वैद्यकपिः । महाराज देवासुर संग्राम में बृहस्पति द्रोनाचल तें औषधी ल्यायदेवन जिवावत रहे हैं सो चौंसठि हजार योजन पर है जो रात्रि भरे में औषधी आवै तो डोलधराधर जीवै ॥

चेतामल्लः । महाराज मोकों आज्ञा दीजिये जौलों तेज ते लागि मैं सरिसो फूटे है तौलों लय ऊंगो ॥

हितकारी । जाव अपराजिताकू की खबरि लेत आइयो ॥

(चेतामल्ल स्थयेति निःक्रांतः)

हितकारी । देरबड़ीभई चेतामल्ल न आयो कछू कारण है ॥

(ततःप्रविशतिचेतामल्लः)

वैद्य कपिः । प्रभो यह तो शैलही ले आयो औषधि पौन परसि सकल कपि दल जियो डौलधराधर औषधि सुंघाये जिये अहो महाअमोघा शक्ति हुती ॥

डौलधराधरः । कहां कहां दिगशिर रण प्रचारि मारौं ॥

हितकारीगाढ़मालिंगति । डौलधराधरः पादयो पतति ॥

(हितकारीसखेहंचेतामल्लमालिंग्य)

पद । तुममम बंधुप्राणकेदाता । टेक ।

कहा देउं तोहि जगमेंबिरच्यौ यह उपकार अमोलबिधाता ॥

चेतामल्लः । जोमोपरप्रभुकृपाभांतियहि दुर्लभकहामोहिंसुखदाता ।

बिश्वनाथजोहिचहहुदेहुयशे होतुमहोंत्रिभुवनकेत्राता ॥

हितकारी । चेतामल्ल बिलंब तुमको काहेते लगो ॥

चेतामल्लः । इहां ते जाइ अचल उठाइ आवत आड़िवे आये अमरन सों समर जय पाय अपराजिता ऊपर आयो तहाँ डहडह जगकारी होम करत हुते तिन कोनो बिघ्न मानि बाण मार्यो मैं हा हित- कारी कहि महि पर्यो तब धाइ पास आइ अति पछिताइ बहुत बिलाप करनलगे तब जोनिज आइयाहो अद्रितें औषधी लै जिआय दियो तब मैं इहां की खबरि सुनाइ या कह्यो बान लगे मोमे पराक्रम तैसोनहीं है तब उनकह्यो मेरे बानमें चढ़ि छनहोंमें जाय तब मैं बड़ो रूपधरि शैल समेत चढ़यो जबरन श्रवण लगि खेंच्यो तब मैं उतरि गर्व त्यागि बिनयकरी आप हितकारी के तो भाई हैं या कोन बड़ो आश्चर्य है अबमैं आपकी कृपैसों छन में पहुंचोंगो याकहि सबको कुशल लहि प्रभु पद पद्म पर्यो आया ॥

(बानराःनेपथ्यमवलोक्यकोयंमहाभीमशरीरइतिपलायन्ते)
भयानकः । अरे भगौमति दिगम्बर यह बिभीका खड़ी करी है ॥
हितकारी । श्याम जाय दल को स्थापन करें ॥

भयानकंप्रति ।

दो० । लगेवलाइकजासुकटि लहतकाछनीसोभ ।
कहहुभयानककौनयह करतकपिनदलक्षोभ ॥

भयानकः । यह दिगम्बिर ते छोटो मेरो जेठो भाई घटकान है आप के बाणतें पीड़ित डेराय दिगम्बिर याकों बड़े यत्नतें जगवायो है सो यह ताके पास जाइ है ॥

हितकारी । याको पराक्रमहू तो अपूर्वई होइगो ॥

भयानकः । छंद ॥ नन्दनबनअपसरनखाइ लियवासव गजचढ़िधाये ।
यहिंऐरावतरदैखैंचि उर हन्योमुर्छि महिआये ॥
जगिभगिविथितविनयकियबिधिसोंतिनहमतिहुंनबोलाये ।
विश्वनाथ दिय शाप याहि यह जगहि न बिना जगाये ॥
फिर दिगम्बर के अस्तुति किये या कह्यो वर्ष में द्वै रोज जागै ॥

(ततः प्रविशति घटकर्णः । बानराः दृष्ट्वापलायन्ते)
(चेतामल्लानुगतोभुजभूषणःभजसुत्यायोद्धै:)

कवित्त । बलकिबलकिनिजबाहुनकेबलबड़ेक्रुद्धयुद्धहेतआयेबीरता बढ़ाइकै । संगकुलकानिसबबैरनिनिबिसारिदेन्हे देखेएकमासतुह चले हो पराइकै ॥ धीरजको धारि मारिगिरिनिगिरावो याहि भाजि कहलौं जीहौमुख टारनदेखाइकै । जीतेजगविजयबारोययहै अनूप यारो मरे मोहभारीमारतएडभेदिजाइकै ॥ १ ॥

स्थित्वाबानराः । कवित्त ॥ कैधौं दिगम्बिसकाल ऐनजायजोतिल्यायो सोईहिरनाक्षधायेरोसितसहाइकै । कैधौंबंडौखानेजाइकालहीकोंखोलिदीन्हो धायोआवैभस्मनकोबदनबढ़ाइकै ॥ कीधौंनिजगर्बजानि बलिजूमोय चिल्यायो बाढ़िधायेबावनयेबीररंग छाइकै । कैधौं सोई पूजाकरिरुद्रकेरिभाइलीन्हो ईप्रलय हेतआयेमलकरलाइकै ॥ २ ॥
भुजभूषणय.सोंभिरिवोतोभभांतभारईकोकूदिवोहै ॥

भजभूषणः । एकतो समर फिरि हितकारीके अर्थ शरीर छनभंगुरई

ही यासें हम सब को सिनयुक्त हूं मरनहि करिबोई उचित है ॥ नातक हितकारी बानरन्ह में पतंगई होय है फिरि पछितावई हाथ रहि जायगो ॥

चेतामल्लः । अरे डरो कहा है आवो आवो मेरे पीछे तो चलो ॥

(इतिश्रुत्वा सक्रोधं तदभ्यतो धावन्ति)

हितकारी । देखो सुगल याके बपु में परबत पुंज कैसें परे हैं जैसे परबत पर बेर ॥

सुगलः । मर्कटन लिपटे तन कैसो शोभित होइ है जैसे रोम रोम ब्रह्मांडन बलित महा बिराट ॥

भयानकः । बिलोकिये मरकटमको कैसे भारि देह है जैसे मत्त मातंग महावतन कों औ मुख भरि भरि कपि भालु भारी भटन कैसे भखै हैं जैसे दीर्घ दावाग्नि द्रुमन ॥

चेतामल्लः घटकर्णंप्रति । खबर दार होय यह गिरि मेरो फेंको आवै है ॥ (इतिनिक्षिपति)

भयानकः । श्याबास चेतामल्ल श्याबास जाको बज्र न बाधा कियो सो घटकान तेरे प्रहार तें भूमि में जानु भरि आइ रुधिर बमन करि दियो ॥

घटकर्णः उत्थाय बिहस्य । श्याबास चेता मल्ल या मुठका सहै ॥ इतिप्रहरति । चेतामल्लः मूर्च्छांनाटयति ॥

(भजभूषणः सक्रोधंमुष्टिनाघ प्रहरति)

सुगलः । देखो देखो घटकान तो घूमि कै एकहो मुठिका तें भुजभूषणऊ कों भू भेंटाय सकल कपिकुल कलेवई सो किये लेइ है ॥

इतिसंद्रुत्य । अरे नीच कहा तुच्छ कपिन को पुच्छ पकरि पकरि चरण कचरि कचरि बिचरि बिचरि स्न घोंच शोणित कोच करै है मेरेसन्मुख आवै ॥

घटकर्णः विहस्य । श्याबास बीर श्याबास ऐसेमोसोंकोई नहींकह्यो ॥ इति शूलंनिक्षिपति । (कपीश सैन्य हाहाध्वनिः)

श्यामः पद । अचरजचेतामल्लकियो । टेक । महाशूलघटकानमवारो तेहिगहिकरिचै टूकदियो ॥

अबयहखलमलयाचलकेरी शृंगकाईयोजनकोलियो ।
बिश्वनाथबिधिकहाकरैधौं ताकिमेरोअतिडरताहियो ॥

घटकर्णः प्रहरति । (सुगलः मुर्च्छांनाटयति)

कच्छराजः । हाय हाय सुगल को कांख दाबि शठ लिये जाय है ॥

डीलधराधरः । पद ॥ चेतेमल्लआतुरआतिभावत ।
याप्रतिभिरतभटचधरिभूधर रन उत्साह हमढावत ॥
आदिलराहमनहुंसगरमधि दुश्मनधरानधरिधावत ।
बिश्वनाथसोसभसैनको अभयआसुवनावत ॥ १ ॥

चेतमल्लः आत्मगतम् । जो मैं युद्ध करि घटकान तें सुगल को छोड़ाइ लै आऊं तो स्वामी भयश को पताका कहाऊं जब जग ते तव हितकारी के कृपा ते पराक्रम के छुटिहो आवैं ॥

(ततः प्रविशति सुगलः)

हितकारी सहर्षं मालिंग्य । मित्र कैसे छुटि आये ॥

सुगलः । राक्षस नगरी की अटारिन नारिन तें बरिसित दधि अक्षत सुमनादि शीतलता तें मेरी मूर्छा जागी तब छोटो रूप करि कांख ते निकरि निज पगन तें पांजर पकरि रदन तें नाक काटि करन ते करन छांटि नट नाटन करि उछलि आय पग पर्यो ॥

हितकारी । श्याबास मित्र श्याबास बड़ो बिक्रम किये ॥

(ततः प्रविशति सातिक्रोधं घटकर्णः)

हितकारी । अब तो अधिक भयानक देखा परै है ॥

सुगलः । महाराज या कतन को मुख में भरि लेइ है केते नाककान की राह भजै हैं तिनहूं को गहि अंग में अंगराग करि लेइ है केतेन को पाद प्रहारई ते मही मिलाय देइ है यह खल कपिकुल को कुपित कालई सो है ॥

डीलधराधरःसक्रोधमुपद्रुत्य । अरे तुच्छ ये बिचारे बानरन को कहा मारै है मो पर आव । इति शरान मुंचति ॥

घटकर्णः । तुम्हारे बानन सों मैं संतुष्ट हौं तुम बड़े बीर हो पै या समय मो हितकारिहो के युद्ध की बांछा है ॥

डीलधराधरः सामुत्तानिह्यम् । जोंह काय मरकत कूट कांति

वारी कर शर धनु धारी भयानक तिलक कारी हितकारी बढ़ रहे हैं ॥

(घटकर्णः उपद्रुत्य शैलंनिःक्षिपति)

भुजभूषणः । देखो देखो हितकारी शर शरन तें शैल धूरि ह्वै गयो अब घट को शरीर मल्लकी कैसो कोड़ गयो ॥

घटकर्णः दोहा । घातिनेयरासम्नहीं नमैंइन्द्रसुतकीश ।
हैंघटकानमहाबली जेहिडरदरिनदिगीश ॥

इति धावति ।

हितकारी शरन्मुक्त्वा । देखो जिन बानन तें तालन कोछेद्यो रामभ कीं इन्द्रसुत को मारयो ते याके शरीर में पीड़ा नहीं करे हैं सांचई विश्व में एक बलवान है ॥

इति सक्रोधं शरंमुंचति ॥

सुगलः । देखो ससैल दच्छिन कर याको हितकारी काटि डारयो तातें महा परवताकार ह्वै हजार योधा दबि मरे ॥

भुजभूषणः । कका देखो देखो बामहूं कर काटि डारयो ॥

(घटकर्णः मुखं प्रसार्य्य धावति)

आकाशे । देखो देखो हितकारी शरन कट्यो याको शिर हर कि हिम गिरि चपायो अब धर गिरे भरत खंड की धों कहा दशा होन चहै है ॥ (भयानकः)

भजन । हितकारी हखपाइपवनसुत अतिमचरजयहिसमयकियो ।
ऐसहु डीललपेटिलूममें पवनभ्रमनमहंफेंकिदियो ॥
भरतखंडकोगिरेजीवन होतबिनाश्रबचाइलियो ।
विखनाथयहिसमबलवारो सुन्योनदेख्योविश्वहियो ॥

(नेपथ्ये रोदनशब्दः)

तत प्रविशति त्रिमुंड मानवान्तक सुरान्तकात्युदराति पार्श्वेदीर्घदेहाः ॥

(मानवान्तकः अश्वं संचाल्य मल्लं न प्रहरति)

सुगलः । अरे यहदिगविर सुबन आपनो अवतारहुते तरल हय चलाय कपि भालन भाला तें ऐसो भेदे है जातें न युद्ध करि सकैं न भय सों भाजिही सकें पुत्र भुजभूषण तुमहूं तो देखो ॥

भुजभूषण: उपद्रुत्य । अरे नीच ये तुच्छ बानरन की कहा मीच करे है मेरे उर में प्रहार करें देखों तो कैसो तेरो भालो है ॥
अत्युदर: सुरान्तकंप्रति । अरे अमोघ भालो याकपिके उर लगि टूट गयो औ अम्बहू एकही याघर को भयो ॥
त्रिमुंड: अरे देखो देखो मानवांतक के मुष्टिका प्रहार तें विकल भुजभूषण रुधिर उगिलि फेरि मुठका बांधो धों कहा होइ ॥
अत्युदर: । अरे याको तो कपि अंतई करि दियो चलो तीनों मिलि याहि मारें ॥ इति गजं प्रेरयति ॥
(त्रिमुंड: रथंचालयति सुरांतक: परिघ मुद्यम्यधावति)
त्रेतामल्ल: । श्याम देखो भुजभूषण को पराक्रम तीनों अंतरघिन के प्रहारन कों निवारन करि अत्युदर के बारन को बिदारन कियो पै अकेले हैं हमहूं गिरितरु धारन करि खल बिकरारन मधारन में मारिये ॥ इत्युभौ धावत: ॥
त्रेतामल्ल: त्रिमुंडस्य हयान् हत्वा रथं चूर्णयति ॥
त्रिमुंड: खड्गेनप्रहरति ।
सुरान्तक आत्मगतम् । अहो बड़ो बलवान बली मुखहै करते कृपाण छीन त्रिमुंड कों असुंडकियो ॥ इतिसक्रोधंधावति ॥
श्याम: अरे नीच मेरी ओर आवे ॥

(अत्युदर: मुष्टिकया प्रहरति)

अतिपार्श्व: स्वगतं । अहो श्याम नखन तें नर सिंहई इव याको उदर बिदारि डारयो ये बड़े बलवान तीनों है ॥
इति मुगलंप्रति धावति । वृषभकपि:मध्ये गृह्णाति ॥
(अतिपार्श्व: । गदयाप्रहरति । वृषभ मूर्छांनाटयति)
मुगल: भयानकंप्रति । देखोतो याको पराक्रम जोलों मूछित करि अतिपार्श्व मेरे पास आवै तोलों याही की गदा लेवाही को शिर फेरि डारो ॥
श्याम वृषभ भुजभूषण त्रेतामल्ला: हितकारिणमुपसृत्य प्रणमति)
मुगल हितकारिणौ । श्यावास श्यावास ॥

(ततो दीर्घदेहः रथं चालयति)

बानराः सन्मुखं धावंति हितकारी । या ते बड़ो बलवान त्रिलोकी पर है एकही एक बान तें युत्थन गिराय दियो बिकल सकल कपिदल ऐसो भयत भाजो आवै है यटकानही तो नहीं है प्रान धरि यान चढ़ि आयो यह कौन है ॥

भयानकः पद्य । उदरअपसरतेयहपैदा दिगशिरकोदैपूत ।
अभैकियेभुजदलहयहयपुर जीतिकालपुरहूत ॥
धरमज्ञकृतज्ञसत्ययुत बिद्यापढ़ीअभंग ।
ज्ञानवानविभुनाथबड़ो यहकरतरहतसतसंग ॥
यो बड़ो धनुर्द्धर है बड़ो अक्षय बारो है या है तो छन में संहार करै याते बेगहीं ततबीर करिये ॥

दीर्घदेहःसैन्यमुपसृत्य । जिन बानन बासव बारन कुंभ बिदारनकियो ते बानरन के ऊपर संधानत शरम आवै है या सैनमें जो कोई बड़ो बली होइ सो निकरि आवै ॥

(डीलधराधरः धनुर्विस्फार्य उपद्रुत्य तत्पुरतस्तिष्ठति)

दीर्घदेहः । अरे हितकारी बड़ो निर्दय है काल समजो मैं ताके आगे बाल खड़ो करि दियो है अब तुम धनुष बान धरि जाव मैं तुमको प्रान दान दियो ॥

डीलधराधरः । अरे मैं ऐसो बालक हौं जैसे बामन ॥

(उभौपरान्निक्षिप्य युद्धं नाटयति)

भयानकः युगलंप्रति ।

गद्य । देखो तो सुर असुर नाराचिक नासच वत्सदंत दंदशूक नतपर्वा बाराहकर्ण कर्ण विकर्ण बैतस्तिक अर्द्धचंद्र भल्ल बाण वृन्दन तें आकाश अनवकाश ह्वै गयो ॥

दोहा । पटपटशब्दपताकको चापचटचटाघोर ।
घंघघ टचक्रनघहर रचोयकहू घोर ॥ १ ॥

देखो वाके मण्डलाकार उद्दंड को दण्ड ते कालदण्ड सम बाणवृन्द व्योम मढ़तई देखपरै हैं ॥

युगलः । देखोतो डीलधराधर को हस्त लाघवी तेहि अरु समूहन

(कोमिज घरणा तीन तीन टूकही देखावै है याको दीघ देह) घर जाल ते ऐसे छावे है की अंतरालहू ते महीं पक्षी परै ॥

भयानक: । देखो दीर्घ देह घरन कोटि कैसे कढ़ि आयो जलनिधार ते सूर्य देखो अब आचमन लै दिव्यास्त्रन को प्रयोग कियो चाहै है ॥

आकाशे । हाय हाय महा प्रलय देखाय है वायु तुम जाय बेगि डीलधराधर के काम लगि कहो याको बध विधि ब्रह्मास्त्र सों ते विरच्यो है विलंब किये बड़ बड़े अस्त्रन तें ब्रह्माण्ड बरी जायहै ॥

डीलधराधर: दीर्घदेहस्य शिर: सत्वरं छिनत्ति ।

वानरा: सहर्षं जयजये त्युच्चन्ति ॥

(नेपथ्य रोदन शब्द:)

पुनस्तत्रैव । आप शोक तजि सबको समुझाइये मैं मुहूर्तई में मारे आयोहों ॥

आकाशे । हवन करि घन ध्वनि अदृश्य भयो अबधौं कहा करै ॥

युगल: । यह महा अंधकार होइ गयो अस्त्र शस्त्र की वर्षा चारयो ओरते होय है अहो कहा है ॥

भयानक: । यह घन धुनि की मायाहै ॥

डीलधराधर: सक्रोधं । यह खल छल करि बामन सों बानरन को बध कियो यातें मैं अपने अस्त्रन सों सकल निश्चर संहार करोहौं ॥

हितकारी । याको ब्रह्मा को बर है यातें तुमहू हमारी नाई मर्छित ह्वै मरयाद मानो जो कछु करन होइगो सो पाछे करैंगे ॥

(इतिसानुज: मूर्छांनाटयति)

घनध्वनि: । अरेरामसो जिनके भयसों पितु भीत रह्यो तिनको विनाश सुमाइ हरायत कारी ॥ इतनि:क्रांत: ॥

आकाशे । हाय हाय अबकौने बचैगे ॥

भयानक: उल्काप्रज्वाल्य सेनामवलोक्यते ।

(वेतामल्ल: भयानकस्य ध्वनिं श्रुत्वा उत्थाय)

भाई भयानक कहो कहा कौन कौन बचे ॥

भयानक: । चलो देखैं

(इत्युभौ परिक्रम्य चिरंजीवि ऋच्छं विकलं दृष्ट्वा)

भयानकः। ऋच्छराज तुम्हारो हाल कहा है॥

ऋच्छराजः। घायन तें अति विकल तुम्है बेकहीने चन्दोहौं कहै चेत मल्लजिये हैं॥

भयानकः। चेतामल्लहीके पूंछिबे में कहा कारन॥

ऋच्छराजः। जोचेत मल्ल जीवत होइगो तो सब जीवतई हैं॥

चेतमल्लःपादयोपतित्वा। आज्ञा होइ॥

ऋच्छराजः। तात जाइ औषधि गिरि ल्याइ सबन जिय वो॥

चेतामल्लः प्रणम्यनिःक्रांतः।

नेपथ्य। अहो राक्षम पुरी आकस्मात डगमगातभई कहा उतपात है॥

(ततः प्रविशति पर्वतपाणि चेतामल्लः)

सुगलः। अहो औषधि पौन परसत हमारी सब सैन उठि खड़ीभई राक्षस नहीं जिये यो बड़ो आश्चर्य है॥

भयानकः। दिगशिर मृतक राक्षमन के शरीर समुद्र में डराइदेइ है॥

सुगलः यक्कुभट निपट कपटकरि कूलि कपि सुभटन कटक काटि पुहुमि पाटिगयो भुजभूषण तुम भारी कपि भालुन लैभूरिभूरिछनचारि वारिविभावरीचरनभौनभस्म करिदेउ॥ भुजभूषणास्तथेति निःक्रांतः॥

(नेपथ्ये कोलाहलः)

छंद। करालक्रोश कोपिकैलुकैठल्याइल्याइकै। दई लगाइ आगि चारि ओरधाइधाइकै॥ सुवर्णहेन व्योमलोंसबैमहाबरैंढरैं। नचाटभाजि जानजातजानहायहाकरैं॥

प्रविश्य अंभ्रातचारकपिः। महाराज दिगशिर शासन पाय लै विकट कटक घटकान सुत घटनिघट धाइ आइ झटित शरन चलाय बड़े बानर न हटाय दियो निज भटनवीर रस बढ़ाय भुजभूषण कट कटाय उदभट कूरन कूटिघटही सो जाय भिर सो बीर बानन सों बली बानरन व्यथित करि भुजभूषण भालको खाल काटि डारी येनाम करसों सो उठायो नैन मूंदिवे बचाये युद्ध रहै वह छन छन मूर्छा करै है॥

सोइ हि गं सुगलः । चिरंजीवी चिरंजीवी ऋच्छ बानरन ले धावो धावो भुज भूषण की सहाय करि शठहि समर सोवावो ॥

(श्रुत्वा तथेति निःक्रांताः)

सुगलः । अरे अब युद्धको सब खबरि कहि जाय ॥

चारः । महाराज बड़ो युद्ध भयो जामें बानरन राक्षसन को बड़ो संहार भयो ॥

(सुगलः ततस्ततः)

चारः । तीन राक्षस बड़े बलवान बड़ो युद्ध किये तामें एक कों भुजभूषण मारयो द्वैको पकरि चले तिनको आश्विनेय दोनों भाई बीचही बड़ोयुद्ध करिमारयो ॥

(सुगलः ततस्ततः)

चारः । क्रुद्ध होइ घट रथ चलाय सब को बानन सों बिकल कियो ॥

प्रविश्य ससंभ्रमं द्वितीय चारः । महाराज जो सेना आप पठाई सो भुजभूषन पास नहीं पहुंचन पाई घट बानन सों बीचहीं आड़ि अचल बनाई ॥

सुगलः स्वगतं । अरेबड़ो बलवान है ॥ इतिसत्वरंनिःक्रांतः ॥

नेपथ्य । अरे घट तैं धनुर्द्धर आपने काका की बरोबर है देह बल बाप कैसो है धों नहीं, अरे कौश शरीर शक्तिहू समुझाये देउं हौं ॥

(पुनश्चटचटाशब्दः)

प्रविश्य चारः । सुगल प्रभु समीप तें सिधारि घट को प्रचारि मल्ल युद्ध धारि ताको सागर में पवारि दियो सो ओदोही धोतो धाय धरनि कंपाय सुगल शिर मुठका लगाइ निज भटन उत्साह बढ़ाइ महा गरज्यो सुगल सम्हारि रद अधर धरि एकही मुठका प्रहरि घट शिर घटहो सो विशरित करि केहरि नादकियो ताको निधन निरखि निघट धायो त्रेतामल्ल बीचहीं हुंकारयो सो परिघ मारयो सों टूटि टूक बिपुल बिपुल उलका बेष धारयो ॥

(हितकारी ततस्ततः)

चारः छप्पय । कुपित नीच बलवान कपिहि गहि पुरदिशि दौरयो ।
त्रेतामल्ल बिहस्सि मारि मुठका कर छोरयो ॥

पुनि गहि पांइ पछारि कूदि तेहि हृदय मझारी ।
तोरयो शीश भवांइ फेंकि दिगशिरहि अगारी ॥
पुनि पटकि लंगूरहि हरषि भट कटाटकइ रव अति कियो ।
सब शैल न सरित समुद्र युत डगमग महितल करि दियो ॥

(ततः प्रविशंति सुगलादयः सर्वे वानराः)

सहर्षं हितकारी । ये राक्षस सुरासुरन के जीतन लायक नहीं रहे तुम आश्चर्य कियो ॥

सुगलः । यह आप की कृपा है हम केहि लायक हैं ॥

नेपथ्ये । बाप को वयर लेन कह्यो हुतो सो कब लेउगे ॥

(प्रविश्य ग्राहनयनः तोटकछंद)

वहरासभकोमयपूतअहौं । हितकारिहमोंइतयुद्धचहौं ॥
करिद्वन्देसंग्रामहिबैरसवै । हनिशूलहिलेउंनिवारिअवै ॥

(हितकारीधनुः सज्जीकृत्य पुरोपस्थत्य)

छंदशंखनारी । रहैनीचठाढ़ो । सहैबानगाढ़ो ॥
कहागालमारै । पितापैसिधारै ॥

(ग्राहनयनः शरान्निक्षिपति)

सुगलः । देखो भयानक हितकारी को अरु ग्राहनयन को कैसो युद्ध होइ है मानो द्वै मार्तण्ड आपनी किरिनन सों लरै हैं ॥

भयानकः । हितकारी सम युद्ध करि याको खेलावै हैं ॥

सुगलः । सांच कही देखो शरसों शरासन सूत अश्व स्यन्दन विन करि दियो ॥

ग्राहनयनः शूलमुद्यम्य । मोपितु बधकारी हितकारी यह शंभु दई शूल सों नहीं बचौ हौ ॥ इति निःक्षिपति ॥

आकाशे । हा हा शब्दः ॥

(हितकारी शरै छिन्नति)

सुगलः । श्याबास महाराज श्याबास याके बड़ो गरब रह्यो है आपु सहजही में शिर काटि लियो ॥

नेपथ्ये । हे इन्द्र मदहारी पुत्र या हितकारी धनुधारी बड़ो शत्रु है सो अब जैसे मरै तैसें शीघ्रही मारो नहीं तो सेना नाश कै देइगो ॥

पुनर्नेपथ्ये। पिता मोकों पिता मह्नं ऐसो कहिमंत्र दियो हुतो की निकुंभिला में जप किये निरविघ्न समाप्त ह्वै है तो तैं सबते अजै ह्वै हैं सो सिद्धि करि जीते लेउ हों ॥

प्रविश्यसबाष्पकंठंचेतामल्ल:। महाराज घनध्वनि पश्चिम द्वार ह्वै मह्जिा को लये निकसो तेहि मैं बहुत समझायो न मान्यो जौलौं मैं छीनबे को निकट जाउं तौलौं तरवारि चलायही दई वृथा युद्ध श्रम जानि आप को खबरि जनावनि आयो ॥ इतिरोदिति।

(हितकारी विकलतांनाटयति)

भयानक:। महाराज वेगि सावधान हूजिये अवसर शोक को नहीं है जातें सब विकल ह्वै विघ्न करन न आवैं यह विचारि घनध्वनि माया मह्जिा मारि निकुंभिला में जप करन गयो है यह मैं निहचै खबरि पाई है मंत्र सिद्ध भये काहू को मारो न मरैगो, तातें डीलधराधर भुज भूषण चेता मल्ल को सैन संग मेरे साथ भेजिये ॥

हितकारी। दुसह दुख दहन दहत देह मेरी, पर तेरी बानी सुधा वृष्टि सी करी, डीलधराधर तुम्हारो कल्यान होइ जाव ॥

डीलधराधर:। भयानक आजु प्रभु पास ते हौं। जाउहौं देखो मेरे सन्मुख खल कैसी बरदानी माया करै है ॥

(इति हितकारिणं परिक्रम्यप्रणम्यचनिःक्रांत:)

हितकारीनिश्वस्य। सुगल बार बड़ी भई कछु खबरि न पाई धौं कहा भयो होइ ॥

(तत:प्रविशतिचार:)

चार:। महाराज डीलधराधर बड़ो युद्ध कियो तहां घनध्वनि एक आश्चर्य काम कियो ॥

हितकारी। किंकिम् ॥

चार:। डीलधराधर शरन तें सारथि सैंधव स्यन्दन सिलाह काटिगये झटित शरपटित ऐसो आकाश कियो की जौलौं शरांधकार खुलै तौलौं पुर जाइ रथ सवार आइगयो ॥

(तत: प्रविशति डीलधराधर:)

सुगल:। देखो महाराज चेतामल्ल भुजभूषण के पानि गहे घायन तें

रोलाछन्द। महामोदकोउमंगअंगभारिहुंसमातिनहि।
उछलिउछलिअक्काशपिलेपादपपहारगहि॥
जनुतकिप्रभुमुखचन्दवीररसवारिधिभाये।
सहितसैनदिगशीशबेलथलबोरनधाये॥
देखोदेखोराचमनहूंको॥
छन्दनराच। लियेसोबानबिज्जुचापचापदेववर्ज्जसो।
लसेसुभट्टतर्ज्जितर्ज्जिगर्ज्जिगर्ज्जिगर्ज्जसो॥
पिलेसग्रामकेउछाहपोनसोउमंडिकै।
अनंदकेअनंतमेहज्योंचलैघुमंडिकै॥

(ससैन्योत्साहंदिक्‌शिराः)

सूतंप्रति। कर मेरो रथ आगे॥
सुगलः। भुजभूषण देखो तो यह दिगशिर हमारी सैना में कैसे परो जैसे सूखे बन आगि॥

(इतिधावंति)

हितकारी। देखो डीलधराधर हमारो मित्र महा बिशाल तालतरु लिये दंडकर कराल कालईसो देखो परैहै॥
डीलधराधरः भयानकंप्रति। कहो ये तीन राक्षस कौनहैं जे बानरन बिचलाइ सुगल भुज भूषण सों भिरे आइ॥
भयानकः। येकुरूपाच दीर्घोदर दीर्घगार्म्बहै॥
डीलधराधरः। देखोदेखो द्वै को तौ बड़ो युद्ध करि सुगल मारयो एककों भुजभूषन बड़े क्रोध सों मारयो बड़ो आश्चर्य कियो ये भट सुरासुरन जीतन वारे रहे हैं॥
सुगलः। उच्चैः स्वरेण सेनांप्रति॥ धावो धावो भटौ दिगशिर हितकारीपैं जाइहै॥ बानराधावन्ति।
डीलधराधरः। अरे यहतो राक्षशास्त्र सों सिगरी बानरी सैना जारि दई उड़त खाक देखो परै है॥

(इतिसक्रोधंधावति)

दिकशिराःसूतंप्रति। मैं बानकाटत जावहौं तैंइनकों बामदै मोकों हितकारी सों जोरिदे॥ सतथाकरोति।

आकाशेगद्य । दिगशिर धनुधारी हितकारी डीलधराधर शर परंपरा भरानभधरा पारावार विकल करा कारागार सोह्वै गयोबीसभुज भुजन ते जेते शर चलावैहै तिनते चौगुन हित कारी इ भुजहीते चलावे हैं बड़ो आश्चर्यहै दूनों कों तूनते तीक्षन तीरन लेत रोदा में देत खैंचि हनि देत कोई नहीं देखै ॥

छन्दनराच । चलेअनंतबानव्योमफोंकनोकसोंगसी ।
शरीरलोंदुहूनकेसुदंडपांतिशोलसी ॥
कहूंसंघट्टिबानवृन्दवन्हिआपुजारहीं ।
कुकर्मिज्योंकुकर्मकैकुलैकोंनाशिडारहीं ॥

डीलधराधरः । अरे मेरो अनादर करि हितकारीसों जुरेआइ ताको फल देत हौं ॥ इति शरान्निःक्षिपति ॥

(दिक्शिराः महामूर्च्छांनाटयति)

भयानकः । याको ऐसोकोऊ कबहूं नहींकियो श्याबास तुमको है ॥

उत्थाय सक्रोधं दिक्शिराः । आः पाप तूं अब प्रशंसा करन कों नहीं रहै ॥

(इति अमोघांशक्तिं निक्षिपति)

कपिसैन्ये हाहाशब्दः ।

आकाशे । देखो देखो डीलधराधर की भक्त वत्सलता भयानककों पीछे करि आपु सनमुख ह्वै उर सांगि सही ॥

(उरोनिःसृताइंशक्तिर्डीलधराधरःमूर्च्छान्नाटयति)

हितकारी । चेतामल्ल तुम सब शक्ति निकारो हो युद्धकरौ हौं ॥

आकाशे । देखो चेतामल्ल भुजभूषन आदि भटन को निकारी शक्ति न निकरी सो हितकारी दिगशिर के शर सहत वामकर ते गहि निकारी आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

युगलः भयानकंप्रति ।

भजन । अद्भुतरूपआजुहितकारी । **टेक** ।
क्रोधअरुनदुखजलपरिपूरन ऐसेहुदृगमोहहिंसुरनारी ॥
कालसरिसतकिप्रभुतनदिगशिरशरनिफवावतरुधिरफुहारे ।
विश्वनाथप्रभुलखिउत्साहित हंसिसुरअस्तुतिवचनउचारे ॥

चेतामल्ल: भुजभूषणंप्रति । देखो तो आजु हितकारी के बान आकाश को छिपे लेइहैं जे अस्त्र दिगशिर चलावे है तिनको हितकारी कैसे समित करे हैं जैसे श्रोतन की शंकनि को समीचीन वक्ता ॥

छन्दतरंगिनी । खलखैंचिदसकोदंड । लियमूं दिनभशरचंड ॥
जनुचिरचिवियब्रह्मण्ड । बिधिवंशभोरद्दंड ॥ १ ॥

भुजभूषणः । देखो देखो ॥

छन्द । प्रभु काटिसरमुसक्यात । निजशरकियेनभसात ॥
सोउनाशिप्रभुशरदीन । शिरशिब्यताकियपीन ॥

हितकारी । अरे मैं सहजहीं शर सों वंधु बदलो लेउंगो ॥

(इति निःक्षिपति) (**दिक्‌शिराः सहतोमूर्छांनाटयति**)

(**वानरीसेना जयजयेतिजल्पति**)

सूतः आत्मगतं । हों आपनो धर्म राखौं ॥

(**इति रथं परावर्त्य निःक्रांतः**)

हितकारी । चेतामल्ल वेगि औषधि ल्याइ डोलधराधर कों हरषित करो ॥ सतथ करोति ॥

नेपथ्ये ॥ अरे यह कहा कियो। महाराज मैं आपनो धर्म राख्यो है। अरे मूढ़ या शत्रु शरन ते पूजिबे लायक है याको समर परम सुखदायक है हांकु हांकु मेरो रथ ॥

(**ततः प्रविशति ससैन्यो दिक्‌शिराः**)

(**वानराः गिरिवृक्षान्गृहीत्वा धावंति**)

आकाशे । देखो देखो ॥

अद्भुतध्वनिः । जहंसुरररिपु तहंकोपिले रंगेकोशरनरंग ।
मारुमारुभनिभटभिरे अंगग्गिरतसुजंग ॥
अंगग्गिरतसुजंगग्गरब उमंगग्गनतन ।
ठट्टट्टुट्टेहुंसुभट्टट्टिकतकुभट्टट्टरतन ॥
रथ्थिथ्थुरतसमथ्थथ्थथ्थपरनरथ्थथ्थथ्थुरिदर ।
मज्जज्जर्जाहिनिमज्जज्जोगिनिभयज्जज्जहंसुर १ ॥
जमजङ्गजगयहतसनकहि करैकालिकाकूक ।
लगोंश्रगालोंभषनपल कोकक्करिकारिमूक ॥

कोकक्करिकारिमुक्कतुक्कुरिकतंक्किययहरि ।
लक्खक्खलदलअक्खक्खयचतनक्खक्खरलरि ॥
कुट्टुट्टयरिमुयुट्टुरनिविरुद्दुट्टरिअंग ।
भज्जज्जमसमगज्जज्जहंतहंसज्जज्जसजग ॥ २ ॥

कुंडलिया । करनैजयनिजउछलिकपि लरहिंमनहुं नृपपत्ति ।
कोटसवाइनहिंसहत हैं निशिचर गनतनलत्ति ॥
निशिचरगनतनलत्तिभजिकपिअंतदेखावै ।
गज्जिगज्जिरनरज्जितज्जिनभभयउपजावै ॥
कपिहुभालुखलदलनदलतप्रभुजयजयकरनै ।
कोहुशिरलेतउपारिकोहूचरनैकोहुकरनै ॥ १ ॥

(दिग्शिराः सक्रोधं शरान्मुंचति)

आकाशे । आश्चर्यहैआश्चर्य देखो देखो बानरनकी बीरता काहूकीशिर कटिगयो है धरही धायो जाइ है हितकारी के काज में मानो आपहू कटनजाइहै काहूके धर सर समूहतें परमानु परमानु ह्वैउड़िगये शिर दिग्शिर रथ में परयो मानो धर को बैरई लेनगयो ॥

कवित्त । शरनसमूहनसोंकाहूको चरम गयो रहिगयोमासपिंडश्रोनितसो पूरोहै । सनमुखबानबृन्दसहतसो दौरोजाइ पीठि मासनोचिनो- चिखातगीधकूरो है ॥ गहिगहि आंतकाकखैंचतकतसोई काटि नखधावै कहिखलनाहिं दूरोहै । काटिजातपाइकर शीस दिगशी- सैओर टरिढरि जातबीरकूरोहै सूरोहै ॥ १ ॥

(प्रविश्य रथादवतीर्य पुरुहूतसूतः)

सूतः । महाराज या रथ सुरपति पठायो है अरु यह कह्यो है कि यामें चढ़ि दिग्शिर को मारि मोहूको बड़ाई देइ ॥

(हितकारी परिक्रम्य रथमारोहति)

सुगलः । भयानक देखो देखो तमीचर तमहारी रथारूढ़ हितकारी प्रभाकर पेखि पेखि कपिन दृग अरबिंद अति प्रफुल्लित भये हैं ॥

भयानकः । सुगल देखो देखो मत प्रेरित हितकारी दिग्शिर के रथ दौरि प्रभंजन प्रेरित प्रलय पयोदई से जुरि गये हैं अरु दुहुन की धुजा फहरि मिलि है सरभसे समर करैं हैं ॥

सुगल: । देखो हितकारी अस्त्रनि आभातें अरुन रग अवनी हरित बरन बिलसै है अब देखो दुहुनके रथ मण्डल करत आलात चक्रई से ह्वै गये दोऊबोर मण्डलाकार कारमुकन तें कैसे कदम्ब कैसे बढ़े हैं जैसें कंदरन तें टीड़ी ॥

आकाशे । देखो देखो दिगशिर यह असुरास्त्र छोंडयो ताते तोमर मोगर शक्ति शूल शर असि आदि आयध सैन पर बरषै है । देखो हितकारी एकही वाण तें निवृत किया फिरि देखो ॥

छंद । अतिक्रुद्धह्वै दिगशीश । धरिधनुषशरकरवीश ॥
किर्यविकलसकलकपीश । गहिगिरिनधायेकीश ॥ १ ॥

देखो दिगशिर देह लागि टूक टूक ह्वै गिरि कैसे गिरै हैं जैसे गगन तें मास लोभित गृद्धगन देखो दिगशिर शरनते कटे कपिनके शिर कैसे गिरे हैं जैसें तालतरुनतें फल देखो हितकारी क्रुद्धह्वै शरनसों छाय लियो दिगशिर कैसे कढ़ि आयो जैसे निविड़ बारिद बीच ते बिवस्वान ॥

दिक्शिरा: शूलिदत्त शूलसुदर्श्य । हितकारी नहीं बचौ हौ ॥
इतिनिःक्षिपति ।

(हितकारी शक्तशक्त्या निवारति)

कच्छराज: । देखो भयानक दोऊ भट भयानक युद्ध करि रहे हैं ऐसो मैं कबहूं नहीं देख्यो ॥

छन्द । नहिं रोदनजोरतजोहियरैं । दुहुंओरनिबानसमूहभरैं ॥
भटसारथिबाजिनलोमनते । ध्वजस्यंदनचक्रकिधौंमनते ॥
निकसैंनसिराइघनेसरसैं । दसदिग्गहिआशुकिधौंबरसैं ॥
सबचित्रलिखेसमसैनभई । अबआशुकहाबिरचैधौंदई ॥

आकाशे । हितकारी अरु दिगशिर के बानन ते अब भाजिबे की बाट नहीं है हाय हाय नाइकहीं मरे अबकी बार जो बचि जाय तो नियराइ न निरखैं ॥

पुन: । देखो देखो शंक न करो हितकारी रोस करि दिगशिर के शिर भुज काटि शरन तें गिरन नहीं देइ है ते आकाश में कैसे शोभित होइ हैं मानौं शठ की सहाइ को बहुत राहु केतु आये हैं ॥

सूत: । याके हृदय में अमृत कुण्ड है ताते शिर भुज जामत जाय है सो ब्रह्मास्त्र तें सोखि लीजिये ॥

(हितकारी तथाकरोति)

सुगल: स्वगतं । अब एक शिर द्वै भुज रहि गये तौ अधिक युद्ध करन लग्यो बड़ो आश्चर्य है ॥

दोहा । यकशरछोड़तव्योमपथ लच्छकरततेंहिंसाथ ।
काटतकोटिनसंगकरि कोटिनकौशनमाथ ॥

छन्द । दोउबीरकरैंजहंयुद्धनहाँ । नहिंदेखिपरैअसठौरकहाँ ॥
बहुभांतिनअस्त्रनादिगवरैं । गुनियेछनमैंसबलोकजरैं ॥

आकाशे दो० । हरिसमहरिहरिभक्तसम हरिभक्तहितिहुंकाल ।
तिमियहिरनसमरनयही भयोनहोवनवाल ॥

चेतामल्ल: सुगलंप्रति । देखो सूत को शिर हितकारी छीनि लियो दिगशिरपाइ अंगूठासों बागलै त्योंहीं युद्ध करै है श्याबास श्याबास ॥

डीलधराधर: । देखो देखो हितकारी महा अमोघबान कर कियो ॥

हितकारी । अरे नीच अब नहींबचैहै ॥ इतिशरन्नि:क्षिपति: ॥

(शरो दिक्शिर: उरोभित्वा पुनस्तूणीरेप्रविशति)

आकाशे भजन । देखोदेखोअवनअवनलगि शिवगनयेकछुबरनैं ।
केमुरछितकेसुपितकियेभ्रम छुअतिमीचुनहिंकरनैं ॥
याहीतेदिगशिरअंगफरकत असहमनिजमनगुनिये ।
विश्वनाथजयनिहचैभयअब कोशनजयजयसुनिये ॥ १ ॥

तत: पुष्पवृष्टि: ।

चेतामल्ल: भुजभूषणं प्रति ।

पद । समरभूमिसोहतहितकारी ।
जयश्रीसहितपानिसरफेरत अभिरेधनुषसुछबिअतिभारी ॥
कहुंकहुंसोनितबिंदुविराजत सुभगसरीरजगतदुखहारी ।
विश्वनाथजनुहरितअवनिमें इन्द्रबधूविचरैसुखकारी ॥

(तत: प्रविशंति रदन्त्य: क्षमोदर्य्योद्यानार्य्य:)

हितकारी । डीलधराधर तुम सबको समुझाइ राक्षसपुरी को लै जाउ भयानक को तिलक करि आवौ ॥

(तथेति निःक्रांतः)

हितकारी । चेतामल्ल तुम जाइ महिजा की खबरि लै आवो ॥

चेतामल्लः । बहुतभलो ॥ इतिनिःक्रांतः ।

सुगलः । महाराज दिगषिर के जूझे आजु सब लोक अभय भये या आपुही के मारिबे लायक रह्यो है ॥

हितकारी । तुम सो मित्र जाके होइ ताको सब सुगमै है ॥

(ततः प्रविशति चेतामल्लः प्रणम्यसबाष्पकंठं)

भजन । बूड़तशोकसमुद्रमेंमहिजा ममसुखसुधिसमतीरलही ।
पुनिसुखसागरमाहमगनह्वै घरिकनआयोकछुककही ॥
पुनिकहतेरेबोल मोलकहंकौनिहुबस्तुनअहहिकहीं ।
विश्वनाथमैंकह्योसदहिमैंतुम्हरी केवलकृपाहिचहौं ॥ १ ॥
महराज महिजा को आपु के चरण देखिबे की अब अति उत कंठा है ॥

हितकारी । जाव भयानक सों पूंछि डोलधराधर के संग लेवाइ लै आवो ॥ तथेतिनिःक्रांतः ॥

नेपथ्ये । फरक फरक ॥ इतिकोलाहलः ॥

ततःप्रविशंति डोलधराधरभयानकचेतामल्लः शिविकारूढ़ा महिजाच ॥

(दर्शनलालसा बानरास्त्वयंति)

हितकारी । भुजभूषण महिजा सों कहो माता पुत्रन सों परदा नहीं करै है प्यादहीं आवै ॥

(महिजातथाकृत्वाहितकारिणंप्रणमति)

हितकारी । शपथव्याजेन प्रज्वलिताग्नै महिजांनिः साध्यमिलति ।

आकाशे । पद । यह दोउ मिलनि लखहु किन भाई ।
किया चहत दूजो जल निधि जनु सुखआसुन झरिलाई ॥
पुलक कदंब कदंब कुसुमतन बचन संकत गरआई ।
विश्वनाथ प्रभुसम बिधुनार्थाह अब अरधंग बनाई ॥ १ ॥

सुगलः । आजु हमारो सब को सब श्रम सफल भयोमहिजा हितकारी को एक सिंहासन बैठे देख कृत कृत्य भये ॥

(प्रविश्य सर्वेसुरास्तुवन्ति)

हितकारीसहवाच्यंप्रति । सुधा बरसि हमारे बानरन जियावो ॥

सतथाकरोति ।

(बानरा:सर्वेसमुत्थाय सहर्षं जयजयेत्युच्चारयन्ति)

देवा: । अब आपको जब तिलक ह्वै है तब आय नैन सफल करिहैं ॥

(इतिनि:क्रांता:) (हितकारीसवाच्यकंठं)

भजन । ह्वै दिन रहे अवधि के बाकी पुरपहुचन नाहिंजात निहारी ।
बिन पहुंचे डहडह जगकारी तन तजि है अब यह दुखभारी ॥

भयानक: । रखिहौंअसबिमानप्रभुआगे आजुहिसदलतहां पहुंचावै ।
विश्वनाथहोहूंसंगचलिहौं लखिहौंराजतिलकमनभावै ॥

(तत: प्रविशतिपुष्पकं)

भयानक: । महाराज यह बिमान हजूर में हाजिर है ॥

(सतयासहतदाखह्य)

हितकारी । त्रेतामल्ल मोकों याज्ञवल्क्य शिष्य के ह्यां कुछु दिरंग लगैगी तुम आगे ते खबरि जनावो ॥

सतयेतिनि:क्रान्त: ।

विमानंसंचाल्यसर्वे नि:क्रांता: इतिषष्टमोंक: ॥ ६ ॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराज बांधवेश श्रीमहाराज विश्वनाथ सिंह जूदेव कृत आनन्द रघुनन्दन नाम नाटके षष्ठमाङ्क: ॥

अथ सप्तमोङ्क: प्रारम्भ: ॥

प्रविश्यडहडहजगकारी । कोई है ॥

नेपथ्ये । आज्ञापायतु ॥

डहडहजगकारी । गुरु सों बिनय करै कृपा करि पाव धारि मम अयन पवित्र करैं ॥

तत:प्रविशतिजगद्योनिज:डहडहजगकारीप्रणम्यसंपूज्यच।
अब हितकारी के आवन की अवधि काल्हिही है खबरि बहुत

दूरि भरि नहीं मिलै अवधि टरे मेरे प्राण नहीं रहैगे सो आप को राज सौपों हों आप या कुलके सकल काम सवांरत आये हैं सो सम्हार लेहुंगे ॥

जगद्योनिजः । आजुकाल्हि सगुन बहुत होय हैं याते हितकारी आवन चहैं हैं तुम शोच न करो ॥ इतिनिःक्रांतः ।

(डहडहजगकारी सशोक मात्मगतं)

पद । मोसमअधमकोनयहिजगमेंबीततअवधिजोप्रानरहै ।
घरिहौंहाथमाथमेंरकब बिरहजातसबअंगदहै ॥
त्यागिहुंतनकोहिलोकजाउंगोजगतसबैसमभारबहै ।
बिस्वनाथहितकारीतुमबिनमोकहंकछुनहिंसूझिपरै ॥ १ ॥

(ततः प्रविशतिचेतामल्लः)

चेतामल्लः स्वगतम् । आश्चर्य है आश्चर्य है ऐसो देख्यो न सुन्यो ॥

पद । तनमहंरह्योनपलकछुपांकोपरसिपवनधौंनभउड़िहै ।
सिरजतनेउनअ‚सुनसागर धौंयहिओसरयहिबुड़िहै ॥
स्वासखलायंनयोकज्वलितअति कैउरआगिहिमर्जरिहै ।
बिस्वनाथसुमिरताहितकारी हितकारीतनधौंधरिहै ॥ १ ॥
अबजो मोकों सुधि कहत छन बिलंब लगै है तो ये सुनन को रहैं धौं न रहैं ॥ **(प्रकाशं सबंवृत्तान्तंकथयति)**

डहडहजगकारी नेत्रउन्मील्य । मृत तुल्य जो मैं ताके कर्नमें अमृत तुल्य बानी जो तैं डारी सो भाई नीके नहीं सुनि परी फेरि कहु फेरि कहु ॥

चेतामल्लः पुनस्तदेवकथयति ।

(डहडहजगकारी समहाहर्ष मिलित्वा सवाचरकंठम्)

पद । तेरेबोलमोलमनमेरेमिलतनहरेकारहुंकहा ।
नहिंकछुसर्बलोकमोहिंदुर्लभमांगिलेहिकपिमनहिचहा ॥

चेतामल्लः । डहडहजगकारीमैंतुम्हारो केवलदायासदाहिचहों ।
बिस्वनाथहितकारीसमतुम हौतुहरोमैंबकाहिअहौं ॥ १ ॥

डहडहजगकारी । कहो कहो केते बखत आइ हैं ॥

चेतामल्लः । सूर्योदय बेला में ॥

(उद्दण्डजगकारी चारंप्रति)

गद्य । मातन सों खबरि जनाइ डिंभोदर सों कहियो अपराजिता की वीथिन भराइ सुगंध जल सिंचवाइ मोतिन कुम कुमन चौकैं पुरवाइ दधि दूब लाजन छिटवाइ प्रति द्वार कनक कलसन धरवाइ सैन सजवाइ प्रजन लेवाइ गुरुसंग भोर होत होत इत आइहों ॥

सतर्थेतिनःक्रांतः ।

उद्दण्डजगकारी । चेतामल्ल सूर्य्यो संध्या में अनुरागको प्राप्त ह्वै समुद्र में क्रीड़ा करै हैं अब कोडे को रात्रि होइगी ॥

चेतामल्लः पद । नभमेंयेनहिंप्रविशअरुतारे ।
आवतहितकारीगुनिबासव भोरगजमुक्तामाननकतारे ॥
पठईनजरफटीसितमोटी छिद्रश्यामताईमधिदेखो ।
विश्वनाथफैलोचहुंकितघन बिलसतमोईप्रभुकिनपेखो ॥ १ ॥

उद्दण्डजगकारी । कैसो कैसो युद्ध भयो सो कहि तो जाव ॥

(चेतामल्लः सर्वविस्तारेणकथयति)

उद्दण्डजगकारी चेतामल्ल कहा रवि सागर में बूड़ि गये ॥

चेतामल्लः आत्मगतं । प्रेम अश्चर्य्य है आश्चर्य्य है जिन को रजनि अबहू कई कल्प सो लगै है ॥

प्रकाशं दोहा । नाथलखियपरकाशयहनिकसेप्राचीओर ।
कहाउदयगिरिखानिकेलालजालदुतिजोर ॥ १ ॥

नेपथ्ये कोलाहलः । (चेतामल्ल)

छंद । रथनचक्रघरघरात घंटनग नघनघनात बाजिमपैजनिय झुनिनझन झनातसुनिये । बहुपताकफरफरातशब्दहोत सरसरातखरखरात सांकरिबहुबारनकरगुनिये ॥ धरथरातधरनीअतिलहलहातसैलसकलखलभलातसिंधुसातहरिरवउड़ावैं । विश्वनाथहितकारीतकन नयनतरफरातहरबरातप्रजनभोरडिंभोदरआवैं ॥ १ ॥

नेपथ्ये । (अनेकवाद्यमंगलगानकोलाहलः)

ताते महाराज कुमार यह निस्संदेह दिनकर करन ही को विलास है ॥

ततः प्रविशति सगुरुर्डिंभोदरः ।

उद्दण्डजगकारी गुरुं संपूज्य । महाराज आप की कृपा ते

हितकारी आवै हैं सो आप ह्यां रहिये मैं आगे ह्वै आऊं ॥

इति शिष्यं सि पादुकेबध्वा सबंधुर्निःक्रान्तः ।

आकाशे पद । आनदअवधिआजअयनहितकारी आवत ।
बालवृद्धयुतकनहेततरुनेइवधावत ॥
कलमालियेंबरनारिलसहिंकलमंगलगावत ।
जनप्रतिदधानविश्वनाथकहिपारहिधावत ॥ १ ॥

नेपथ्ये । देखिये डहडहजगकारी हितकारी की अवाई भई सूखेतरु हरित होइ आये ॥

डहडहजगकारी । प्रान दाता श्वेतामल्ल एक आश्चर्य और देखो परे है ॥

श्वेतामल्लः । नाथ किं कम ॥

डहडहजगकारी । प्राची दिशि में सूर्योदय भयो दक्षिन दिशि उदित निशाकर प्रभाकर प्रकाश जीतत आवै है ॥

श्वेतामल्लः । नाथ यह पुष्पक बिमान है हितकारी आये आये ॥

जगद्योनिजः सहर्षं शिष्यं प्रति ।

आये आये धुनि भुवनमें पूरि रही सो मेरे मनको ऐसे हरषावैहै जैसे मेघध्वनि चातक कों ॥

आकाशे पद । लखिबिमानडहडहजगकारीप्रेमउमगिअतिछायो । सजलजलजचखपनससरिसतनसबजगजियनिबनायो ॥अदभुतमिलनि बंधुदोउकोयहप्रजनप्रमोदमहाई।विश्वनाथभरिनयननिनिरखहुबय-नानबरनिनजाई ॥ १ ॥

देखो देखो सानुज हितकारी मैथन पांय परसन जाय हैं ॥

पद । तकिभुतमेय धाईं धाईं। सांझआइनिरखतनिजबछुरनजैसेगाइले-वाई ॥ कारतअनामपूंघिपूतनशिरपयसिंचितकारदोन्हो । विश्वनाथ नृपपदको यमहिंजनुअभिषेकहिकीन्हो ॥

(प्रविश्यसपरिकरोहितकारीगुरुपादौप्रणमति)

गुरुः आशिषंदत्वा । वत्स हितकारी नीके रहे ॥

हितकारी । महाराज जाकेपर आपकी कृपा है ताको सर्व काल कुशल है ॥

जगद्योनिज: । वत्स आजु सुघरी है जाइ जटा खोलाइ पसाक करि आवो ॥ हितकारी प्रणम्य सपरिकरो निःक्रांत: ।

जगद्योनिज: शिष्यं पश्यति ।

सनि:क्रांत: प्रविश्य संप्रणमति ॥ गुरु: ॥ तुम कुशलादि देविन लेवाइ अपराजिता जाय तिलक की ततबीर करो ॥

सर्वे अन्यत्र निःक्रांता: ।

आकाशे पद । उहहउजगकारी के कर्मसों बांछित फल मन बलीन्हें ।

हितकारी सोंलेत दान दुजललकपर मककरकीन्हें ॥

रतनाकर धन दहु कैर्नाहिं तन जसप्रतिकपिनउठायो ।

विश्वनाथ अधर जाहिय वाढ़त कहं नैयो ग्रहआयो ॥ १ ॥

नेपथ्ये (अनेक बाद्य मङ्गल गान कोलाहल:)

आकाशे । लेहुलोचनल हुआजु सुरभामिनी रतिहुनिदरतापियहिचह-तिमोपरपरा इसकृता हितकारि कीडोंठिर्भसमिनी । सुरंगचीरीसजत लसतासिर पेचमधिजटितमनि विविधरंग गग्र्थितमुकतावली सुछबिछहरातिछजतिहंसतिविथुनाथअनुसरसुमीन्हां तहूंललितन खतावली ॥१॥

(प्रविश्य हितकारी गुरुपादौ प्रणमति)

गुरु:आशिषंदत्वा । चलो अपराजिता कों तुम्हारे तिलक को आजु हो सुदिन है ॥

इतिसर्वे नि:क्रांता: । (तत:प्रविशतिसपरिकरोमंत्री)

गद्य । मारगैं सुगंध सलिल सिंचावो केसर कलंबक मारि लेपवावो द्वालैं अतरनि तर करावो कस्तूरी कपूर चंदन चूर उड़वाओ लाजा दधि दूब छिटवावो चौकनि गजमुक्तन चौकें पुरवावो सदीप पुष्प माल पल्लव कनक कलशनि धरवावो कलशन परम विचित्र पताका सजवावो करकुसुम कलिन ललिन ललित अटानि बैठवावो तोपन भरवावो नौबतन बजवावो अगवानी सजवावो महाराज आवै हैं ॥

(परिचारका:सर्वेतिनि:क्रांता:)

प्रविश्यचार: । महाराज ह्वांतें चले ॥

ससंभ्रममंत्री बंधुंप्रात । तुम ह्यां की ततबीर करो हों आगू ते लेन जाउं हों ॥

इतिनिःक्रांतः । (आकाशे)

आकाशे गद्य । महल महल चहल पहन बहल मै गलन गैल गैल को लाहल सैल उसलत चलत आरावन खलभलित भल सिंधु जल उच्छलत हहल हहल भूगोल कोल कल मलित बोल मुखन कढ़त लोल शीश ब्याल ईशहू भयो ॥

कवित्त । उसलिउसलिछैछैछज्जनछबीलेअंगकढ़ततुरंगरंगरंगसुखबारेहैं। लसतललितमदगलितगयंदमद सींचतगलीनतनमेघहूनेकारेहैं ॥ जूथनिसुगथरथपथ मनमानोरचेतिनमेंबिर.जैंधीरबीरअनियारेहैं । मंगलकोचारद्वारद्वारमेंअनूपहोतगावैंगीतनारीप्यारीमहामोदधारेहैं१॥

सोरठा । बकसतधननसमूह लेनजातहितकारिकों । देखोयहबनजूह मनहुंकलपतरुचलविपिन ॥ १ ॥

देखो देखो बानर नरबेष धरि पोशाक करि करिन चढ़ि मोद मढ़ि महा मंडे हैं, डहडहजगकारी सारथिकारी डिंभोदर छत्रधारी डोलधराधर चौंर संचारी रथारूढ़ हितकारी छबि किमि कहैं उचारी छकत नैन निहारी यह हमारी भारी भाग्य को फल है॥

नेपथ्ये । चक्रवर्ती महाराज सलामत अपराजिताधिराज सलामत अशरन शरन सलामत सर्व सस्वामी सलामत बढ़े जाव साहिबो मुलाहिजे सों अदब सों क़ाइदे सों फ़रक फ़रक करक ॥

(प्रविशति सपरिकरोहितकारी)

जगद्योनिजः।सिंहासनस्थौ महिजा हितकारिणौ सन्निधि अभिषिंचति॥

(वैदिकाःपठंति गायकागायंति प्रविश्यद्वारपालः)

कवित्त । गनहैगजाननकोबिपुलषडाननकोजहचतुराननकोठाढ़ोरमबसहै। बहुतधनेशओजलेशओमहेशकेते कैकैकारिकहौंयमजूहजोह्योजसहै ॥ दशमहाविद्यनकोव्यूहव्योमछितपूरे औरसबशक्तिनसमूहराजैतसहै । कोटिनब्रह्माण्डनतेभेंटलैलैआयेद्वारइंदुऔदिनेंद्रइंद्रवृन्दकसमसहै१॥

हितकारिनेचसंज्ञया।सुप्तोद्वारपालःक्रमशः सर्वान्प्रवेशयति ।

(देवाःउपानंदत्वास्तुवंति)

जमक पद । अधनधनदधरधरमपरमप्रभुप्रभुनईशहितहितके ।

मोहनमोहनसनसनमुखकारिरंजनजनसोकितके ॥ अकलकलपतरु तरुन तरनिसमसमनपापतमअतिके । भवभवपालनहरहरषितकर विश्वनाथमतिमतिके ॥ १ ॥

इतिनिःक्रांताः । (महिजाअमूल्यहारं)

चेतामल्लस्यकंठेनिःक्षिपति।(चेतामल्लःएकैकांमुक्तांदंतैस्फोटयित्वाभूमौनिःक्षिपति)

सुगलः । चेता मल्ल जाहार विलोकत सबही बांछा किये हते सो पाइ मुक्ता फोरि फोरि तुम महि मेलि दिये आखिर जात स्वभाई प्रगट कियो ॥

चेतामल्लः । याहितकारी नामांकित नहीं रह्यो ॥

सुगलः । तुम्हारो शरीर कब नामांकित है ॥

आकाशे । आश्चर्य है आश्चर्य है ॥

पद । कोकीरतिकोहिसकैप्रेमके धामकी । खैंचित्वचाकियप्रगटनिशानी नामकी ॥ तकिपौनजकोकर्मठगेकपिईशहैं । विश्वनाथमुनिसाधुकिये तरसीस हैं ॥ १ ॥

ततःप्रविशतिमैत्रावरुणिः । (हितकारीप्रणम्यसंपूज्यच)

शुभ आगमन भयो आपको, आछे रहे ॥

मैत्रावरुणिः । जहां तुमसो राजा है जिन घन ध्वनि को बन्धु कर हताइ त्रैलोक्य अभय करि दियो तहां हमारी सबकी कुशलै है ॥

हितकारी । घनध्वनिहीं को आप गन्यो यामें कहा हेतु है ॥

(मैत्रावरुणिः दिक्शिरोदिक्विजयेघनध्वनेरिन्द्रबन्धनमेवकथयति)

हितकारी । जैसोंकाल शक्र विष्णु को पराक्रम श्रवणनमें नहीं सुन्यो तैसो चेतामल्ल को पराक्रम नैनन निरख्यो ॥

मैत्रावरुणिः । महाराज यह बालहीको ऐसो है ॥

हितकारी । इनको उत्पत्ति औ चरित्र कहि जाइये औ सुगलादिकनहूं की उत्पति कहिजाइये ॥

(मैत्रावरुणिः)

सर्वंकथयितित्वा । अबमोको संध्या बन्दन करनो है ॥

(हितकारीप्रणमति)

मैचावरुणि: । आशिदर्षत्वानि:क्रांत: ॥

हितकारी । सुगल ये भुजभूषण चेतामल्ल तुम्हारे परम हितकारी हैं इनको प्रानके बरोबर राखियो तुम्हारे बल सों मैं दिगम्बर को मारयो तुम्हारे सबके एक एक उपकार को मैं उऋन नहींहौं ॥

इति वज्रधरं दत्वासबीं स्त्रहानप्रेषयति ।

(सुगल:वाच्याबरुद्धकंठ चतुरोभ्राटन्
प्रणम्यससैन्योनि:क्रान्त:)

तत:प्रविशंत्यत्सरसोगन्धर्वाश्च ।

(सर्वेमहिजाहितकारिणोप्रणम्यन्त्यमारभंते)

डहडहनगकारी । देखिये महाराज पुष्पांजलि लिए सिगरी संकुचित भाव सों गति धरि इष्ट देवता को सुमिरन करि कछु कुसुम महि कछु आप के पगन पाँहै कछु दोऊ बगल सभा सदनपैं कछु पीछे वाद्य करन पैं तालही में मेलत भई आश्चर्य है ये वाद्यकारन पैं कैसेझमकि गई जैसे एकहीं बार चपला चपचमकि जाइ ॥

प्रविश्यचेतामल्ल:प्रणम्य । महाराज मो कों सुगल उकीलत लिये आपके पास टिकबे को पठायो है ॥

हितकारीसस्मितं । आवो आवो भले आये अब तुम्हे चाहि हमैं चैन चौगुनो भयो नृत्य देख्यो ॥

(उर्बशीगतिंगृहीत्वाउपसर्पति)

गन्धर्वीगायन्ति । याकेशीलचुवतसोनैनन । सकुचतचलतिमंजुमुखमो-रतिडरअतिप्रेमखुलतकछुबैनन ॥ कोनेहुंपतिअपकारगनातिनांइं पम परिपरिआपुहिसमुझावै । विश्वनाथप्रभुसमुझनलायक यहसुकियाको अनुपमभावै ॥ १ ॥

सुकेशीउपसर्पति गन्धर्वी: । अंगननवलतरुनिमाआई । रत्नानठौर आइनैननपथनिकसनचहतिमनहुलरिकाई ॥ रसश्रृंगारगीतिकेबैननि कछुकछुसुननलगींश्रुतिलाई । विश्वनाथकरिकैसुघराई नाचतिमुग्धा भावदिखाई ॥ २ ॥

मेनकाउपसर्पतिगंधर्बाः । अबमैंक्योंकरिखिलनजैहौं । काहूकेकरयेनसमैहैंकैमैनैनमुदैहौं ॥ भयोकहाबाढ़योतनसैरभ छिपेहुंसखिनमेलावै । विश्वनाथअज्ञातयोबना कोयहकलादेखावै ॥ ३ ॥

रंभाउपसर्पतिगंधर्बाः । अबतरअंचलमूंदनलागी । करिसिंगारआरसींनिहारति तजिख्यालनयौबनरसपागी ॥ निरखतनिजअंगअंगलोनाई आपुहिरीझिजातिमुसक्याई । विश्वनाथयहनृत्यकरतिहै ज्ञातयौबनाचरितदेखाई ॥ ४ ॥

मंजुघोषाउपसर्पतिगंधर्बाः । यहतोझझकतितांकपरढाहीं । समुझायहुंसमुझतिनहिंकहूं मुरिबैठतिपरिनाहीं ॥ चलुघरकाहतनदतिनाहिंजैहौं कहिकहिपानिडोलावै । विश्वनाथयहप्रगटकरतिहै ललितनवोढ़ाभावै ॥ ५ ॥

तिलोत्तमाउपसर्पतिगंधर्बाः । बैरिनिभईनिगोड़ीलाज । रसअकुतईनलखनदेतिपियपीरपरैयहिऊपरगाज ॥ योंकहिफेरतिअंगुरिअपोलन घूंघुटकरिचलिभावैआज । मुग्धिचितवतियाकोमध्यापन लखिये विश्वनाथमहराज ॥ ६ ॥

घृताचीउपसर्पतिगंधर्बाः । ससिमुखलैलैकमललगावति । लीलाहि प्यारेकेयुनिमूंदति लालसिखाकीधुनिहिछुपावत । तनमगंधनिजस्वसवायुते प्रातहोतकोयबनदबावति । विश्वनाथजोसबनिधिबिहरी प्रौढ़ाकोयहकलनिलखावति ॥ ७ ॥

कलकंठीउपसर्पतिगंधर्बाः । आलसलखहुआपकेगात । मोहिंदुखयहैसौंहभाईकी औरनहींकछुबात ॥ निजतनश्रमहिंबचाइकरियजोइसोइसोहूंकोभावै । विश्वनाथकरिनचतिचातुरी प्रगटतिधीराभावै ८॥

आनंदलतिकाउपसर्पति गंधर्बाः । बोलिबोलायकहौंसोलायक। जेहिगुनबसीबसीहियरेतुव तितहिंजावतुमनायक ॥ एगुनभरोहोततताकेढिग बैठबडचितन होई । नाचतिभावअधीराकेविशुनाथलोजियेजोई९॥

मदनमंजरीउपसर्पतिगंधर्बाः । गईयहआजुसौतिकेसाथ । चोरमिहीचनिखेलिआंखिनेहिमूंदिलईपियहाथ ॥ यकाकरसोंयाकोकुचपरस्यो अपनोप्रीतिजनाई। नाचतिजेष्ठकनिष्ठाभावहिविश्वनाथदरसाई॥१०॥

अनंगसुन्दरीउपसर्पतिगंधर्बाः । लजततांकिकायकोटिसतकाम ।

मोकोंलखकहैकिनकोई हैदनहींमोंकाम ॥ भारपरजुलकनित्राइ अ-
बलहिहीं मखडरलाय। विश्वनाथयहथरकिरही है ऊढ़ाभावर्खाय ।११॥

चंचल चौउपसर्पतिगंधर्बी: । चलावतिदूरल्याहमोमाई सुठिसु-
न्दरकुलवन्तबैससम बर्षापगसघिहाई ॥ मेरडरयहघ्रोचबड़ोअलिकों
उनकहतसमुझाई विश्वनाथयहभावअनूढ़ा प्रगटतिनाचतिभाई १२ ॥

चन्द्रमुखीउपसर्पतिगंधर्बी: । लेनजलपठयोचरनतमाई । बिछलि
गिरीइनआनिउठायो भलेतहूंइतआई ॥ नातहकचत और की औरै
यहपुरलोगचवाई । विश्वनाथयहनाचरहीहैगुप्ताभावबताई ॥ १३ ॥

शशिप्रभाउपसर्पतिगंधर्बी: । सूनलखिछोरिआछहआई । द्वारेबे-
लिबतायेकरमें निरखिननदियाधाई ॥ भीतरभौननिशंककालसंग
करोआपनीभाई। विश्वनाथयहक्रियाबिदग्धाभावकरतछबिछाई ।४॥

चन्द्रकलाउपसर्पतिगंधर्बी: । तेरेमिलनहितहौंआई । अबतौरैनअं-
धेरीछाईराखौबातलगाई ॥ पठैदेहिनिजपियकहुंचावनमेरोहियोडेराई।
विश्वनाथयहवचनविदग्धा नचतिभावदरसाई ॥ १५ ॥

चंचलाउपसर्पतिगंधर्बी: । करनसुखकोउनारिसखिजानै। यहरस
जान्योमैकोबिजुरी जोबहुघनसंगठानै ॥ अवकहुकाकोंत्रसहुंसहरसब
लियनिजबसहिबसाई । विश्वनाथयहनाचतिहरषित कुलटाकलनि
लखाई ॥ १६ ॥

शशिकलाउपसर्पतिगंधर्बी: । जननिकहपूजभवानीअवै । यह
अहीरसंगअबहंगमनै बनडरमननहिंल्यावै । सोसुनिअंगसमाति न
फूली चलीथारकरलीन्हे । विश्वनाथयहनाचतिमुदिता कैगुनप्रगटै
कीन्हे ॥ १७ ॥

कलावतीउपसर्पतिगंधर्बी: । तनसुबासिनिजमघिमधितै कहा
आजसकुचाती। होंजानीमोबातनखोयह मज्जनहूनहिंजाती ॥ सुनि
मुसक्याइनचाइनैनदिय ताहूनैननवाई । विश्वनाथयहनाचिलक्षिता
भावरहीदरसाई ॥ १८ ॥

भिलासवतीउपसर्पतिगंधर्बी: । कारिपरदेशप्यारिहूलैसंग कोउपर-
देशीआयो । सूनोअपनभराइआपनो रुचिरकपाटलगायो। सोसुमिलत

उसासबालनिज नैननिबारिबहावे । विश्वनाथअनुप्रयनाभावहिनाचत प्रगटदेखावै ॥ १६ ॥

चंद्रलेखाउपसर्पतिगंधर्बी: । छिगुनीछुवतबिछौनेपरछल छंदअनेकारै । कहुंमुसक्याततिननिकहुंभौंहैं कहुंतकिभयहिंभरै ॥ कहुंरिसिकरतिमिलनकहुं चाहति वहुतमराहिहरै । विश्वनाथलखियेनाचतियह गणिकाभावधरै ॥ २० ॥

कुन्ददन्तिकाउपसर्पतिगंधर्बी: । नामममोरहिनकोहोवै । मख्यो हम रहितजेगादुख जातबदननहिंहोवै ॥ तनकंटककछदस्वेदहिबूड़ी अजहुंस्वास अधताई । विश्वनाथ यहनचति देखावति अन्यसुरति दुखिताई ॥ २१ ॥

नवमल्लिकाउपसर्पतिगंधर्बी: । ठाढ़ेबलैयायेलेतपियनेबोलेनसजनी । अबैनमेरीकह्योकरतिहैरहैगोदोउकरमोंजि फिरितेंबीतिगयेरजनी ॥ जाकोलखिबेकोंललकतितीमोईइहाअगेखातउठिमिलुदैहौंसमुझनी विश्वनाथयहनचतिमानिनीकेभावनदरसाइवांकोभ्रकुटिकोरारिभनी २२॥

कनकसुन्दरीउपसर्पतिगंधर्बी: । पियममप्राणप्राणअपनोदोउ अलियेकैकरिराखे ॥ कहाकरंगीसवनिसबैअब नहींहोतकछुमाखे । करत रहेंबैठीघरहींमेंरिसजारेंनिजछाती । विश्वनाथयहप्रेमगर्बिता नचत प्रेमरंगराती ॥ २३ ॥

अनुरागिणीउपसर्पतिगंधर्बी: । चलिमुसक्याततलखतिपरछाहीं । अंगुरीसोंगहिहरपिलखावतिपियपलकरनिजबाहीं ॥ सांवकहौंसिकहूंदूजी नरसुरनारिनमाहीं । बिश्वनाथयहनचति देखावतिरूपगर्बिता काहीं ॥ २४ ॥

रत्नकलाउपसर्पतिगंधर्बी: । सखिमैंपतिदेवताकोआसनकोनीभांति नसउं । गुणनेअगुणनाकाजिय आयोनिर्गुणदिन कलनहिंपाऊं ॥ बिरचनीविधिनहिंबियगुनभाजन कोहिकोहकाहपढ़ाउं । नाचतिगुन गर्बिताकेभावन यहविश्वनाथअगाऊं २५ ॥

काममंजरीउपसर्पतिगंधर्बी: तकतहरिअंगनमेंपियअरोपरिआई । चूरोगिरोमूंदरीचूरीकरपहिराई ॥ याकोस्वामलपटकनुजरिमेनभघनकारे । विश्वनाथयहनचतिबिरहिनीभावहिधारे ॥ २६ ॥

रूपमंजरीउपसर्पतिगंधर्बी: । कापैंपरमप्रीतितुवलाल । हियतें उमगिनेनमोइलखियनु छलकछोटकछुछाजतिभाल ॥ कज्जलमिसि कलंकक्हंयारो मुखप्रभिसमहिननायो । विश्वनाथयहभावखंडिता नाचतमाहदिखायो ॥ २० ॥

चित्रलेखाउपसर्पतिगंधर्बी: । मोंजिमिजिकरक्योंपछिताई । जब प्यारोआपहिआयोहोंबहुविधिससुझाई ॥ तबतोएकबात नहिंमानी करिअपनीभाई । विश्वनाथयहनाचतिकलहंतरित भावबताई ॥ २८ ॥

प्रभावतीउपसर्पतिगंधर्बी: । सजिसिंगारपीतममिलिबेहितआजुस- खीनकुंजगई । मिल्योनसोअमिउटेजानिरविदुखितभीतहूभजतभई ॥ ज्योंत्योंकरिपहुंचीतुअडिगलौं होतवहोजोलिखतदई । विश्वनाथयह विप्रलब्धकी कलनिनचतिअंत मदनछई ॥ २९ ॥

पद्मावतीउपसर्पतिगंधर्बी: । यामिनीयामबितीतभईरी । पीत मनहिंआयेघनआये येकरिहैंमहिअंबुमईरी । आवतविलमघरिकजो लागत तितहिमिलनगमनैंमोमानैं । विश्वनाथयहनाचतभावतपर- गटउत्काभावहिठानैं ॥ ३० ॥

कलहंसीउपसर्पतिगंधर्बी: । आजुकवासजिसकलसिंगारनरचति सेजनिजहाथै । पुनिपुनितकतिपंथहियेमें नहिंसमातसुखगाथै ॥ छनमेंकढ़तिछनहिगृहआवति लखियतुअतिअकुताई । विश्वनाथय- हवासकशय्या नाचतभावजनाई ॥ ३१ ॥

चम्पकप्रभाउपसर्पतिगंधर्बी: । निशिदिननिरखतरुखहिगभावै । स- खियांकाजकरन नहिं पावें आप करत सुखपावै ॥ पियहियनिमटरतसेव- काई सौतिनमुखपियराई । विश्वनाथस्वाधीनपियतमा नाचतिअति छबिछाई ॥ ३२ ॥

लीलावतीउपसर्पतिगंधर्बी: । पियमिलिबेहितनिरखिआरसी हर- षिनसकलसिंगारसंवारी । करिकैमंदमसालमयंकहिगमनीमुखमयंक उजियारी ॥ तेहिछनतिजगयंदगतिनिन्दतिपीयमिलिनकीअतिअतु- राई । विश्वनाथयहनाचतबिलसतअभिसारिकाभावदरसाई ॥ ३३ ॥

अनंगसेनाउपसर्पतिगंधर्बी: । चलतपीउबालजानिगदगदगरथकित बानिकछुनहिंतहंकहतबन्योहियेशोकभीनी । भीतरघरजाइनिजेज-

नमकुंडलीलखाइ अतिहाँबिलखायपीयआगेधरिदीनी ॥ साहसकरि कह्योरोनमोहिंबुझाइकरोगौन जीतिबिंदलिखीजौनआयझूठसांची । लखियविश्वनाथनाथरीझिबूझआयहाथ प्रेयसीप्रवेस्यितेकेभावकलित नाची ॥ ३४ ॥

रसालमंजरीउपसर्पतिगंधर्वी: । छनआंगनछनचढ़तिअटारी छन कढ़िकैबाहरमगजोहति रोंकतिनैननिश्रीतलबारी ॥ टूटतिबन्दफटति अंगियाउरनाहिंअमातआनन्दअतिभारी । विश्वनाथयहनचतिनबेली आगतपतिकाभावहिधारी ॥ ३५ ॥

हितकारी । इन को मन काम ते अधिक इनाम देवाइ देउ ॥

ततःसप्रमोदंप्रणम्यसाप्सरसोगंधर्वी निःक्रांतः ॥

(प्रविश्यगुरुगड देशीयोनर्तकः)

प्रणम्यनृत्यतिगायतिच । एकिंगाहितकारीमाईडियरवेरी । लिवरे लएगडबरेवबोग्रहिरी ॥ गुडइसप्रेडमाइसिनटापलाड । गुडआलडैम विशुनाथआफगाड ॥ १ ॥

अर्थ । एकिंग बादशाहों का बादशाह हितकारी भगवान माई हमार डियर पियारा वेरी बहुत परस्पर प्यारा लिवरि दातों का दाता एगड और बरेव सूर बीरों का सरदार बोग्रटिरी सुर तक दोनों जहान का गुड इसप्रेड अच्छा बकसने वाला माइसिन हमारे तकसीर टापलाड सरदारों का सरदार गुडआलटैम अच्छा एकरस सब समै विशुनाथ आफगाड विश्वनाथ का ईश्वर ॥ १ ॥

हितकारी । इनको इनाम देवाइ देउ ॥

गुरुगडःप्रणम्यनिःक्रांतः । प्रविश्यअर्बदेशीयः ॥

प्रणम्यनृत्यतिगायतिच । हाजलहितकारीनूरनूरलूअलाहू कुरबुल वरीदवोदफहमुलजुकाहू ॥ उंजुरबिलकलबिकुल्लग्रनमुहोते । फहुवा विश्वनाथअकदमतलबबसोते ॥ १ ॥

अर्थ । हाजलहितकारी यह भगवान नूरनूरलूअलाहू प्रकाशों बड़े ऊंचे प्रकाश के हैं कुलबुलबरीदनगीच हैं गरदन से वोदफहमुलजुकाहू औ दूरि हैं ज्ञान औ बुद्धि से उंजुर बिलकलबि देखु दिलकी दृष्टिसे कुल्लसैयनमुहोते सब बस्तु में पूर्ण है फहुवा येई विश्वनाथ अकद

मतलबबसीति बिस्वनाथ मतलब की गाठैं खोलने वाले हैं ॥ १ ॥

हितकारी । इनको इनाम देवाइ देउ ॥

(अर्बदेशियःप्रणम्यनिःक्रांतः)

प्रविश्यतुरुकदेशियः प्रणम्यनृत्यतिगायतिच । कुलचार्तिंगरी हितकारी फुलू । फकरंचीमोजकंचटलू ॥ दीजरिर्वातिंगरीसुकुरमुनी । फुनविमुनाथमूकजुनछली ॥ १ ॥

अर्थ । कुलचार्तिंगरी एक ईश्वर हितकारी भगवानफूलू है फकरंची सब का मालिक मोजउसबिनाकंचटलू सब ने काम दीज भीतर तिंगरी भगवान सुकुरप्रकाशमान है फुनी देखो दिलकी आंखि से फुन पाया विमुनाथ ने जूकउसको जून मेहरबानगीउलीटसोकिसे ॥ १ ॥

हितकारी । इनकोइनामदेवाइदेउ ॥ तुरुकदेशीयप्रणम्यनिःक्रांतः ॥

प्रविश्यमरुदेशीयाबारबधटी ॥

प्रणम्यनृत्यतिगायतिच । म्हाथारेठगापूगीछेम्हारोराज । थांकोतो घनेदेवायादुणियाकोन्होछेराजणकोसिरताज ॥ इहांकेसुतसम्हारे देशगाइयाछेगुणियासमाज । बिस्वनाथथांयुगयुगजीवोपूजेछेम्हारे काज ॥ १ ॥

हितकारी । मन बांछित इनाम देवाइ देउ ॥ नर्तकीनिःक्रांता ॥

हितकारी । डहडहजगकारी तुम राज्य की ततबीरकरो । डोलधराधर तुम कोप की ततबीर करो । छिंभीदर तुम सेन की ततबीर करो । हैं गृह बाग बिहार करन जायहैं ॥

इतिनिःक्रांताःसर्वे । (ततःप्रविशतःस्वर्धुनीब्रह्मकुण्डजे)

स्वर्धुनी । हे ब्रह्मकुण्डजे तुम उदासी ऐसी काहे हौ ॥

ब्रह्मकुण्डजा । एकादश सहस बरिस पुहुमि संचरित श्रघ अपराजिता पुरी प्रजन कीटपतंग उधार हितकारी परम पुरुष हरिपरम प्रकाशी रूप करि परम धाम बिश्राम करन लगेहैं अकेले नहीं सुखी हौं ॥

स्वर्धुनी । सखि हितकारी प्रगट ते अप्रगट होइगये हैं तिहारे निकट अपराजिता में हितकारी सदै रहैं सखि चाहूं को दुरावै है ॥

इतिसस्मितंनिःक्रांते । (ततःप्रविशतिसूत्रधारः सूत्रधारः)

प्रबंधः । जयजयरघुनंदनकरुणाकुरहे । ताड़कातनुभंजनखलदलगंजन

है । पिनाकखण्डनजमरंजनहै ॥ सीताविवहनसुखावगाहनहै । सौ-
शील्योदार्यादिकुनभाजनहै ॥

रेरे सनि रेरे सनि सानि न्निपप्पप्पमगरेसाम म्मम्मपप्पप्पधपमधनिधधपाथो
दिगदिगदिगथोदिगदिगदिग तकतकतकतक थुंतकथुंठग नंगनंगनंगनंग
नंगनंगनंगनंगतथुन्नथैया ॥ १ ॥

श्री रघुनंदनः । मांगु मांगु ॥

सूत्रधारः भजन । छूटैमनमलीनतासारीकामादिकामिटिजाहीं । होय
विवेकनसैंदुखसिगरेगहौंआपममबाहीं ॥ अतिनिर्मलचितह्वै प्रभुपदमें
लगैसहितदृगभावै । परमप्रेमरघुनाथआपकोविश्वनाथअबपावै ॥ १ ॥
जोलौंकीरतिचलैतिहारी । तौलौंचलैनाथयहनाटक सुनिसबहोंइसुखारी ॥
जोयहकहैलहैधनधानिहुंअन्तसुगतितेहिहैवै।विश्वनाथकोंप्रगटरहि-
यतनसुभगतिहारोजीवै ॥ १ ॥

(श्रीरघुनन्दनःतथासुसूत्रधारःप्रणम्यसहर्षेनिःक्रांताः)

श्रीरघुनन्दनः । चलो महलन चलिये ॥

(इतिनिःक्रांताःसर्वेसप्तमोंकःइति)

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज बांधवेश श्रीमहाराजविश्वनाथसिंहजू
देवकृत आनन्दरघुनन्दन नामनाटके सप्तमांकः ॥

इति

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
ब्रजविलास	अमृतसागर	अक्षरावली	मुहूर्त्तचिन्तामणि सारिणी
ब्रजविलास छोटा	वैद्यमनोत्सव	स्वयम्बोध	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक
राग	**ज्योतिष**	ज्ञान चालीसी	मुहूर्त्त दीपक
राग प्रकाश	जातक चन्द्रिका	दोहावली	वृहज्जातक सटीक
लावनी	जातकालंकार	बाला बोध	जातकालंकार सटीक
श्रृंगार बत्तीसी	दैवज्ञाभरण	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	जातकाभरण
क़िस्सा वग़ैरह	ज्ञान स्वरोदय	किताब जंत्री	होरामकरंद
नानार्थ नाम संग्रहावली	रमलसार	गणित कामधेनु	**संस्कृत उर्दू टीका स॰**
ब्रह्मसार	इन्द्रजाल	लीलावती	मनुस्मृति
शिवसिंह सरोज	**मुतफ़र्रक़ात**	पटवारियों की पुस्तक अ॰	विष्णु हारीत
भक्तमाल	शनिश्चर की कथा	**संस्कृत की पुस्तकें**	महिम्न स्तोत्र
रामाभिषेक नाटक	ज्ञान माला	लघुकौमुदी	**संस्कृत भाषा टी॰ स॰**
इन्द्रसभा	गोपीचंद भरतरी	सिद्धान्त चन्द्रिका	अमर कोश
विक्रम विलास	कथा श्री गंगा जी	अमरकोष तीनों कांड स॰	याज्ञवल्क्य स्मृति
बैताल पच्चीसी	अवध यात्रा	पंच महायज्ञ	संध्या पद्धति
सिंहासन बत्तीसी	भरतरी गीत	निर्णयसिन्धु	व्रतार्क
पद्मावती खण्ड	दानलीला व नागलीला	संग्रह शिरोमणि	भगवद्गीता टी॰ हरवंश
शुकबहत्तरी	दोहावली रत्नावली	भगवद्गीता सटीक	भगवद्गीता टी॰ आनंदगिरि
बकावली सुमन	गोकर्ण माहात्म	दुर्गा पाठ सटीक	गीत गोविंद
चहार दरवेश	श्री गोपाल सहस्रनाम	विष्णु भागवत	कथा सत्यनारायण
क़िस्सह हातमताई	कथा सत्यनारायण स॰	भविष्योत्तर पुराण	परमार्थ सार
अपूर्व कथा	हनुमान बाहुक	अपराध भंजन स्तोत्र	शार्ङ्गधर संहिता
क़िस्सा गुल सनोवर	जनक पच्चीसी	दुर्गा स्तोत्र	पाराशरी
सहस्र रजनी चरित्र	आनन्दाऽमृतवर्षिणी	कायस्थ कुल भास्कर	शीघ्रबोध
रा॰ विन्सन का इतिहास	बनयात्रा	कायस्थ धर्म निरूपण	लघुजातक
वैद्यक	कायस्थ वर्ण निर्णय	तथा छोटा	षट पंचाशिका
निघण्ट भाषा	विहार विन्द्रावन	मथुरा सभा	सामुद्रिक
अमर विनोद	समर विहार विन्द्रावन	**ज्योतिष**	**सरिश्तेतालीमकी**
वैद्य जीवन	कल्प भाष्य	मुहूर्त्त गणपति	**पुस्तकें**
औषधि संग्रह कल्पवल्ली	**दरसी**	मुहूर्त्त चक्र दीपिका	**संस्कृत**

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ऋजुपाठ	भूगोलतत्त्व	अयोध्याकाण्ड	मजमूआजाबिताफौ-
१ भाग	भूगोलदर्पण	आरण्यकाण्ड	जदारीऐक्ट२५सन्
२ भाग	इतिहासतिमिरना-	किष्किन्धाकाण्ड	१८६१ई०
३ भाग	शक १ भाग	सुन्दरकाण्ड	ऐक्टस्टाम्प १सन्
धात्वर्णव	२ भाग तथा ३ भा-	लंकाकाण्ड	१८६२ई०
नागरी व कैथी	भारतवर्षीय इतिहास	उत्तरकाण्ड	ऐक्टरजिस्टरी २०सन्
वर्णमाला कैथी १भा-	अवधदेशीय भूगोल गुटका		१८६६ई०
तथा २भाग	इंग्लिस्तान का इतिहास	१ भाग	ऐक्ट स्टाम्प अदाल-
तथा कैथी फ़ारसी	हितोपत्रिका	२ भाग	त २६ सन् १८६७ई०
नागरी हरूफ़ मुफ़र्दात	बालाभूषण	३ भाग	मजमूआ ऐक्ट अ-
अक्षरारम्भ	पद्यसंग्रह	हिदायतनामा मुदर्रि-	वध लगान १९सन्
वर्णप्रकाशिका १भा-	भाषा काव्यसंग्रह	सान्	१८६८ ई० पुरवाहा-
तथा २ भाग	कवित्त रत्नाकर १भा-	पशुचिकित्सा	र २६ सन १८६६ई०
सूरजपुर की कहानी	तथा २ भाग	पट्टा बखत कैथी	वगैरा
धर्मसिंह का वृत्तांत	मंगलकोष	तथा क़बूलियत	ऐक्ट स्टाम्प वृत्ता-
शिक्षावली	अंकप्रकाश	रजिस्टर दाखिल खा-	वेज़ात १८ सन्
पथ्यहितैषिणी	गणितप्रकाश १भा-	रिज मुलवा मदसो	१८६९ ईसवी
पत्रदीपिका	तथा २ भाग	रजिस्टर हाज़िरी पाठशा-	ऐक्ट तअ़ल्लुक़दारा-
विद्याचक्र	तथा ३ भाग	ला	न मुल्क अवध २४
विद्यांकुर	तथा ४ भाग	क़ानून	सन् १८७०ई०
पदार्थविद्यासार	गणितक्रिया	पटवारियों के क़ायदे	ऐक्ट चौपायों का मदा-
पदार्थज्ञानविटप	क्षेत्रप्रकाश	उर्दू कैथी महाजनी	खिलत बेजा १सन् १८७१ई०
भोजप्रबंधसार	क्षेत्रचन्द्रिका १भा-	तिजारत के स्टाम्प्स	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता
राजनीति	सकीलदायरा	का ऐक्ट ३ सन् १८७८	फ़ौजदारी १०सन् १८७२ई-
शिशुबोध	रेखागणित १भाग	ईसवी	ऐक्ट माल गुज़ारी
भाषालघुव्याकरण	तथा २ भाग	नागरी	मगरबी व शिमाली
१ भाग	बीजगणित १भा-	ऐक्ट लगान मगरबी	१९सन् १८७३ई०
तथा २ भाग	तथा २ भाग	व शिमाली १०सन्	तरमीम मजमूआ जाबि-
भाषातत्त्वदीपिका	रामायण तुलसीकृ-	१८५९ई०	ता फ़ौजदारी ११सन् १८७४ई
भाषाचंद्रोदय	बालकाण्ड	इंडियन पिनल कोर्ट	



